सेन्ट्रलाइट

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India

केवल आंतरिक परिचालन के लिए

CENTRALITE

खंड / Vol. 47 • अंक - 02

सितंबर 2024 / September 2024

महिला नेतृत्व

विशेष आकर्षण

मानानीय कार्यपालक निदेशक
श्री महेन्द्र दोहरे जी का साक्षात्कार
प्रश्न मंच एक - इनाम अनेक

विशेष आकर्षण
राजभाषा

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर राष्ट्रध्वज को सलामी देते हुए श्री एम. वी. राव, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी.

.. न हि ज्ञानेन सदृशं ..

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही गृह-पत्रिका

A Quarterly House - Journal of Central Bank of India

प्रकाशन तिथि - 14.11.2024 • खंड / Vol. 47 - 2024 • अंक - 2 • सितंबर / September 2024

संपादक
पॉपी शर्मा

संपादक मंडल
वास्ती वेंकटेश
एस. के. गुप्ता
एस. एच. अय्यूबी
राजीव वार्ष्णेय

संपादकीय सहायक
हितेन्द्र धूमाल
अनिता धुर्वे

Editor
Poppy Sharma

Editorial Board
Vasti Venktesh
S. K. Gupta
S. H. Ayubi
Rajiv Varshney

Editorial Assistant
Hitendra Dhumal
Anita Dhurve

ई-मेल / E-mail
centralite1982@gmail.com

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं से बैंक का सहमत होना आवश्यक नहीं है.

Articles Published in this magazine does not necessarily contain views of the Bank.

विषय-सूची / CONTENTS

माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश 4
माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का हिन्दी दिवस संदेश 5
माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही का संदेश 6
माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम. वी. मुरली कृष्णा का संदेश 7
माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेंद्र दोहरे का संदेश 8
संपादकीय 9
माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेन्द्र दोहरे जी का साक्षात्कार 10
महिला सशक्तिकरण 15
मेरी सिक्किम यात्रा 16
पदोन्नति 17
भारत में महिलाओं की भूमिका और स्थिति की विकास यात्रा 19
कविता - हिंदी में घुसती इंग्लिश 20
Global Monetary Policy – Learnings for India 21
स्वच्छता ही सेवा है 25
कविता - प्रस्थान की ओर 27
महिला नेतृत्व 28
सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि 29
अंडमान निकोबार का सफरनामा 30
गुजरात प्रदेश के प्रमुख दर्शनीय स्थल 31
वर्तमान परिदृश्य में बैंकिंग और भविष्य की संभावनाएँ.......................................35
महिला नेतृव 37
कविता - हिंदी भाषा को प्रणाम 40
कविता - आना तो इस बार बेटी बनकर आना 40
श्री अमरनाथ धाम 41
लेह लद्दाख की यात्रा 44
जीवन है तो सब कुछ है...46
सेवानिवृत्ति..47
समाज में महिलाओं का योगदान 48
राजभाषा हिन्दी का महत्व एवं योगदान 50
महिला नेतृत्व 52
महिला नेतृत्व 54
हमारे विभिन्न आंचलिक कार्यालयों द्वारा ''स्वच्छता ही सेवा'' अभियान के तहत आयोजित गतिविधियां 55
महिला नेतृत्व एक कसौटी एक हौसला..57

डिज़ाइन, संपादन तथा प्रकाशन : सुश्री पॉपी शर्मा, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, चन्दरमुखी, नरीमन पॉईंट, मुंबई - 400 001 के लिए तथा उनके द्वारा उचीथ ग्राफिक प्रिंटर्स प्राईवेट लिमिटेड. आइडियल इंडस्ट्रीयल इस्टेट, मथुरादास मिल्स कंपाऊंड, सेनापती बापट मार्ग, लोअर परेल, मुंबई - 400 013.

Designed, Edited and Published by Ms. Poppy Sharma for Central Bank of India, Chandermukhi, Narimanpoint, Mumbai - 400 001
Designed and Printed by him at Uchitha Graphic Printers Pvt. Ltd. 65, Ideal Industrial Estate, Mathuradas Mills Compound, Senapati Bapat Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013.

माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम मैं आगामी पर्वों की शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए सितंबर 2024 तिमाही में बैंक द्वारा दर्शाए गए उत्कृष्ट कार्य परिणामों के लिए आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूं.

भारतीय संस्कृति में नारी को शक्ति का रूप माना जाता रहा है. तदापि पुरूष प्रधान समाज में नारियों को अपने अधिकार प्राप्त करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है. नारी को अपनी प्रतिभा के अनुरूप क्षेत्र विशेष में अपना स्थान बनाने एवं प्राप्त करने में भी संघर्ष करना पड़ता है. अब नये दौर में नारी सशक्तिकरण की धारणा वास्तविक धरातल पर सार्थक होती दिख रही है.

भारत सरकार ''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ'' जैसे अभियान चलाकर नारी शिक्षा को प्रोत्साहित कर रही है. फलस्वरूप महिलाएं निरंतर बढ़ती संख्या में शिक्षित ही नहीं बल्कि उच्च शिक्षित होती जा रही हैं. इस क्रम में महिलाएं बड़ी संख्या में विभिन्न प्रकार के उद्यमों में सेवारत होने लगी हैं. राजनीतिक, प्रशासनिक, वित्तीय, विधिक, पुलिस, सेना, डॉक्टर, इंजीनियर के साथ साथ बैंकिंग में भी बड़ी संख्या में कार्य कर रहीं है.

देश का प्रथम स्वदेशी बैंक सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने अपनी स्थापना से ही महिला सशक्तिकरण को प्रोत्साहित किया है. सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने भारतीय महिलाओं के सामाजिक उत्थान में भी निर्णायक भूमिका अदा की है. यास्मिन सर्वेयर भारत की पहली महिला कामर्स स्नातक बनीं तथा उन्होंने सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया में नियुक्त होकर किसी भी बैंक की पहली महिला कर्मचारी बनने का गौरव प्राप्त किया.

एक शताब्दी पूर्व वर्ष 1924 में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने देश के प्रथम पूर्णत: महिला विभाग की स्थापना की थी. इसका उद्देश्य महिलाओं की संकोची वृत्ति को दूर करना तथा उन्हें बैंकिंग सेवाओं की सुविधा प्रदान करना था. हमारे बैंक में महिला सशक्तिकरण की यह परंपरा आज भी जारी है. बैंक में महाप्रबंधक, उप-महाप्रबंधक, सहायक महाप्रबंधक, अंचल प्रमुख, क्षेत्रीय प्रमुख, अग्रणी जिला प्रबंधक आदि शीर्ष पदों पर महिलाएं कार्य कर रहीं हैं. महिला सशक्तिकरण को और सुदृढ़ करने के लिए हमारे बैंक ने देश के हर क्षेत्र में एक पूर्णत: महिला शाखा स्थापित की है.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(एम.वी. राव)
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

एम वी राव
व्यवस्थापकीय संचालक आणि सीइओ
एम वी राव
प्रबंध निदेशक एवं सीइओ
M V Rao
Managing Director & CEO

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

हिन्दी दिवस संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम हिन्दी दिवस - 2024 की हार्दिक शुभकामनाएं,

हमारे देश में सांस्कृतिक, धार्मिक एवं भाषाई विविधता है. लेकिन इन विविधताओं के बावजूद लोगों के बीच आपसी सद्भाव ही भारत की एकता और अखंडता की नींव है. इस एकता का एक कारण भिन्न – भिन्न भाषा भाषियों द्वारा हिंदी को प्रेमपूर्वक अपनाना भी है हमारे देश की स्वतंत्रता के पश्चात संविधान निर्माताओं ने हिंदी की इसी विशेषता के कारण उसे देश की राजभाषा बनाया था.

भारत विश्व की सर्वाधिक तीव्र गति से बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था है. क्रमश: विश्व पटल पर भारत एक अत्यंत महत्वपूर्ण आर्थिक शक्ति के रूप में उभर रहा है. ऐसे में भारत सरकार की संस्थाओं में कार्यरत कार्मिकों का कर्तव्य है कि वे कार्यालयीन कार्यों में संघ की राजभाषा हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करें. साथ ही अपने निजी कार्यों में अपनी - अपनी मातृभाषाओं का अधिक से अधिक प्रयोग करें. जिससे वैश्विक स्तर पर उभरती अर्थव्यवस्था के साथ - साथ हमारी अति समृद्ध भारतीय भाषाएं भी अपनी पहचान बना सकें.

हिंदी और भारतीय भाषाओं में काम करना सरकारी नियमों का अनुपालन तो है ही इसके अतिरिक्त इससे भारतीय नागरिकों के लिए भी सहजता होती है. आज सभी भारतीय भाषाएं डिजिटली भी सक्षम हैं.

जैसा कि आप जानते है हम प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया में दिनांक 14.09.2024 से 14.10.2024 तक हिंदी माह मना रहे हैं. इस अवसर पर सभी सेन्ट्रलाइट अपना अधिक से अधिक कार्य राजभाषा हिंदी में करते हुए हिंदी माह को सफल बनाएं.

हिन्दी दिवस के अवसर पर, आइए हम अधिक से अधिक कार्य राजभाषा हिन्दी में करने का संकल्प लें.

जय हिन्द, जय भारत

एमवीराव

(एम.वी.राव)

चंदर मुखी, नरीमन पॉईंट, मुंबई - ४०० ०२१. चन्दर मुखी, नरीमन पॉइंट, मुंबई - ४०० ०२१.
Chander Mukhi, Nariman Point, Mumbai - 400 021
☎ 2202 4393 / 2202 3942 (022) 2202 8122 mdceo@centralbank.co.in
www.centralbankofindia.co.in

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

अभी-अभी संपन्न सितंबर 2024 तिमाही के शानदार परिणाम के लिए मैं हमारे सम्माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम वी राव के कुशल मार्गदर्शन के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूं.

बैंक का कार्य निष्पादन बेहतर करने के लिए लाभ बढ़ाना आवश्यक है, लाभ बढ़ाने के लिए व्यवसाय बढ़ाना आवश्यक है, कासा जमा बढ़ाना तथा एनपीए घटाना आवश्यक है. शाखा स्तर पर शाखा प्रमुख के नेतृत्व में टीम के सभी सदस्यों को अपनी ओर से सर्वोत्तम योगदान प्रदान करना चाहिए. टीम का प्रत्येक सदस्य महत्वपूर्ण होता है. याद रखिए परस्पर सहयोग के साथ कार्य करने से बेहतर परिणाम प्राप्त होते हैं.

बैंकिंग में अब महिलाएं भी कुशल नेतृत्व प्रदान कर रही हैं. सेन्ट्रल बैंक आफ इंडिया में अब महिला नेतृत्व को प्रोत्साहित किया जा रहा है. मुझे पूरा विश्वास है कि हमारे बैंक में कार्यरत महिलाएं हर स्तर पर कुशल नेतृत्व दर्शाते हुए और महत्वपूर्ण सफलता प्राप्त करेंगी.

बैंकिंग सेवा आधारित उद्योग है. उत्कृष्ट ग्राहक सेवा व्यवसाय का आधार है. इसलिए हर स्तर पर ग्राहक सेवा को सुधारा जाना आवश्यक है. ग्राहकों की समस्याओं का तुरंत सकारात्मक समाधान किया जाना चाहिए, सभी ग्राहकों से मित्रवत व्यवहार कीजिए. इसके अतिरिक्त वर्तमान ग्राहकों के माध्यम से नए-नए ग्राहकों को बैंक के साथ जोड़कर बैंक का व्यवसाय बढ़ाने का प्रयास कीजिए.

आने वाले पर्वों हेतु हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(विवेक वाही)
कार्यपालक निदेशक

संतुष्ट मन वाले व्यक्ति के लिए सभी दिशाएं सुखमयी हैं - भागवत

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम. वी. मुरली कृष्णा का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम मैं आगामी पर्वों की शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए सितंबर 2024 तिमाही में बैंक द्वारा दर्शाए गए उत्कृष्ट कार्य परिणामों के लिए आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूं.

देश का पहला स्वदेशी बैंक सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया अब प्रगति के पथ पर आगे बढ़ रहा है. इस दिशा में हम जमा, ऋण, एनपीए एवं लाभ सभी क्षेत्रों में अब बेहतर कार्य दर्शा रहे हैं. यह सराहनीय है. मैं यह भी कहना चाहता हूं कि बैंकिंग उद्योग के कदम से कदम मिलाकर चलने के लिए हर स्तर पर अभी और गंभीर प्रयास करने आवश्यक हैं. ग्राहक सेवा और बेहतर किया जाना समय की मांग है जिससे बैंक के व्यवसाय में वृद्धि होगी.

21वीं शताब्दी महिला उत्थान की सदी मानी जाती है. यद्यपि भारत की भूमि पर बहुत समय पहले से ही महिलाएं हर क्षेत्र में आगे आकर उत्कृष्ट कार्य कर रही हैं. रानी लक्ष्मीबाई, डॉ. एनी बेसेंट, मदर टेरेसा, सवित्रीबाई फुले, सरोजनी नायडू, लता मंगेशकर, इंदिरा गांधी, प्रतिभा पाटिल, द्रोपदी मुर्मु, पी. टी. ऊषा, साइना नेहवाल, पी.वी. सिंधु, मैरी कॉम इत्यादि ने अपने अपने क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है.

स्पष्ट है कि हमारे देश में महिलाएं विधायक एवं सांसद ही नहीं राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल, मुख्यमंत्री जैसे पदों पर सफलतापूर्वक नेतृत्व प्रदान कर ही नहीं चुकी हैं अपितु कर भी रहीं हैं. साथ ही महिलाएं शिक्षा, उद्योग, व्यापार सहित बैंकिंग उद्योग में हर स्तर पर सेवारत होने के अतिरिक्त शीर्षस्थ पदों पर भी कुशल नेतृत्व प्रदान कर रहीं हैं.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया में भी हम महिला नेतृत्व को निरंतर बढ़ावा दे रहे हैं. देशभर में हमने कई पूर्णत: महिला शाखाएं स्थापित की है, हम शाखाओं, क्षेत्रीय कार्यालयों एवं आंचलिक कार्यालयों में प्रत्येक स्तर पर टीम लीडर के रूप में अधिक से अधिक महिला नेतृत्व को प्रोत्साहित कर रहे हैं. हमारे विश्वास के अनुरूप महिला नेतृत्व कर्मी इस विश्वास को बनाए रखते हुए अच्छा कार्य कर रही हैं.

अभी-अभी सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया में हमने सफलतापूर्वक राजभाषा माह संपन्न किया है. भारत सरकार के निर्देशों के अनुसार हमारे सभी कार्मिकों को राजभाषा के नियमों का पालन करना चाहिए.

प्रत्येक सेन्ट्रलाइट बैंक की प्रगति में अधिक से अधिक योगदान दे, बेहतर ग्राहक सेवा दे, और सेन्ट्रल बैंक आफ इंडिया की प्रगति के लिए हर संभव योगदान प्रदान करे, तभी हम इसे अच्छे बैंक से महान बैंक बना पाएंगे.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(एम वी मुरली कृष्णा)
कार्यपालक निदेशक

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेंद्र दोहरे का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

आगामी पर्वों के लिए अपनी शुभकामनाएं देते हुए मैं सम्माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम वी राव जी के कुशल नेतृत्व में बैंक द्वारा सितंबर 2024 के शानदार प्रदर्शन के लिए उनका आभार व्यक्त करते हुए आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूं.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया अब निरंतर बेहतर प्रदर्शन करते हुए आगे बढ़ता जा रहा है लेकिन अभी और भी बेहतर करना अपेक्षित है. शाखाएं अपनी ग्राहक सेवा को और अधिक बेहतर बनाएं, हर दिन नए ग्राहकों को बैंक से जोड़ें, विशेष रूप से वे ग्राहक जो पिछले वर्षों में हमें छोड़कर चले गए. उन्हें अपने साथ पुन: जोड़ने का हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए. व्यापारियों को अपने साथ जोड़िए, कासा जमा बढ़ाने के लिए अधिक से अधिक बचत और चालू खाते खोलिए, स्कूलों, विद्यालयों में जाकर विद्यार्थियों के खाते खुलवाइये, बड़े उद्योगों के खाते अपने बैंक में लाने के सघन प्रयास किए जाएं, उनके कर्मचारियों के वेतन खाते खोले जाएं.

शाखा में आने वाले हर व्यक्ति चाहे वह ग्राहक हो अथवा ना हो से मधुर व्यवहार किया जाए तथा उनकी पूछताछ या समस्याओं का समुचित समाधान दिया जाए.

हमारे सभी कार्मिक परस्पर एक टीम के रूप में काम कर रहे हैं. प्रत्येक सेन्ट्रलाइट टीम के एक प्रभावी सदस्य के रूप में काम करें तथा शाखा में उत्कृष्ट परिणामों हेतु पूरी सावधानी एवं सतर्कता बरतें जिससे धोखाधड़ी जैसी घटनाओं को टाला जा सके.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(महेंद्र दोहरे)
कार्यपालक निदेशक

संपादकीय

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियों,

दुर्गा पूजा, दीपावली एवं आगामी पर्वों की हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए मैं हमारे सम्माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम वी राव जी तथा तीनों सम्माननीय कार्यपालक निदेशकों के नेतृत्व में बैंक द्वारा सितंबर 2024 में बैंक द्वारा दर्शाए गए शानदार परिणामों के लिए उनके प्रति कृतज्ञता प्रदर्शित करते हुए आप सबको हार्दिक बधाई देती हूं.

सेन्ट्रलाइट का यह अंक महिला नेतृत्व को समर्पित है. पिछले वर्ष से सेन्ट्रल बैंक आफ इंडिया ने कई क्षेत्रीय कार्यालयों में महिला क्षेत्रीय प्रमुखों को नियुक्त किया है. इसके अतिरिक्त हर क्षेत्र में एक शाखा महिला शाखा के रूप में खोली गई जिसमें सभी कार्मिक महिलाएं ही हैं. इससे पता चलता है कि हमारा उच्च प्रबंधन महिला नेतृत्व पर पूर्ण विश्वास करता है और उन्हें आगे लाने हेतु हर संभव प्रयास कर रहा है. हर्ष का विषय है कि यह प्रयोग सफल होता दिखाई दे रहा है.

वर्ष 2025-26 के लिए बैंक ने सभी संवर्गों के लिए पदोन्नति प्रक्रिया प्रारंभ कर दी है. बैंक पर्याप्त समय पूर्व पदोन्नति प्रक्रियाएं पूर्ण करने के लिए कृत संकल्प है. सभी पात्र सदस्य इस प्रक्रिया में सहभागी हों जिससे उनके ज्ञान का उपयोग हो, उनकी क्षमता एवं प्रतिभा का बेहतर उपयोग हो तथा वे भी उच्चतर दायित्व का निर्वहन कर सकें.

मैं यह भी सूचित करना चाहती हूं कि सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया द्वारा पूरे भारत में दिनांक 14 सितंबर से 14 अक्टूबर तक उत्साह पूर्वक हिंदी माह मनाया और अनेकों कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जिसमें बड़ी संख्या में सेन्ट्रलाइटों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया. उल्लेखनीय है कि राजभाषा हिंदी में काम करने से नियमों के अनुपालन के साथ-साथ ग्राहक सेवा भी बेहतर होती है तथा यह व्यवसाय वृद्धि के लिए भी एक महत्वपूर्ण कारक है.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(पॉपी शर्मा)
महाप्रबंधक - राजभाषा

माननीय कार्यपालक निदेशक

श्री महेन्द्र दोहरे जी का साक्षात्कार

साक्षात्कार कर्ता: श्री राजीव वार्ष्णेय
सहायक महाप्रबंधक-राजभाषा

1. सर अभी- अभी सितंबर 2024 तिमाही के कार्यकारी परिणाम घोषित हुए हैं. सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया के परिणाम पर आप क्या कहना चाहेंगे?

श्री महेन्द्र दोहरे: सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के सितंबर 2024 के परिणाम बहुत ही अच्छे आए हैं. इस तिमाही में बैंक ने ₹ 913 करोड़ का ऐतिहासिक लाभ दिया है. बैंक को मार्केट से भी अच्छा रिसपॉन्स मिल रहा है और व्यापक पब्लिसिटी तथा अच्छी विजिबिलिटी हो रही है जो बैंक के हित में है. इसके लिए मैं समस्त स्टाफ सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ. आशा है आने वाले समय में बैंक और भी बेहतर कार्य निष्पादन करेगा.

2. कॉम्पिटेटिव बैंकिंग के दौर में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया को आप किस तरह देखते हैं?

श्री महेन्द्र दोहरे: सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया आज के कॉम्पिटिटिव बैंकिंग के दौर में इंडस्ट्री के साथ ही नहीं अपितु कुछ क्षेत्रों में और भी बेहतर काम कर रहा है. हमारे मोबाइल बैंकिंग एवं सेंट पे जैसे प्रॉडक्ट बहुत शानदार हैं. स्टाफ सदस्यों को चाहिए कि वे स्वयं भी इन प्रोडक्टों का उपयोग करें तथा शाखा में आने वाले ग्राहकों को भी इन प्रॉडक्टों के उपयोग हेतु प्रोत्साहित करें, जिससे ग्राहकों को 24*7 निर्बाध बैंकिंग सेवा मिले और शाखाओं में आने वाले ग्राहकों की संख्या भी कम हो सके. स्टाफ सदस्य इन प्रोडक्टों के माध्यम से नए ग्राहकों को जोड़ने के लिए हर संभव प्रयास करें, विशेषकर युवा ग्राहकों (जेन नेक्सट) को इन प्रोडक्ट्स से आकर्षित किया जा सकता है.

3. सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया ने एनपीए के स्तर में काफी कमी की है. इस दिशा में मॉनीटरिंग हेतु अभी आपकी और क्या अपेक्षाएं हैं?

श्री महेन्द्र दोहरे: खुशी की बात है कि सितंबर 2024 में बैंक का नेट एनपीए 0.69% हो गया है जो पिछले वर्ष अर्थात सितंबर 2023 में 1.64% था. इस विषय में शाखाएं ध्यान रखें कि हमारा नेट एनपीए अवश्य 0.69% हो गया है लेकिन अभी भी ग्रॉस एनपीए 4.59% है. इसके लिए शाखाओं को एनपीए कम करने के लिए और अधिक प्रयास करना आवश्यक है. केन्द्रीय कार्यालय स्तर पर हम मॉनीटरिंग पर विशेष ज़ोर दे रहे हैं और नियमित रूप से बैंक के उधार खातों की मॉनीटरिंग की जा रही है, जिससे बैंक के उधार खातों में स्लिपेज न हो और वे स्टैंडर्ड बने रहे.

4. अधिकतम वसूली के लिए शाखाओं को क्या कदम उठाने चाहिए.

श्री महेन्द्र दोहरे: बैंकिंग के क्षेत्र में ऋणों की वसूली पर विशेष ध्यान देना आवश्यक होता है. ऋण खातों में स्लिपेज न हो इसके लिए शाखाओं को अपने उधारकर्ताओं से नियमित रूप से एवं व्यक्तिगत रूप से मिलते रहना आवश्यक होता है. नियमित रूप से खातों की निगरानी की जानी चाहिए. ऋण खाते के स्लिपेज होने की स्थिति में तुरंत कार्यवाही की जाए. एनपीए खातों में समय से कदम उठाए जाएं. सरफेसी एक्ट (यदि आवश्यक हो) आदि कार्यों में कोई विलंब न किया

जाए. शाखाएं इस कार्य के लिए विधि अधिकारियों का पूरा सहयोग लें. इसके अतिरिक्त विधि अधिकारी भी एनपीए खातों में समय से कार्यवाही करने पर पर्याप्त ध्यान दें.

5. शाखा स्तर पर ग्राहक सेवा में सुधार के लिए सेन्ट्रलाइट्स से आपकी क्या अपेक्षाएं हैं?

श्री महेन्द्र दोहरे: बैंक के व्यवसाय में और उसे बढ़ाने में ग्राहक सेवा सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है. शाखाओं में कार्यरत समस्त सेन्ट्रलाइट्स को अपनी ग्राहक सेवा को निरंतर उत्कृष्टता की ओर ले जाना अपेक्षित है. शाखाएं मासिक ग्राहक बैठक अनिवार्य रूप से करें. इन बैठकों में अपने प्रतिष्ठित ग्राहकों के साथ-साथ नए ग्राहकों को भी बुलाएं. उनकी समस्याओं को सुने तथा उनका समाधान करें. पेंशनरों को विशेष सेवाएं दें. उनकी समस्याओं पर ध्यान दें. इसके अतिरिक्त जेन नेक्सट (युवा) वाले ग्राहकों की ओर भी विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए. शाखा परिसर को (शौचालय इत्यादि सहित) स्वच्छ रखा जाए तथा शाखा में आने वाले हर व्यक्ति से चाहे वह ग्राहक हो अथवा ना हो, मधुर व्यवहार किया जाए.

6. इसी क्रम में आपके अनुसार एक आदर्श क्षेत्रीय प्रमुख कैसा होना चाहिए?

श्री महेन्द्र दोहरे: मेरी दृष्टि में एक आदर्श क्षेत्रीय प्रमुख को अपने क्षेत्र के सभी शाखा प्रबंधकों एवं स्टाफ सदस्यों की टीम के सक्रिय सदस्य के रूप में आगे बढ़कर नेतृत्व करना चाहिए. सभी शाखा प्रबंधकों को गाइड करना, उनके प्रस्तावों पर तत्काल ध्यान देना और उनकी समस्याओं का त्वरित समाधान भी प्रदान करना चाहिए. क्षेत्रीय प्रमुख को शाखा प्रबंधक के साथ क्षेत्र के विभिन्न विभागों/ उपक्रमों/ निगमों के बड़े अधिकारियों, उद्यमियों, व्यापारियों एवं गणमान्य नागरिकों से मिलना चाहिए, उन्हें अपने बैंक से जोड़ने का हर संभव प्रयास करना चाहिए. शाखा प्रबंधकों एवं क्षेत्र के स्टाफ सदस्यों के अच्छे प्रयासों के लिए उनकी सराहना करें तथा अन्य सदस्यों को अच्छे कार्यों के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करें.

7. एक आदर्श अंचल प्रमुख कैसा होना चाहिए?

श्री महेन्द्र दोहरे: अगर आप अंचल प्रमुख के विषय में पूछना चाहते हैं तो मैं कहूंगा कि एक अंचल प्रमुख को बैंक का बिजनेस बढ़ाने के लिए स्वयं अपना उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए. वह स्वयं बिजनेस और अवसरों के विषय में विचार करें तथा अपने अधीन कार्यरत क्षेत्रीय प्रमुखों तथा

शाखा प्रमुखों को गाइड करके उन अवसरों को कार्यान्वित करें. अंचल प्रमुख अपने अंचल में दूसरे बैंकों की बिजनेस एक्टिविटीज पर भी ध्यान दें और तदनुसार अपने अंचल की बिजनेस एक्टिविटीज को मॉनिटर करे. अंचल के स्टाफ सदस्यों के साथ मधुर संबंध बनाएं और उनके संबंधों के माध्यम से भी अंचल का बिजनेस बढ़ाए.

8. बैंक डिजिटल सेवा और बेहतर करने के लिए क्या कदम उठा रहा है?

श्री महेन्द्र दोहरे: बैंक जल्दी ही नया मोबाइल बैंकिंग ऐप, इंटरनेट बैंकिंग तथा यूपीआई एप लांच करने जा रहा है. बैंक डिजिटल प्लेटफॉर्म पर लाइव लोन फैसेलिटीज की दिशा में कार्य कर रहा है. अभी सात लोन जर्नी लाइव हैं तथा इसमें कई और लोन प्रोडक्ट जोड़े जा रहे हैं. सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया अपने कस्टमर के लिए स्टेट ऑफ द आर्ट डिजिटल बैंकिंग सर्विस प्रदान करने के लिए कृत संकल्प है.

9. टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में सेन्ट्रल बैंक आफ इंडिया ने काफी सराहनीय प्रयास किया है. इस दिशा में अब आपकी क्या अपेक्षाएं हैं?

श्री महेन्द्र दोहरे: विगत कुछ वर्षों से सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया अपनी टेक्नोलॉजी को लगातार अपग्रेड करता जा रहा है. हमारा प्रयास है कि हम अपने कस्टमर को उन्नत टेक्नोलॉजी के साथ-साथ सर्वश्रेष्ठ सेवाएं प्रदान करें. हमारे स्टाफ सदस्यों से अपेक्षा है कि वह स्वयं बैंक के टेक्नोलॉजी बेस प्रोडक्टों का उपयोग करें तथा अपने बैंक के ग्राहकों को भी टेक्नोलॉ जी के अधिकतम प्रयोग के लिए निरंतर प्रोत्साहित करें. हमारा प्रयास है कि बैंक नवीनतम टेक्नोलॉजी के साथ आगे बढ़े और हमारे सभी स्टाफ सदस्य स्वयं भी टेक्नोसेवी हों तथा अपने ग्राहकों को भी टेक्नोसेवी भी होने के लिए प्रेरित करें.

10. हमारा बैंक जनरल इंश्योरेंस एवं जीवन बीमा के क्षेत्र में प्रवेश करने जा रहा है, इस संबंध में आपके विचार.

श्री महेन्द्र दोहरे: अभी-अभी हमारे बैंक ने फ्यूचर जनरली इंडिया लाइफ इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड एवं फ्यूचर जनरली इंडिया इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड में स्टॉक प्राप्त किया है

अर्थात शीघ्र ही बैंक जीवन बीमा एवं साधारण बीमा के व्यवसाय को प्रारंभ करने वाला है. अभी तक हम दूसरी कंपनियों के साथ इस व्यवसाय को कर रहे थे, लेकिन अब हमारा बैंक स्वयं इस व्यवसाय में प्रवेश कर रहा है. सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया एक बड़ा बैंक है और हमारा ग्राहक आधार भी बहुत बड़ा है इसलिए हमें इन दोनों प्रकार के बीमा क्षेत्रों में व्यवसाय करने से बहुत लाभ होने की आशा है.

11. सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया ने कुछ शाखाओं को केवल महिला शाखा के रूप में स्थापित किया है? इस दिशा में आपकी और क्या योजना है?

श्री महेन्द्र दोहरे: महिला सशक्तिकरण के उद्देश्य से

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया द्वारा किए जा रहे प्रयासों में अब हमने कई महिला क्षेत्रीय प्रमुखों को नियुक्त किया है. हमने प्रत्येक क्षेत्र में न्यूनतम एक शाखा पूरी तरह महिला शाखा के रूप में आरंभ की है. हर्ष का विषय है कि हमारे बैंक में महाप्रबंधक, अंचल प्रमुख, क्षेत्रीय प्रमुख, शाखा प्रमुख एवं विभाग प्रमुख के रूप में कार्यरत महिला कर्मी बेहतर कार्य कर रही हैं. सेन्ट्रल बैंक ऑप इंडिया में हमारा प्रयास है कि महिला कर्मियों को आगे लाया जाए तथा उन्हें नेतृत्व करने के अवसर दिए जाए.

12. सर, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया में राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में आपके विचार.

श्री महेन्द्र दोहरे: हमारा बैंक राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में अच्छा कार्य कर रहा है. पिछले दिनों भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा प्राप्त राजभाषा कीर्ति पुरस्कार, वित्तीय सेवाएं विभाग से पुरस्कार आदि जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कार हमें प्राप्त हुए हैं. इसके अतिरिक्त गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग विभिन्न क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालयों एवं विभिन्न नराकासों द्वारा भी हमारे बैंक को निरंतर पुरस्कार मिल रहे हैं.

13. सर, आपकी रुचियां क्या-क्या है?

श्री महेन्द्र दोहरे: मैं बिजनेस मैगजीन एवं फाइनेंशियल न्यूजपेपर पढ़ना पसंद करता हूं. मैं हर स्तर के कार्मिकों से मिलना और उनसे बात करना पसंद करता हूं. कार्मिकों के सुझाव और समस्याओं को सुनना मेरी रुचि है.

14. सर, फुर्सत के क्षणों में आप क्या करना पसंद करते हैं?

श्री महेन्द्र दोहरे: ऐसे तो हमें फुर्सत मिलना बड़ा कठिन होता है, फिर भी कभी मौका मिलता है तो मैं संगीत सुनना, क्रिकेट देखना या बिजनेस मैगजीन पढ़ना, फाइनेंशियल न्यूज पेपर पढ़ना पसंद करता हूं.

15. एक कार्यपालक निदेशक के रूप में सेन्ट्रल बैंक आफ इंडिया में कार्य वातावरण आपको कैसा लगता है?

श्री महेन्द्र दोहरे: एक कार्यपालक निदेशक के रूप में मेरा यह स्पष्ट रूप से मानना है कि सेन्ट्रल बैंक आफ इंडिया में कार्य वातावरण बहुत अच्छा है. टीम सेन्ट्रल के सदस्यों के बीच परस्पर सहयोग एवं सद्भाव है और यहां कार्य करना सुखद अनुभव है.

16. आप सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया के भविष्य को कैसा देखते हैं?

श्री महेन्द्र दोहरे: सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया देश का पहला पूर्ण स्वदेशी बैंक है जो हमेशा हर क्षेत्र में अग्रणी भूमिका में रहता आया है. बैंक पुन: प्रगति के पथ पर तेजी से आगे बढ़ रहा है. सभी सेन्ट्रलाइट अच्छा कार्य कर रहे हैं जो बैंक के कार्यकारी परिणामों में स्पष्ट रूप से परिलक्षित हो रहा है. मेरा विश्वास है सेन्ट्रल बैंक आफ इंडिया का भविष्य शानदार है.

17. सर, चलते-चलते सभी सेन्ट्रलाइटों के लिए आपका क्या संदेश है?

श्री महेन्द्र दोहरे: देशभर में कार्यरत सभी सेन्ट्रलाइट्स के लिए मेरा यही संदेश है कि वह हर स्तर पर एक टीम के रूप में मिलजुल कर कार्य करें तथा शाखा में आने वाले हर व्यक्ति को बेहतरीन सेवा दें. सभी सेन्ट्रलाइट स्वयं बैंक के डिजिटल प्रोडक्टों का प्रयोग करें साथ ही अपने ग्राहकों को भी इन उत्पादों के प्रयोग के लिए प्रेरित करें. सेन्ट्रलाइट नियमित रूप से शाखा से बाहर निकलें और अच्छे खातों को कैनवास करके अपने बैंक में लाएं. सभी सेन्ट्रलाइट महिलाओं का सम्मान करें तथा बैंक का व्यवसाय बढ़ाने का हर संभव प्रयास करें. ध्यान रखें, बैंक की प्रगति में ही हमारी प्रगति निहित है.

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय मदुरै के संयोजन में कार्यरत नराकास मदुरै को भाषिक क्षेत्र 'ग' में तृतीय स्थान प्राप्त हुआ. नई दिल्ली में दिनांक 14.09.2024 को आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में इस पुरस्कार शील्ड को माननीय केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री, भारत सरकार श्री नित्यानंद राय से प्राप्त करती हुई महाप्रबंधक राजभाषा सुश्री पॉपी शर्मा एवं प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए श्री मेहेर कुमार पाणिग्रही, क्षेत्रीय प्रमुख, मदुरै.

चंडीगढ में दिनांक 22.08.2024 को वित्तीय सेवाएं विभाग द्वारा हमारे बैंक को श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रदत्त तृतीय पुरस्कार को प्राप्त करती हुई माननीय महाप्रबंधक सुश्री पॉपी शर्मा, चंडीगढ अंचल प्रमुख श्री शीशराम तुंदवाल एवं चंडीगढ़ क्षेत्रीय प्रमुख श्री सुधांशु शेखर. इस अवसर पर बैंक द्वारा राजभाषा प्रदर्शनी भी लगाई गई एवं चंडीगढ अंचल की ई - पत्रिका का विमोचन किया गया.

वह मूर्खों में बड़ा मूर्ख है जो यह मानता है कि इस संसार में भारी सुख ही सुख है - समर्थ रामदास

महिला सशक्तिकरण

दुनिया बनाने के बाद ईश्वर ने सोचा होगा कि इस दुनिया को और सुन्दर होना चाहिये, और उन्होंने सत्य की रचना की. सत्य याने मानव के दो रूप स्त्री और पुरुष. ये दोनों ही एक दूसरे के पूरक हैं किन्तु नारी के बिना दुनिया का कोई अस्तित्व नहीं है, क्योंकि ईश्वर ने स्त्री की रचना ही इस प्रकार से की है कि इस संसार की निर्मात्री वह स्वयं ही है. हम सब के जीवन मे नारी का एक महत्वपूर्ण स्थान है चाहे वह माँ के रूप में हो या बहन या पत्नी या किसी अन्य रूप मे एक पुरुष की सफलता मे नारी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है. आज वह समय आ गया है जब महिलाओं के विकास पर ही संसार का विकास निर्भर है.

मनुस्मृति के तृतीय अध्याय मे स्पष्ट वर्णन आता है, कि जहाँ महिलाओं की पूजा होती है, वहाँ देवता भी निवास करते हैं. **''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता''** वैदिक काल में स्त्रियों की स्थिति इतनी अच्छी होने के बावजूद आज कई जगहों पर उनकी स्थिति अत्यंत दयनीय है.

ईक्कीसवीं सदी में कदम रखने वाले भारतीय समाज में स्त्री को आज भी वह दर्जा प्राप्त नहीं हुआ जो कि उसे बहुत पहले ही मिल जाना चाहिये था. बहुओं को आज भी निर्भयता से जलाया जा रहा है, बाल विवाह, पर्दा-प्रथा एवं तलाक व्यस्था आदि के द्वारा महिलाओं का उत्पीड़न, जहाँ दहेज न दे पाने के कारण वधू हत्या एक आम बात है वहीं बालिका भ्रूण हत्या एक नया फैशन है. एक ऐसे अमानवीय, पतनशील समाज में स्त्री, फिर भी जीवित है, यह अपने आप मे किसी आश्चर्य से कम नही. स्त्री को संतान प्राप्ति का साधन माना गया, उसे हमेशा पुरुष के संरक्षण में रहने को विवश किया जाता रहा है. पिता, पति और पुत्र की आज्ञा पालन को विवश किया जाता रहा है. स्त्रियों को समाज में बराबरी का दर्जा न देना, उसे पुरुषों के समकक्ष न समझना समाज की एक बड़ी विडम्बना है.

किन्तु अनेकानेक चुनौतियों के बावजूद यह भी सत्य है कि वर्तमान में वह अनेक स्थान पर अपना विशेष मुकाम बना चुकी है. जिसकी प्रतीक्षा वह वर्षों से करती आ रही थी. जैसे- जहाँ वैश्विक स्तर पर देश का झण्डा लहराते हुए महिलाओं के द्वारा ओलम्पिक खेलों में कई पदक जीते जा रहे हैं वहीं देश में कई उच्च पदों पर अपनी काबीलियत के बलबूते आज महिलाएँ पदस्थ हैं. अगर ध्यान से देखें तो ज्ञात होता है कि कुछ वर्षों से विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं में महिलाओं का प्रदर्शन सराहनीय एवं पुरुषों से आगे रहा है.

समाज के सर्वांगीण विकास के लिये न केवल महिलाओं का शिक्षित होना आवश्यक है अपितु आत्मनिर्भर भी होना जरूरी है क्योंकि किसी भी देश की लगभग आधी जनसंख्या महिलाओं से ही मिलकर बनी है. संविधान के अनुच्छेद 14 में समानता की बात की गई है वहीं भारत सरकार ने सन् 2001 को महिला सशक्तिकरण वर्ष के रूप में मनाया. इसका उद्देश्य ही स्त्रियों में जागरूकता लाना और उन्हें स्वप्रेरणा से आत्मनिर्भर बनाना था. आज के बदलते हुए वैश्विक परिवेश के चलते देश में भी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक रूप से स्त्रियों ने इतनी तरक्की अवश्य कर ली है कि वे समाज में अपना विशिष्ट स्थान बना सकी हैं. आज ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहाँ स्त्रियों ने अपना परचम न लहराया हो. चाहे खेल हो या राजनीति, सामाजिक हो या आर्थिक क्षेत्र, शिक्षा हो या चिकित्सा क्षेत्र आज भारत की सबसे कठिन मानी जाने वाली संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित लोक सेवा परीक्षा मे महिलाएँ उच्चतम स्थान हासिल कर रही हैं. आज नारी जीवन के हर क्षेत्र में कदम बढ़ा रही है. आज की नारी अपने कर्तव्यों को गृहकार्यों की इतिश्री ही नहीं समझती है, अपितु अपने सामाजिक दायित्वों के प्रति भी सजग है. है वह अब स्वयं के प्रति सचेत होते हुए अपने अधिकारों के प्रति आवाज उठाने की हिम्मत रखती है. शिक्षा के बढ़ते प्रसार के चलते नारी जागरुक हुई और इस जागरुकता ने नारी के कार्यक्षेत्र की सीमा को घर की चारदीवारी से बाहर की दुनिया तक फैला दिया है. इससे जहाँ नारी अपने पैरों पर खड़ी हो सकी, वहीं आर्थिक आत्मनिर्भरता ने उसे रचनात्मक कार्यों हेतु भी प्रेरित किया.

वैश्विक स्तर पर 2015 मे लाए गए सतत विकास लक्ष्य का 5वां लक्ष्य, लिंग समानता को ही परिलक्षित करता है. वहीं महिला सशक्तिकरण की ओर कदम बढ़ाते हुए भारत सरकार द्वारा अनेक योजनाओं एवं कानूनों को लागू किया गया है. जिनमें हाल ही में आए नारी शक्ति वन्दन कानून 2023, जिसके अन्तर्गत लोकसभा एवं राज्य विधानसभाओं मे महिलाओं के लिए 1/3 सीटें आरक्षित की जाएंगी, जो कि महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण की ओर एक बड़ा कदम है. अधिक से अधिक बालिकाओं को शिक्षित करने के प्रयास से शुरू किया गया बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान, महिलाओं के लिए स्वच्छ ईंधन की आपूर्ति हेतु प्रधानमंत्री उज्जवला योजना, प्रधानमंत्री मातृ वन्दना योजना आदि अन्य योजनाएँ हैं.

महिला सशक्तिकरण की दिशा में सरकारों, गैर सरकारी संस्थाओं एवं निजी संस्थाओं के द्वारा कई प्रयास किये जा रहे हैं लेकिन इन भरपूर प्रयासों के बावजूद भी महिलाओं को समानता का दर्ज़ा आज भी हासिल नहीं है, ऐसे में अगर कुछ उम्मीद की जा रही है तो हमें उपरोक्त पहलुओं की ओर तो ध्यान देना ही होगा, साथ ही हमें अपनी मानसिकता और नज़रिए को भी बदलना होगा जोकि मात्र किसी नीति, योजना, मिलिनियम डेवलपमेन्ट गोल एवं कार्यक्रमों से नही बदलेगा बल्कि उसके लिए आत्मचिंतन के साथ पारिवारिक एवं सामाजिक पहल की सख्त आवश्यकता है.

''अबला से सबला हुई, देखो नारी आज.
नारी के सहयोग से, समृद्ध बने समाज..''

- (पी.सतीश बाबु)
क्षेत्रीय प्रमुख
क्षेत्रीय कार्यालय-विजयवाड़ा

मेरी सिक्किम यात्रा

खूबसूरत हिल स्टेशन किसे नहीं लुभाते, तो हम भी निकल पड़े अपने परिवार के साथ सिक्किम की खुबसूरत वादियों के नज़ारे देखने, सिक्किम जाने के लए सबसे पहले वायुयान की यात्रा करके हम बागडोगरा पहुंचे और यहाँ से सिलीगुड़ी होते हुए सिक्किम की राजधानी गंगटोक का हमारा सफर शुरू हुआ. सिक्किम अपने सुन्दर पर्वतों एवं झरनों के लिए विशेष प्रसिद्ध है. गंगटोक, पे लंग, रवंगला, लाचुंग, युमथांग वैली, जीरो पॉइंट ऐसे कई मनोरम स्थानों की यात्रा की और कई यादगार लम्हे. इन सभी स्थानों से मुझे दो स्थान विशेष रूप से मनमोहक और दर्शनीय लगे.

युमथांग वैली :

युमथांग वैली गंगटोक से लगभग 120 कम दूर अवस्थित है जहाँ जाने के लए पहले लाचुंग पहुंचना होता है. हमें निजी टैक्सी से लाचुंग जाने में लगभग 6 घंटो का समय लगा. पूरे मार्ग में कई मनोरम दृश्य, ऊँचे बर्फ से ढके पहाड़ और कल कल बहते ऊंचाई से गिरते झरने मन को मोह लेते हैं . मन इन दृश्यों में ठहर सा जाता है, मानो यहीं रुक कर बस ये नज़ारे देखते रहे. मार्ग में वमनला और सेवन सिस्टर्स वाटर फाल्स देख सकते हैं , ऊचांई से गिरते झरने ऐसा दृश्य उपस्थित करते हैं मानो पर्वतों की ऊंचाई से जल दूध की तरह बह रहा हो. लाचुंग में रात्रि विश्राम के पश्चात सुबह हम युमथांग वैली घूमने चल दिए जो यहाँ से लगभग 25 कि. मी. दूर है. इस पूरे रास्ते फूलों से लदे हुए पेड़ पौधे, हरे भरे पहाड़ और दूर कहीं से गिरते मनमोहक झरने पूरे रास्ते दिखाई देते है, कल सुबह 5 बजे से ही सूरज की किरणें दस्तक देने लगती है, प्रकृति ऐसा नजारा प्रस्तुत करती है जिसको शब्दों में पिरोना बहुत ही मुश्किल है. ये जीवन के कुछ ऐसे दृश्य, ऐसे क्षण होते है जिन्हें आप अपनी आँखों के कैमरे से कैप्चर करके अपने मन की मेमोरी में सेव कर लेते हैं. युमथांग वैली में जहाँ सुन्दर सी कल- कल बहती नदी है वही दूसरी ओर ऊँचे पहाड़ हैं वहीं फूलों से लदी घाटियां हैं इसे वैली ऑफ़ फ्लावर्स भी कहा जाता है, पूरे मार्ग में फूलों से लदे पेड़ आपको बोलते से लगते हैं कि आइये एक सेल्फी हो जाये.

टिमी चाय बागान

गंगटोक से पे लंग जाने के मार्ग पर टिमी टी गार्डन अवस्थित है, गंगटोक से नामची होते हुए यहाँ पहुंचा जा सकता है. ये मात्र टी गार्डन न होते हुए बहुत सुन्दर, मनमोहक स्थान है. यहाँ घूमने के लिए आपको एंट्री फीस देनी होती है. बागान में अंदर जाने के बाद चारों ओर फैले चाय पत्ती के कतारबद्ध पौधे एक नया दृश्य पैदा करते हैं , जो हमारे मैदानी पौधों से एकदम भिन्न होता है, थोड़ा और नीचे की ओर पेड़ों का दृश्य और उनके ऊपर चारों ओर उड़ते बादल वाकई मन मोह लेते हैं. गार्डन में जगह-जगह चाय पत्ती बेचने के लिए काउंटर बने हुए हैं जो आपको सिक्किम के विशेष पत्तियों से रूबरू कराते हैं जैसे ब्लैक टी के फर्स्ट फ्लश , ग्रीन टी , ब्लू टी, कैमोमाइल टी, मिल्क टी और भी जाने क्या क्या, चाय सिर्फ चाय नहीं है ये तो यहीं जा कर पता चला. फिर हमने भी चाय की चुस्कियों का आनंद लिया. इस मनोरम स्थान पर लोग रील बनाते चाय पीते हुए आनंद लेते है. यहाँ आप स्थानीय पोशाकों में यादगार फोटों भी खिंचवा सकते हैं . ये स्थान आपको अपनी पसंदीदा

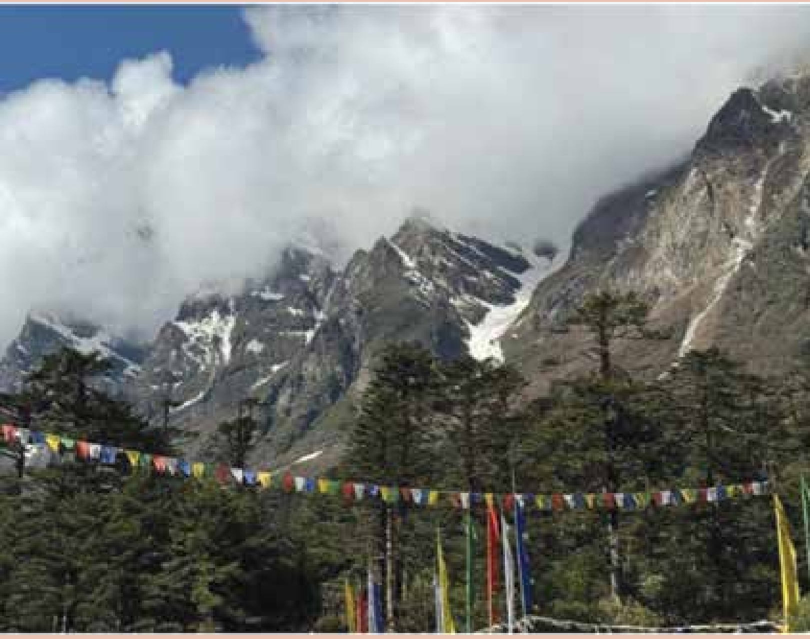

चाय की अलग ही दुनिया में ले जाता है. तो जब भी सिक्किम जाये इन स्थानों का भ्रमण अवश्य करें और हाँ चाय पीना और चाय लेकर आना ना भूलियेगा.

प्रफुल्ल कुमार सिटोके
वरिष्ठ प्रबंधक (सू.प्रो)
क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौर

पदोन्नति

सेन्ट्रलाइट परिवार की ओर से हार्दिक बधाई

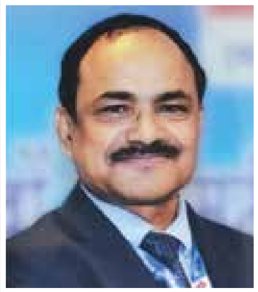

श्री उज्जवल चंद्रा
उप महाप्रबंधक

श्री मनोज कुमार सक्सेना
उप महाप्रबंधक

श्री राज किशोर केरकट्टा
उप महाप्रबंधक

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया द्वारा वर्ष 1924 में महिला विभाग स्थापित किया गया. उस समय के महिला विभाग के सदस्यों का दुर्लभ चित्र

बैठे हुए - बाएं से दाएं: सुश्री वाय.के. एन. सर्वेयर, बी. कॉम., सीएआईबी (लंदन), सुश्री जी.एन. कोयाजी, बी.ए., सुश्री एम.एन. कोयाजी, बी.ए., सुश्री जी.ए. कपाड़िया, बी.ए. दूसरी पंक्ति में खड़ी हैं- सुश्री के. जे. पर्वतीकर, बी.एससी., सुश्री ए. बी. इंजीनियर, बी. कॉम., एलएलबी, सुश्री ए.ए. नानावटी, बी.ए., सुश्री एम.पी. गांधी, बी.ए. तीसरी पंक्ति में खड़ी हैं सुश्री लीला ए. सैयद, बी.ए., सुश्री बी.बी. मिस्त्री, बी.ए.

सेन्ट्रलाइट पढ़िए और आकर्षक इनाम जीतिए

प्रश्नमंच क्र - 1

कृपया QR कोड स्कॅन करें

दिनांक 5.12.2024 तक प्राप्त सर्वश्रेष्ठ 20 विजेताओं को राशि रु. 500/-प्रदान कर पुरस्कृत किया जाएगा.

भारत में महिलाओं की भूमिका और स्थिति की विकास यात्रा

भारत के इतिहास में महिलाओं की भूमिका और स्थिति जटिल और विविध रही है. ऐतिहासिक रूप से, भारतीय समाज पितृसत्तात्मक रहा है, जिसमें पुरुषों के पास महिलाओं की तुलना में अधिक शक्ति और नियन्त्रण होती है.

सिंधु घाटी सभ्यता और वैदिक काल के दौरान, महिलाओं को समाज में समान दर्जा प्राप्त था. उन्होंने सभा और समितियों में भाग लेकर राजनीतिक रूप से भाग लिया. वैदिक काल की कुछ महत्वपूर्ण महिला हस्तियाँ घोषा, लोपामुद्रा, सुलभा मैत्रेयी और गार्गी हैं. उत्तर वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति में गिरावट आने लगी और उन पर कई सामाजिक प्रतिबंध लगा दिये गये. गुप्त काल में सती प्रथा के प्रमाण मिले हैं.

मध्यकाल में, हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों में महिलाओं की सामाजिक स्थिति वर्तमान से बहुत भिन्न थी. कुलीन वर्ग की महिलाएँ पर्दा प्रथा का पालन करती थीं और उन्हें घर से बाहर जाने की अनुमति कम ही थी. इस दौर में सती प्रथा अधिक प्रचलित हो गई है. सामाजिक सुधार आंदोलनों के उदय के साथ, ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ. सुधारकों के प्रयासों से 1829 में सती प्रथा समाप्त कर दी गई और 1856 में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम पारित किया गया. महिलाओं ने महत्वपूर्ण आंदोलनों के माध्यम से बड़ी संख्या में भारतीय साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष में भाग लिया.

पारंपरिक भारतीय समाज में महिलाओं की सामाजिक भूमिका मुख्य रूप से एक पत्नी और माँ के रूप में रही है. हाल के वर्षों में भारत में महिलाओं की सामाजिक भूमिका में बदलाव आया है. महिलाएं परिवार में सतत विकास और जीवन की गुणवत्ता की कुंजी हैं. महिलाएं परिवार में विभिन्न भूमिकाएँ निभाती हैं, जैसे पत्नी, प्रशासक, पारिवारिक आय की प्रबंधक और सबसे महत्वपूर्ण, माँ.

बच्चों को शिक्षित करने में महिलाएं अहम भूमिका निभाती हैं. भावी पीढ़ियों का विकास महिलाओं पर निर्भर करता है. वार्षिक शिक्षा स्थिति रिपोर्ट (एएसईआर) रिपोर्ट के अनुसार, मां के शिक्षा स्तर का बच्चों के समग्र विकास के साथ गहरा संबंध है.

भारत में प्रदान की जाने वाली सभी स्वास्थ्य सेवाओं के लिए 70-80% महिलाएं जिम्मेदार हैं. भारत में स्वास्थ्य और पोषण की स्थिति में सुधार के लिए महिला पेशेवरों और सभी स्तरों पर महिलाओं का सशक्तिकरण आवश्यक है. उपलब्धता, पहुंच, उपयोग और स्थिरता सहित खाद्य सुरक्षा के सभी चार पहलुओं में महिलाएं आवश्यक योगदानकर्ता हैं.

भारत में महिलाओं की राजनीतिक भूमिका जटिल और विकासशील रही है. ऐतिहासिक रूप से, भारत में महिलाओं को राजनीति में कम प्रतिनिधित्व दिया गया है, सत्ता के पदों पर महिलाओं का प्रतिशत कम है. लैंगिक समानता और वास्तविक लोकतंत्र के लिए महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी एक बुनियादी शर्त है.

इस बात के भी पुख्ता प्रमाण हैं कि जैसे-जैसे अधिक महिलाएं कार्यालय के लिए चुनी जाती हैं, नीति-निर्माण में गुणात्मक वृद्धि होती है जो जीवन की गुणवत्ता पर जोर देती है और परिवारों, महिलाओं और जातीय और नस्लीय अल्पसंख्यकों की प्राथमिकताओं को दर्शाती है. भारत में राजनीति में महिलाओं की भागीदारी की स्थिति का आकलन करने के तीन मुख्य मानदंड हैं: महिला मतदाता मतदान, चुनावों में महिलाओं की उम्मीदवारी, और राजनीतिक कार्यालयों में महिलाओं का प्रतिनिधित्व.

लोकसभा चुनाव में महिला मतदाताओं का मतदान प्रतिशत 1962 में 46.6% से बढ़कर 2019 में 66.9% हो गया है, जो राजनीति में उनकी बढ़ती भूमिका को दर्शाता है. साथ ही, लोकसभा में महिला प्रतिनिधियों की संख्या 1951 में 5% से बढ़कर 2019 में 14% हो गई. भारत में जमीनी स्तर पर महिला नेताओं का प्रतिनिधित्व लगभग 50% है, खासकर 1992 में 73वें और 74वें संशोधन के बाद से, जिसमें महिलाओं को सभी सीटों में से एक तिहाई सीटें आवंटित की गईं.

भारत में महिलाओं की आर्थिक भूमिका पारंपरिक रूप से सीमित रही है, कई महिलाओं को सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है जो उन्हें कार्यबल में पूरी तरह से भाग लेने से रोकती हैं. हालाँकि, हाल के वर्षों में, भारतीय अर्थव्यवस्था में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका की मान्यता बढ़ रही है. राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में महिलाओं का वर्तमान योगदान लगभग 18% है. भारत में कृषि कार्यबल में 48% महिलाएँ शामिल हैं और उनके पास केवल 13% भूमि है. भारत में महिलाएँ विनिर्माण कार्यबल का लगभग 20% और सेवा क्षेत्र में कुल कार्यबल का लगभग 30% हैं. वर्तमान में, भारत में कामकाजी उम्र की 432 मिलियन महिलाएं हैं, जिनमें से 343 मिलियन असंगठित क्षेत्र में कार्यरत हैं. स्टार्टअप के मामले में भारत दुनिया में तीसरे स्थान पर है, और उनमें से 10% का नेतृत्व महिला संस्थापकों ने किया है. इसके अलावा, शोध से पता चलता है कि महिलाओं द्वारा शुरू किए गए उद्यम अधिक टिकाऊ होते हैं.

2022 में, 250 भारतीय कंपनियों के बीच एक सर्वेक्षण से पता चला कि मुख्य कार्यकारी अधिकारी या प्रबंध निदेशक की भूमिकाओं में महिलाओं की हिस्सेदारी 55% बढ़ गई है, जो अर्थव्यवस्था को चलाने में उनकी भूमिका में महत्वपूर्ण वृद्धि को दर्शाता है.

भारत में, महिलाओं ने पारंपरिक रूप से पर्यावरण संरक्षण और प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, खासकर ग्रामीण समुदायों में जहां वे अक्सर अपनी आजीविका और कल्याण के लिए प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर रहती हैं.

भारत जैसे अधिकांश विकासशील देशों में, महिलाएं किसान, पशुपालक और पानी और ईंधन संग्रहकर्ता के रूप में प्रमुख भूमिका निभाती हैं. बिश्नोई आंदोलन, चिपको आंदोलन, अप्पिको आंदोलन, साइलेंट वैली आंदोलन और नर्मदा बचाओ आंदोलन जैसे विभिन्न पर्यावरण आंदोलन भारत के महत्वपूर्ण पर्यावरण आंदोलन हैं जो महिलाओं के अभिन्न नेतृत्व को दर्शाते हैं.

भारत सरकार ने विभिन्न नीतियों और कार्यक्रमों को अपनाया है जैसे कि 1990 के दशक के संयुक्त वन प्रबंधन (जेएफएम) कार्यक्रम में यह अनिवार्य था की प्रबंधन समितियों में 33% सदस्यता महिलाओं की हो. आज, सभी सतत विकास और पर्यावरण प्रबंधन कार्यक्रमों की योजना, कार्यान्वयन और निगरानी में महिलाओं की भूमिका को ''मुख्यधारा में लाने'' पर जोर बढ़ रहा है. लड़कियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच बढ़ाने के साथ-साथ शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम जो महिलाओं को कार्यबल में भाग लेने के लिए आवश्यक कौशल विकसित करने में मदद करते हैं पर भी काम हो रहा है.

शिशु देखभाल, स्वास्थ्य देखभाल और परिवहन जैसी सहायता सेवाएँ महिलाओं को काम और पारिवारिक जीवन की माँगों को संतुलित करने में मदद कर सकती हैं. राजनीति, व्यवसाय और अन्य क्षेत्रों में महिलाओं के नेतृत्व को बढ़ावा देने की पहल, साथ ही सलाह और नेटवर्किंग कार्यक्रम जो महिलाओं को सफल होने के लिए आवश्यक कौशल और कनेक्शन विकसित करने में मदद करते हैं. इसमें कार्यस्थल के साथ-साथ जीवन के अन्य क्षेत्रों में भेदभाव और पूर्वाग्रह से निपटने के प्रयास शामिल हैं.

सामुदायिक भागीदारी को प्रोत्साहित करना और संवाद, क्षमता-निर्माण और नेटवर्किंग के लिए मंच बनाकर महिलाओं को नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए एक सक्षम वातावरण बनाना. महिलाएं न केवल खुद को सशक्त बना रही हैं बल्कि हमारी अर्थव्यवस्था को भी टिकाऊ बना रही हैं. सरकारों से लगातार मिल रहे आर्थिक सहयोग से आत्मनिर्भर भारत के संकल्प में उनकी भागीदारी दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है.

आज हम देखते हैं कि नारी ने मैथली शरण गुप्त जी की कविता ''अबला जीवन हाय तुम्हारी यहीं कहानी.... आंचल में दूध और आंखों में पानी है'' से आगे बढ़ कर **''ना अबला हूं ना मैं बेचारी हूं, मै आज की युग की नारी हूं''** तक की यात्रा पूरी की है.

श्री सुमित
प्रबंधक (आई.टी)
क्षेत्रीय कार्यालय गोरखपुर

हिंदी में घुसती इंग्लिश

किसी ने सही कहा है ....
हीट को ताप कहने में.
यू को आप कहने में.
स्टीम को भाप कहने में.
फादर को बाप कहने में.
क्या दिक्कत है ?

बैड को ख़राब कहने में.
वाईन को शराब कहने में.
बुक को किताब कहने में.
साक्स को जुराब कहने में.
क्या दिक्कत है ?

डिच को खाई कहने में.
आंटी को ताई कहने में.
बार्बर को नाई कहने में.
कुक को हलवाई कहने में.
क्या दिक्कत है ?

इनकम को आय कहने में.
जस्टिस को न्याय कहने में.
एडवाइज़ को राय कहने में.
टी को चाय कहने में.
क्या दिक्कत है ?

फ़्लैग को झंडा कहने में.
स्टिक को डंडा कहने में.
कोल्ड को ठंडा कहने में.
ऐग को अंडा कहने में.
क्या दिक्कत है ?

बीटिंग को कुटाई कहने में.
वॉशिंग को धुलाई कहने में.
पेंटिंग को पुताई कहने में.
वाइफ को लुगाई कहने में.
क्या दिक्कत है ?

स्मॉल को छोटी कहने में.
फ़ैट को मोटी कहने में.
टॉप को चोटी कहने में.
ब्रेड को रोटी कहने में.
क्या दिक्कत है ?

ब्लैक को काला कहने में.
लॉक को ताला कहने में.
बाउल को प्याला कहने में.
जेवलीन को भाला कहने में.
क्या दिक्कत है ?

गेट को द्वार कहने में.
ब्लो को वार कहने में.
लव को प्यार कहने में.
क्या दिक्कत है ?

लॉस को घाटा कहने में.
मील को आटा कहने में.
फार्क को काँटा कहने में.
स्लैप को चाँटा कहने में.
क्या दिक्कत है ?

टीम को टोली कहने में.
रूम को खोली कहने में.
पैलेट को गोली कहने में.
क्या दिक्कत है ?

ब्रूम को झाडू कहने में.
हिल को पहाड़ कहने में.
रोर को दहाड़ कहने में.
क्या दिक्कत है ?

नाईट को रात कहने में.
कास्ट को जात कहने में.
टॉक को बात कहने में.
किक को लात कहने में.
क्या दिक्कत है ?

सन को संतान कहने में.
ग्रेट को महान कहने में.
मैन को इंसान कहने में.
गॉड को भगवान कहने में.
क्या दिक्कत है ?

श्री एस एस माथुर
उप महाप्रबंधक
एमएमजेडओ

अनावश्यक व्यय कष्टदायक होते हैं.

Global Monetary Policy – Learnings for India

1. Introduction

In an era of heightened global interconnectivity, the monetary policies implemented by leading economic nations have significant repercussions that transcend their national boundaries. As one of the most rapidly expanding economies and a pivotal participant in the global marketplace, India is particularly vulnerable to the cascading effects of international monetary actions. This article investigates the intricate relationship between global monetary policy and its diverse impacts on the Indian economy, highlighting both the challenges and opportunities that emerge from this complex economic interplay.

The actions of central banks in major economies such as the United States, the European Union, Japan, and China have ramifications that go beyond their internal markets; they also impact emerging economies like India. These ramifications include fluctuations in exchange rates, changes in capital flows, and effects on trade patterns and inflation levels, demonstrating the significant and varied consequences of global monetary policy. As India becomes more intertwined with the global economy, it is imperative for policymakers, businesses, and the general public to recognize and understand these influences.

2. Overview of Global Monetary Policy

Global monetary policy refers to the strategies employed by central banks worldwide to regulate their economies through the management of money supply, interest rates, and other financial tools. The primary objectives of monetary policy typically include price stability, economic growth, and financial stability.

In recent years, central banks around the world have implemented a range of unconventional monetary policies, particularly in response to the 2008 financial crisis and the COVID-19 pandemic. These policies have included quantitative easing, negative interest rates, and forward guidance. The actions of major central banks, such as the Federal Reserve, the European Central Bank, the Bank of Japan, and the People's Bank of China, have significant spillover effects on other economies, including India.

The primary functions of monetary policy are to:

Price Stability:

1. Control inflation
2. Prevent deflation

Economic Growth:

1. Stimulate economic activity
2. Manage economic cycles

Financial Stability:

1. Ensure a stable financial system
2. Prevent financial crises

Exchange Rate Management:

1. Influence currency values
2. Promote export competitiveness

The worldwide scope of these policies signifies that decisions made by key central banks, particularly the U.S. Federal Reserve, the European Central Bank, the Bank of Japan, and the People's Bank of China, have profound spillover effects on other economies. These spillovers transpire through multiple channels, including variations in exchange rates, capital movement, trade relations, and the overall state of global financial conditions.

Benchmark interest rate of major Central Banks

Year	Fed Funds Rate	European Central Bank (ECB) Refinancing Rate	BoJ Policy Rate
2008	0.25	-	0.1
2011	0.25	1	0.1
2014	0.25	0.05	0.1
2017	1.5	0	-0.1
2020	0.25	0	-0.1
2023	5.33	4	-0.1

Source: Central Banks' website

This table illustrates the trend of interest rates set by the Federal Reserve (Fed), European Central Bank (ECB), and Bank of Japan (BoJ) from 2008 to 2023. It clearly shows the dramatic drop in rates following the 2008 financial crisis, the prolonged period of near-zero rates, and the recent rise in rates, particularly for the Fed and ECB.

The U.S. Federal Reserve (Fed)- The Federal Reserve, serving as the central bank of the world's largest economy and the issuer of the primary reserve currency, significantly influences the dynamics of international markets through its policies. Following the financial crisis of 2008, the Fed maintained interest rates at near-zero levels for seven years. It initiated a normalization of its policy in 2015 but reversed this trend in 2019 due to emerging economic concerns. In March 2020, in reaction to the COVID-19 pandemic, the Fed once again reduced rates to near-zero.

The European Central Bank (ECB)- In 2014, the European Central Bank (ECB) adopted negative deposit rates to counteract deflationary pressures and encourage lending. The ECB has also executed various asset purchase programs, including the Pandemic Emergency Purchase Programme (PEPP), in response to the COVID-19 crisis. This initiative involved the purchase of €1.85 trillion in assets from March 2020 to March 2022. Additionally, the ECB has utilized Targeted Longer-Term Refinancing Operations (TLTROs) to provide banks with long-term loans aimed at stimulating lending to the real economy. The RBI has implemented TLTROs to channel liquidity towards specific sectors of the economy, particularly those facing credit constraints.

While both the RBI and the ECB have utilized TLTROs to achieve specific policy objectives, the specific design and implementation of these operations can vary based on the prevailing economic conditions and policy priorities of each central bank.

The Bank of Japan (BoJ)

Japan's monetary policy evolution stands as a unique case study in unconventional central banking, with the Bank of Japan (BoJ) implementing three major innovative measures to combat persistent deflation: yield curve control (YCC), introduced in 2016, which targets both short and long-term interest rates by keeping 10-year government bond yields near zero; an aggressive asset purchase program initiated in 2013 that has expanded to include government bonds, corporate bonds, and ETFs, resulting in a balance sheet larger than Japan's GDP by 2024; and the introduction of negative interest rates in 2016, where commercial banks are charged for excess reserves held at the central bank, all aimed at stimulating lending, investment, and consumption to break free from the deflationary spiral that has challenged the Japanese economy for decades. The Bank of Japan (BoJ) implemented a series of unconventional monetary policies in response to the COVID-19 pandemic, including yield curve control and massive asset purchases. These measures aimed to stimulate the Japanese economy and combat deflation.

The People's Bank of China (PBoC)

China's central bank, the People's Bank of China (PBOC), has demonstrated a distinct approach to monetary policy since the 2008 financial crisis, initially responding with a massive stimulus package and credit expansion to maintain growth targets, followed by a period of careful tightening to address debt concerns during 2015-2017, then shifting to targeted support measures including reserve requirement ratio (RRR) cuts and medium-term lending facility operations during 2018-2019 to combat economic slowdown and

trade tensions. The PBOC's post-pandemic response involved a more measured approach compared to Western central banks, focusing on targeted support rather than broad-based stimulus, while managing challenges in the property sector and local government debt through various monetary tools including RRR cuts, interest rate adjustments, and liquidity injections.

India's economy is significantly influenced by global liquidity trends. Increased foreign investment inflows can strengthen the rupee but may also reduce export competitiveness. Additionally, excess global liquidity can contribute to domestic inflationary pressures, making monetary policy management challenging. The risk of sudden capital flow reversals in case of rapid global liquidity tightening further complicates the scenario. Understanding these dynamics is crucial for India to navigate its economic growth and monetary policy effectively in an interconnected global economy.

Impact on Indian Economy

India, a major emerging market with a robust growth trajectory and a large, young population, is significantly influenced by global monetary policy. As a services-led economy with a significant current account deficit, India's external sector is particularly sensitive to global liquidity conditions. While its financial markets are increasingly integrated with global markets, the country still grapples with inflation and a high fiscal deficit. This complex economic context makes India more susceptible than many other economies to both positive and negative spillovers from global monetary policy decisions.

Global monetary policy particularly that of major central banks like the U.S. Federal Reserve, significantly impacts India through various channels:

India's economy is significantly influenced by global monetary policy through various channels:

- **Exchange Rate Fluctuations:** Changes in global interest rates can lead to fluctuations in exchange rates, affecting India's trade balance and competitiveness.
- **Capital Flows:** Shifts in global monetary policy can impact capital flows to and from India, influencing domestic liquidity conditions and asset prices.
- **Inflation:** Global inflationary pressures can spill over to India, affecting domestic price levels and the RBI's monetary policy stance.
- **Financial Market Volatility:** Changes in global financial conditions, often driven by monetary policy decisions, can lead to increased volatility in Indian financial markets.

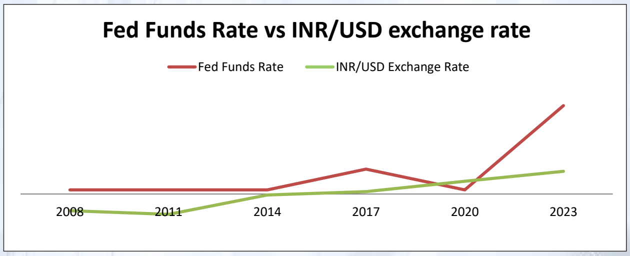

Source: world bank

The graph aims to visually demonstrate how changes in U.S. monetary policy (represented by the Fed Funds Rate) correlate with fluctuations in the Indian Rupee's value against the U.S. Dollar.

The Fed Funds Rate has a significant impact on the INR/USD exchange rate. Generally, a low Fed rate strengthens the Rupee, while a high Fed rate weakens it. However, other economic factors and global events can also influence the Rupee's value. While the 2008-2011 period saw Rupee appreciation due to low Fed rates, subsequent periods have shown more complex relationships. The 2014-2017 and 2023 periods, with rising Fed rates, led to Rupee depreciation. The 2020 period, despite low Fed rates, saw Rupee weakness due to COVID-19 related global economic uncertainties.

Comparing Policy Actions

Current policy rate of major central banks

Name of Country	Current Rate (%)	Previous Rate (%)	Date of Last change
USA	5.0	5.5	19th September 2024
Canada	3.75	4.25	23rd October 2024
Eurozone	3.40	3.65	17th October 2024
Japan	0.25	0.10	31st July 2024
China	3.10	3.35	21st October 2024
UK	5.0	5.25	1st August 2024
India	6.50	6.25	8th February 2023

The policies enacted by major central banks form a intricate network of global financial conditions that have a profound effect on emerging markets such as India. The decisions made by these institutions shape global interest rates, capital movements, currency values, and risk tolerance, all of which exert both direct and indirect influences on the Indian economy.

In the United States, inflation surged significantly, reaching a peak of 9.1% in June 2022. In response to this inflationary challenge, the Federal Reserve implemented a series of stringent monetary policy actions and opted to halt rate increases in June

2023. The Federal Reserve and the Reserve Bank of India (RBI) adopted contrasting approaches in their monetary policies to address inflationary pressures during 2022 and 2023. The Fed took a more aggressive stance, raising interest rates by a cumulative 525 basis points from March 2022 to July 2023, with the objective of slowing economic activity and reducing demand to manage inflation. In contrast, the RBI pursued a more measured approach, increasing interest rates by 250 basis points from May 2022 to February 2023, carefully balancing the need for inflation control with the goal of promoting economic growth. Additionally, the RBI implemented specific measures to absorb excess liquidity from the financial system. While the Fed's decisive actions successfully reduced inflation by late 2023, they also had wider repercussions for economic growth and the labor market. In response to these developments, the Fed executed a 50-basis-point rate cut in September 2024.

As the global economy began to show signs of recovery and inflationary pressures became increasingly evident, the European Central Bank (ECB) adjusted its monetary policy approach, gradually steering towards normalization. This transition involved a notable increase in interest rates by 425 basis points from July 2022 to July 2023, coupled with a deceleration in the pace of asset purchases. However, as the economic landscape shifted and deflationary risks surfaced, the ECB opted to reverse its previous stance. On October 17, 2024, the ECB reduced its key interest rates by 25 basis points, a strategic move aimed at further stimulating economic growth and addressing deflationary concerns within the Eurozone.

In response to escalating global inflationary pressures, the Bank of Japan (BoJ) began to modify its policy stance. In July 2024, the BoJ implemented a significant policy change by raising its short-term interest rate target from -0.1% to 0.25%, marking the first increase in over a decade. This was a response to the end of deflationary zone and to stimulate growth and inflation. Additionally, the BoJ revised its yield curve control policy to allow for greater flexibility in the movement of long-term interest rates.

Over the past few years, specifically from 2022 to 2024, the People's Bank of China (PBOC) has adopted a relatively accommodative monetary stance while refraining from aggressive easing measures. This approach has been aimed at balancing various objectives, including maintaining yuan stability, controlling inflation, and supporting economic growth, particularly as the nation faces challenges within its property sector and seeks to transition towards a consumption-driven economy. On October 22, 2024, the PBOC took action by cutting two key interest rates, reducing both the one-year and five-year Loan Prime Rates (LPRs) by 25 basis points. This decision is intended to stimulate lending and investment, especially in the real estate sector, which has been a significant impediment to economic growth.

In summary, the policies of major central banks create a complex web of global financial conditions that have significant implications for emerging markets like India. Their decisions influence global interest rates, capital flows, exchange rates, and risk appetites, all of which have direct and indirect effects on the Indian economy. Understanding these interconnections is crucial for policymakers and investors in India to navigate the challenges and opportunities presented by the global financial landscape.

Ms. Shailja Jatiani
Economist
CCRD

राजभाषा नियम 11 के अनुसार कार्यालय की सभी रबर की मुहरें हिंदी-अंग्रेजी द्विभाषिक होना अनिवार्य है.

राजभाषा हिंदी में कार्य करने का जो संकल्प आपने लिया है, उसे हिंदी में अधिकाधिक कार्य करके पूर्ण करें.

राजभाषा नियम 11 के अनुसार प्रदर्शित सभी प्रकार की सूचनाएं हिंदी-अंग्रेजी होना अनिवार्य है.

स्वच्छता ही सेवा है

स्वच्छता हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो न केवल हमारे व्यक्तिगत स्वास्थ्य बल्कि हमारे समाज और पर्यावरण के लिए भी आवश्यक है. स्वच्छता का सीधा संबंध स्वास्थ्य, समृद्धि और समग्र विकास से है. यह विचार न केवल शारीरिक बल्कि मानसिक, सामाजिक, और आध्यात्मिक शुद्धता पर भी केंद्रित है. भारतीय संस्कृति में स्वच्छता को उच्चतम स्थान दिया गया है. प्राचीन समय से ही स्वच्छता को धार्मिक और सांस्कृतिक अनुष्ठानों का अभिन्न अंग माना गया है. हमारे शास्त्रों में स्वच्छता को ईश्वर की आराधना के समकक्ष माना गया है.

स्वच्छता का महत्व

स्वच्छता का महत्व अनंत है. स्वच्छता का पालन करने से अनेक प्रकार की बीमारियों से बचा जा सकता है. गंदगी और अस्वच्छ वातावरण में पनपने वाले रोगाणु और बैक्टीरिया अनेक बीमारियों का कारण बनते हैं. भारत जैसे विशाल देश में, जहां जनसंख्या घनत्व अत्यधिक है, वहां स्वच्छता बनाए रखना और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है. उचित स्वच्छता की कमी के कारण स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न होती हैं, जिनमें डेंगू, मलेरिया, हैजा, और अन्य जलजनित रोग प्रमुख हैं.

स्वच्छता केवल हमारे शारीरिक स्वास्थ्य तक ही सीमित नहीं है, यह हमारे मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य के लिए भी महत्वपूर्ण है. एक स्वच्छ और व्यवस्थित वातावरण में रहने से मानसिक शांति और सकारात्मकता का अनुभव होता है. स्वच्छता हमारी जीवनशैली को बेहतर बनाती है और हमें अनुशासन सिखाती है. यह जिम्मेदारी का भाव विकसित करती है, क्योंकि जब हम अपने आसपास की सफाई का ध्यान रखते हैं, तो हम न केवल अपने लिए बल्कि दूसरों के लिए भी बेहतर वातावरण बनाने का प्रयास करते हैं.

स्वच्छता और सामाजिक उत्तरदायित्व

स्वच्छता व्यक्तिगत और सामुदायिक उत्तरदायित्व का एक प्रतीक है. यह सामाजिक सद्भाव और सह-अस्तित्व को बढ़ावा देती है. जब कोई व्यक्ति अपने आसपास के क्षेत्र को स्वच्छ रखने की जिम्मेदारी लेता है, तो वह न केवल अपनी भलाई के लिए बल्कि समाज के हित के लिए भी काम कर रहा होता है. यह दूसरों के लिए एक उदाहरण बनता है और लोगों को अपने दायित्वों का एहसास कराता है.

महात्मा गांधी ने कहा था, ''स्वच्छता स्वतंत्रता से भी अधिक महत्वपूर्ण है.'' उनका यह उद्धरण इस बात को स्पष्ट करता है कि स्वच्छता न केवल हमारे समाज की भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करती है, बल्कि यह नैतिक और आध्यात्मिक जागरूकता का प्रतीक भी है. स्वच्छता के प्रति जिम्मेदारी न केवल एक नागरिक कर्तव्य है, बल्कि यह एक सेवा भी है जिसे हम अपने समाज के प्रति अर्पित कर सकते हैं.

स्वच्छता अभियान: सेवा का रूप

भारत में स्वच्छता की दिशा में कई बड़े कदम उठाए गए हैं. ''स्वच्छ भारत अभियान'' प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 2014 में शुरू किया गया एक महत्वपूर्ण अभियान है, जिसका उद्देश्य भारत को स्वच्छ और स्वस्थ बनाना है. इस अभियान का उद्देश्य न केवल शहरों और गांवों की सफाई करना है, बल्कि लोगों में स्वच्छता के प्रति एक दीर्घकालिक जिम्मेदारी विकसित करना भी है. इसके अंतर्गत शौचालय निर्माण, कचरा प्रबंधन, जल स्रोतों की सफाई, और जागरूकता फैलाने के लिए कई गतिविधियाँ आयोजित की गईं. सरकार ने स्वच्छता के क्षेत्र में कई योजनाएं लागू की हैं. स्वच्छ भारत मिशन के तहत देश भर में शौचालयों का निर्माण, कचरा प्रबंधन, और जल संरक्षण के लिए कई कदम उठाए गए हैं. इसके अलावा, सरकार लोगों को जागरूक करने के लिए विभिन्न माध्यमों का उपयोग कर रही है.

इस अभियान में बड़े पैमाने पर जन भागीदारी देखी गई, जिसमें हर वर्ग के लोगों ने अपने आस-पास के क्षेत्रों को साफ रखने में मदद की. यह समाज के प्रति सेवा का एक बड़ा उदाहरण है, जहां लोग निस्वार्थ भाव से स्वच्छता के लिए काम करते हैं.

स्वच्छता में हमारी भूमिका

स्वच्छता सेवा केवल बड़े अभियानों तक सीमित नहीं है, बल्कि हम सभी की व्यक्तिगत जिम्मेदारी भी है. अगर हर नागरिक यह ठान ले कि वह अपने घर, गली, मोहल्ले और शहर को साफ रखेगा, तो यह समाज की सेवा के समान होगा.

इसके लिए निम्नलिखित कार्य किए जा सकते हैं:

1. कचरे का सही निपटान: हमें कचरे को अलग-अलग (गीला और सूखा) करके डस्टबिन में डालना चाहिए. इससे कचरा प्रबंधन आसान होता है और पुनर्चक्रण की प्रक्रिया सरल होती है.
2. प्लास्टिक का उपयोग कम करना: प्लास्टिक पर्यावरण के लिए हानिकारक है. इसे कम करने के लिए हमें कपड़े के थैले और पुन: उपयोगी सामग्रियों का इस्तेमाल करना चाहिए.
3. पानी की बचत: जल स्रोतों की स्वच्छता के साथ-साथ पानी की बर्बादी रोकने के लिए उचित प्रबंधन जरूरी है.
4. सार्वजनिक स्थानों की सफाई: केवल अपने घर ही नहीं, हमें सार्वजनिक स्थानों जैसे पार्क, सड़क, और कार्यालयों की स्वच्छता का भी ध्यान रखना चाहिए.

स्वच्छता का व्यक्तिगत और सामुदायिक प्रभाव

स्वच्छता का महत्व न केवल व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि सामुदायिक स्तर पर भी महसूस किया जा सकता है. जब कोई व्यक्ति अपने घर, मोहल्ले या शहर को स्वच्छ रखने का प्रयास करता है, तो इसका सकारात्मक प्रभाव पूरे समाज पर पड़ता है. एक स्वच्छ समाज में बीमारियों की संभावना कम होती है, जिससे चिकित्सा खर्चों में भी कमी आती है. इसके अलावा, स्वच्छ वातावरण में लोग अधिक सकारात्मक और खुश महसूस करते हैं, जिससे उनका मानसिक स्वास्थ्य भी बेहतर होता है.

स्वच्छता केवल कूड़ा-कचरा साफ करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारे जीवन के हर पहलू से जुड़ी हुई है. व्यक्तिगत स्वच्छता, जैसे नियमित स्नान, साफ कपड़े पहनना, हाथ धोना, और अपने आस-पास के वातावरण को साफ रखना, हमारे स्वास्थ्य और भलाई के लिए अत्यंत आवश्यक है. सामुदायिक स्वच्छता भी उतनी ही महत्वपूर्ण है. यह हमारे समाज की सामाजिक और सांस्कृतिक प्रगति का प्रतीक है.

पर्यावरण संरक्षण और स्वच्छता

स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण आपस में जुड़े हुए हैं. जब हम अपने आस-पास की सफाई का ध्यान रखते हैं, तो हम न केवल अपनी सेहत की सुरक्षा करते हैं, बल्कि पर्यावरण को भी संरक्षित करते हैं. प्लास्टिक कचरे का उचित निपटान, जल स्रोतों की सफाई, और हरियाली को बढ़ावा देना स्वच्छता के महत्वपूर्ण पहलू हैं. प्लास्टिक कचरे का अत्यधिक उपयोग और जल, वायु, और भूमि प्रदूषण हमारे पर्यावरण को बुरी तरह प्रभावित कर रहे हैं. स्वच्छता अभियान इन सभी समस्याओं से निपटने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है.

स्वच्छता और शिक्षा

स्वच्छता को शिक्षा के माध्यम से भी बढ़ावा दिया जा सकता है. बच्चों को प्रारंभिक अवस्था से ही स्वच्छता के महत्व के बारे में सिखाना अत्यंत आवश्यक है. जब बच्चें यह सीखते हैं कि स्वच्छता उनके जीवन और समाज के लिए कितनी महत्वपूर्ण है, तो वे इसे अपने जीवन में लागू करने का प्रयास करते हैं. स्कूलों में स्वच्छता संबंधी कार्यक्रम और गतिविधियों के माध्यम से बच्चों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया जा सकता है. यह उनके व्यक्तित्व विकास के साथ-साथ उनके भविष्य के समाज के निर्माण में भी सहायक होगा.

स्वच्छता में तकनीकी सुधार

आज के समय में तकनीक का प्रयोग हर क्षेत्र में किया जा रहा है, और स्वच्छता भी इससे अछूती नहीं है. स्मार्ट सिटी परियोजनाओं के तहत स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए आधुनिक तकनीकों का प्रयोग किया जा रहा है. कचरे के संग्रहण, निपटान, और पुनर्चक्रण के लिए स्वचालित मशीनें और स्मार्ट डस्टबिन्स का उपयोग किया जा रहा है. कचरे के प्रबंधन में सुधार से न केवल स्वच्छता बढ़ी है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी मदद मिल रही है.

स्वच्छता और स्वास्थ्य

स्वच्छता और स्वास्थ्य का गहरा संबंध है. गंदगी से उत्पन्न रोगाणु और बैक्टीरिया हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं. नियमित रूप से साफ-सफाई करने से हम खुद को और अपने परिवार को इन बीमारियों से बचा सकते हैं.

सभी कार्य धैर्य से होते हैं, जल्दबाज मनुष्य सिर के बल गिरता है - शेख सादी

व्यक्तिगत और सामूहिक प्रयास

स्वच्छता को केवल सरकारी योजनाओं और अभियानों तक सीमित नहीं रखा जा सकता. यह एक सामूहिक प्रयास है, जिसमें हर व्यक्ति की भागीदारी आवश्यक है. यदि हम सभी अपने आस-पास की सफाई का ध्यान रखेंगे और स्वच्छता के महत्व को समझेंगे, तो हम अपने समाज को स्वस्थ, समृद्ध और समरस बना सकते हैं. इसके लिए हमें अपने दैनिक जीवन में स्वच्छता की आदतों को शामिल करना होगा, जैसे कि कूड़ा-कचरा डस्टबिन में डालना, प्लास्टिक का कम से कम उपयोग करना, जल और वायु को प्रदूषित न करना, और अपने आस-पास के लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करना.

निष्कर्ष

स्वच्छता एक सेवा है जो हम समाज और पर्यावरण के प्रति कर सकते हैं. यह न केवल हमारे व्यक्तिगत स्वास्थ्य को बेहतर बनाती है, बल्कि समाज में भी समृद्धि और विकास लाती है. ''स्वच्छता ही सेवा है'' का नारा हमें यह याद दिलाता है कि स्वच्छता केवल एक सरकारी जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह हम सभी का कर्तव्य है. अगर हम अपने व्यक्तिगत और सामुदायिक जीवन में स्वच्छता को महत्व देंगे, तो हम न केवल एक स्वस्थ समाज का निर्माण करेंगे, बल्कि एक ऐसे राष्ट्र की ओर भी बढ़ेंगे, जहां समृद्धि और शांति का वास हो.

स्वच्छता केवल एक व्यक्तिगत जिम्मेदारी नहीं है, बल्कि यह सामूहिक सेवा भी है. जब हम स्वच्छता को एक सेवा के रूप में देखते हैं, तो हम समाज और पर्यावरण दोनों की भलाई के लिए काम कर रहे होते हैं. स्वच्छता न केवल बीमारियों से बचाती है, बल्कि यह हमारे समाज को सुंदर और स्वास्थ्यप्रद बनाती है. स्वच्छता को हमें अपनी जीवनशैली का अभिन्न हिस्सा बनाना होगा और इसे एक जन आंदोलन के रूप में आगे बढ़ाना होगा. जब हम सभी मिलकर स्वच्छता के प्रति जागरूक और जिम्मेदार होंगे, तभी हमारा देश सही मायनों में स्वच्छ और स्वस्थ हो पाएगा.

अवधेश शर्मा
प्रबंधक (विधि)
आंचलिक कार्यालय,दिल्ली

प्रस्थान की ओर

समय प्रतिघाती होता है.
कई बार मनुष्यों से अधिक ...
मैं मनुष्यों के लिए कोई सीमा नहीं रखता.
न उम्मीद! मेरी तमाम फ़रियादें मुझसे हैं.
मेरी तमाम परिवेदनाएँ केवल मुझसे हैं.

मेरा क्षोभ मुझसे है.
वहाँ संवाद किया ही क्यों जाए जहाँ राह-ए-बेहतरी है ही नहीं.
मेरा अभियोग मुझ पर है,
क्यों क्रोध वहाँ जाया हो, जहाँ आवश्यकता ही नहीं.
क्यों मैं अपना आवेग वहाँ नष्ट करूँ जहाँ वह केवल अपशिष्ट बन जाए.

मैं कष्ट में हूँ स्वयं के प्रति.
अपनी उदारता के प्रति.
अपनी स्मृति के प्रति.
वह जो मुझे कब का विस्मृत कर देना था.
वह जो कभी जिह्वा पर भी नहीं होना था,
दृष्टि और मस्तिष्क के गह्वरों में रहा.
विस्मृति वहाँ क्यों नहीं पहुँच पाई?
यह निस्संदेह मेरी कमी है.
यह मेरे औदार्य की कृपणता है.
मैं लानतें स्वयं को भेजता हूँ.

श्री अमित दहलान
मुख्य प्रबंधक
सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग
केन्द्रीय कार्यालय

महिला नेतृत्व

महिला नेतृत्व एक ऐसा विषय है, जो आज के समय में बहुत ही महत्वपूर्ण है. यह न केवल महिलाओं के लिए सशक्तिकरण का प्रतीक है, बल्कि समाज में एक नई दिशा देने का भी काम करता है. ऐतिहासिक रूप से देखा जाए तो महिलाओं को सदैव समाज के द्वितीय स्तर पर रखा गया है. परंतु समय के साथ-साथ महिलाओं ने अपनी काबिलियत और नेतृत्व की क्षमता से यह साबित कर दिया है कि वे भी समाज को सही दिशा देने में सक्षम है.

महिला नेतृत्व की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि यह समझ में विविधता और समावेशन को बढ़ावा देता है. जब महिलाएं नेतृत्व की भूमिका में होती है, तो वह न केवल महिलाओं के मुद्दों को समझती है, बल्कि समग्र विकास की दिशा में कार्य करती है महिला नेता संवेदनशीलता और सहानुभूति के साथ समाज के विभिन्न मुद्दों को समझती हैं और उनके समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है.

राजनीति में महिलाओं की भागीदारी ने लोकतांत्रिक प्रक्रिया को और अधिक समृद्ध बनाया है. इंदिरा गांधी से लेकर वर्तमान में कई महिला मुख्यमंत्री और सांसद हैं, जिन्होंने समाज और राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है. इसके अलावा सामाजिक क्षेत्र में भी महिलाएं नेतृत्व कर रही है. कई गैर सरकारी संगठन और सामाजिक संस्थाओं में महिलाओं का नेतृत्व यह दर्शाता है कि समाज की समस्याओं का समाधान खोजने में अग्रणी भूमिका निभा रही है. देश को आजाद करने में भी रानी लक्ष्मीबाई, ज्योतिबा फुले ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं.

महिलाएं आज आर्थिक क्षेत्र में भी अपनी छाप छोड़ रही है. कई कंपनियों और स्टार्टअप्स की कमान महिलाओं के हाथों में है. भारत में विभिन्न कंपनियों के मुख्य कार्यकारी अधिकारी महिलाएं हैं जिनमें से कुछ हैं; लीना नायर, रोशनी नडार, किरण मजूमदार शॉ, फाल्गुनी नायर, जयश्री उल्लास, मेघाना पंडित आदि साथ ही सबसे महत्वपूर्ण वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण आदि. इनके नेतृत्व में न केवल संगठन विकास के लिए सहायक है, बल्कि वह अपना नेतृत्व गुणों से समाज में प्रेरणा का स्रोत भी बनती हैं. महिला उद्यमी अपनी मेहनत, काबिलियत और दृष्टिकोण से यह सिद्ध करती रही है कि वे भी किसी से कम नहीं हैं.

महिला नेतृत्व का एक महत्वपूर्ण पहलू है उनकी संचार क्षमता. वे संवाद और भाषा के माध्यम से लोगों से जुड़ने में सक्षम होती हैं. हिंदी भाषा में महिला नेताओं का योगदान विशेष रूप से सराहनीय है. वह अपनी मातृभाषा के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों तक अपनी बात पहुंचाने में सक्षम होती हैं. इससे न केवल महिलाओं को प्रेरणा मिलती है, बल्कि यह समाज में भाषा और संस्कृति के प्रसार का भी माध्यम बनता है. महिलाएं ऊर्जा से लबरेज, दूरदर्शिता, जीवंत उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ सभी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हैं. भारत के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता श्री रविन्द्र नाथ टैगोर के शब्दों में ''हमारे लिए महिलाएं न केवल घर की रोशनी है बल्कि इस रोशनी की लौ भी है'' अनादि काल से ही महिलाएं मानवता की प्रेरणा की स्रोत रही हैं.

महिला नेतृत्व को आज भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है. पारिवारिक जिम्मेदारियां, समाज की रूढ़िवादी सोच और कार्य स्थल पर भेदभाव जैसी समस्याएं उनके नेतृत्व के मार्ग में बाधा बनती है.फिर भी महिलाएं अपने आत्मविश्वास और साहस के बल पर इन चुनौतियों का सामना कर रही हैं. महिलाओं में जन्मजात नेतृत्व गुण समाज के लिए संपत्ति है. प्रसिद्ध अमेरिकी धार्मिक नेता ब्रिघम यंग ने ठीक ही कहा है कि ''जब आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं तो आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं, जब आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप एक पीढ़ी को शिक्षित करते हैं'' इसलिए आज के समय में महिलाओं को शिक्षित करना एक परिवार के लिए ,एक समाज के लिए और एक राष्ट्र के लिए अत्यंत आवश्यक है.

महिलाओं ने समस्याओं का सामना करते हुए भी समाज और देश के उत्थान में कोई कसर नहीं छोड़ी है.

महिलाएं परिवार बनती है, परिवार घर बनाता है

घर समाज बनता है और समाज ही देश बनता है

महिला नेतृत्व समाज के विकास का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है. यह न केवल महिलाओं के सशक्तिकरण का प्रतीक है, बल्कि समाज में नई ऊर्जा दृष्टिकोण को लाने के माध्यम है. आज जब हम महिला नेताओं को विभिन्न क्षेत्रों में सफलता के शिखर पर देखते हैं. यह स्पष्ट है कि महिला नेतृत्व समाज को आगे ले जाने में सक्षम है. हमें महिलाओं के नेतृत्व को प्रोत्साहित करना चाहिए और उनके योगदान को मान्यता देनी चाहिए ताकि हमारा समाज और राष्ट्र सशक्त और प्रगतिशील बन सके.

श्री सोनवीर सिंह
प्रबंधक
सिविल लाइंस शाखा, आगरा

सत्यनिष्ठा की संस्कृति से राष्ट्र की समृद्धि

सत्यनिष्ठा की संस्कृति हमारे व्यक्तिगत जीवन में विकास के साथ ही देश की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है. सत्यनिष्ठा का अर्थ है, कि हम विधि एवं नैतिक रूप से स्थापित मापदंडों अथवा मूल्यों के अनुरूप अपने कर्तव्यों का शुद्ध अत:करण से निर्वहन करें साथ ही चरित्र की पवित्रता एवं लक्ष्य के प्रति प्रतिबद्धता को बनाये रखते हुये कार्य के प्रति पूर्ण रूपेण समर्पित रहें. हमारा - आचरण छल, पाखंड अथवा धोखे से परे हो तथा हम ईमानदारी से अपने कार्य को संपादित करें. ईमानदारी, सच्चाई, स्वतंत्रता, प्रेम, आदि अमूर्त चीजें होने के बावजूद सत्यनिष्ठा के व्यवहार के लिये आवश्यक घटक हैं. इनसे स्वस्थ एवं कार्य के अनुकूल वातावरण के निर्माण मे मदद मिलती है. सत्यनिष्ठा की संस्कृति आपसी विश्वास और एक दूसरे के प्रति सम्मान को बढ़ावा देती है साथ ही एक पारदर्शिता पूर्ण वातवरण निर्मित करने में सहायक सिद्ध होती है जो समान उद्देश्य के लिये काम करने वाले विभिन्न लोगों के बीच मजबूत संबंधों की आधारशिला बन जाती है. इस प्रकार के वातावरण में काम करने से जो विश्वास पैदा होता है वह पूरे दल (टीम) को एक जुट रखता है, जिससे टीम के सदस्य प्रभावी ढंग से एक दूसरे का सहयोग कर पाते हैं और समान लक्ष्य प्राप्त कर पाते हैं. सत्यनिष्ठा की संस्कृति से एक गतिशील और समावेशी वातावरण का निर्माण होता है, जिससे बेहतर समस्या-समाधान और रचनात्मकता मे मदद मिलती है. सत्यनिष्ठा की संस्कृति एक दूसरे पर दोषारोपण के खेल को हतोत्साहित करती है तथा गलतियों से सीखने और निरंतर सुधार के लिए प्रयास करने पर ध्यान केंद्रित करती है, एक ऐसी कार्य संस्कृति का विकास होता है जहाँ हर कोई कार्यनिष्पादन और ईमानदारी के उच्च मानकों के लिए प्रतिबद्ध होता है.

आज सार्वजनिक जीवन में भ्रष्टाचार का चलन बढा है भ्रष्टाचार मे लिप्त लोग चाहे नेता हो या अधिकारी निजी हित को राष्ट्र हित से उपर रखते हुये काम करते हैं जिसके कारण राष्ट्र की प्रगति बुरी तरह प्रभावित होती है, समाज में असमानता बढती है एवं विकास की गति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है. राष्ट्र की उन्नति के लिये आवश्यक है कि सत्यनिष्ठा को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान किया जाये. इसके लिये शीर्ष पर पदास्थापित लोगों से अपेक्षा की जाती है कि वे उदाहरण प्रस्तुत कर अपने सभी क्रियाकलापों में ईमानदारीपूर्ण व्यवहार व पारदर्शिता का प्रदर्शन करें. लोगों के बीच संवाद को प्रोत्साहित करें, जमीनी स्तर की समस्यायें सुने एवं समाधान विकसित करने के सार्थक उपायों पर चर्चा करें. काम के स्थान को सुरक्षित स्थान बनाएं, सुनिश्चित करें कि काम में लगे लोग नकारात्मक परिणामों के डर के बिना सत्य के साथ सुरक्षित महसूस करें.

सत्यनिष्ठा व्यक्ति के आत्मसम्मान एवं आत्मविश्वास में वृद्धि करती है एवं उसे सही मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान करती है, समाज व राष्ट्र के लिये जिम्मेदार नागरिक तैयार होते हैं. भ्रष्टाचार के विरूद्ध लड़ने के लिये लोगों को सही और गलत के बीच निर्णय लेने की क्षमता विकसित कर मजबूत इच्छाशक्ति के साथ आगे बढना चाहिये, निजी एवं सार्वजनिक जीवन में नैतिकता अपनाकर भ्रष्टाचार के दीमक का पूर्ण रूप से इलाज किया जाना आवश्यक है. हमें ज्ञात होना चाहिये कि राष्ट्र की स्वच्छ छवि आज के वैश्वीकरण के युग में देश की अर्थ व्यवस्था एवं सर्वांगीण विकास के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण है इससे निवेश को बढावा मिलता है, रोजागार के सुअवसर उपलब्ध होते हैं, कर संग्रह में वृद्धि होती है तथा देश के विकास को गति मिलती है. राष्ट्र की छवि के लिये आवश्यक है कि हमारे देश में भ्रष्टाचारमुक्त व्यवस्था कायम हो तभी विकसित राष्ट्र का सपना साकार हो सकेगा.

अरविन्द कुमार त्रिपाठी
शाखा प्रमुख
कृष्णा नगर, गोरखपुर

अंडमान निकोबार का सफरनामा

दिनांक 14.06.2024 से 18.06.2024 तक की अंडमान यात्रा मेरे लिए एक अविस्मरणीय अनुभव है, जहाँ प्रकृति की गोद में बसे ये द्वीप अपनी अद्भुत सुंदरता और शांति के लिए जाने जाते हैं. अंडमान की यात्रा एक बेहद खास और यादगार अनुभव होता है. यह द्वीपसमूह अपनी प्राकृतिक सुंदरता, साफ-सुथरे समुद्र तटों और ऐतिहासिक धरोहरों के लिए प्रसिद्ध है. यह शहर आपको प्रकृति से जुड़े हुए अनुभव प्रदान करता है जब मैंने अंडमान की यात्रा की, तो वहाँ की खूबसूरती और शांति ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया.

यात्रा की शुरुआत पोर्ट ब्लेयर से हुई, जो अंडमान का मुख्य शहर है. यहाँ पहुँचते ही सेलुलर जेल देखने का अवसर मिला, जिसे काला पानी के नाम से भी जाना जाता है. इस जेल में स्वतंत्रता सेनानियों को ब्रिटिश शासन के दौरान कैद किया गया था. इस ऐतिहासिक स्थल को देखकर मन में एक अलग ही भाव उत्पन्न हुआ, जैसे मैं इतिहास के उस कठिन दौर से रूबरू हो रहा हूँ. यहाँ होने वाले लाइट और साउंड शो ने जेल के इतिहास को जीवंत कर दिया, जिससे मुझे भारत की स्वतंत्रता के संघर्ष की गहरी जानकारी मिली.

पोर्ट ब्लेयर से आगे बढ़ते हुए, मैंने हैवलॉक द्वीप की यात्रा की. यह द्वीप अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए विश्व प्रसिद्ध है. यहाँ का राधानगर बीच बेहद खूबसूरत है और इसे एशिया के सबसे अच्छे समुद्र तटों में गिना जाता है. सफेद रेत और नीला पानी देखकर मन असीम शांति से भर गया. यहाँ पर स्नॉर्कलिंग और स्कूबा डाइविंग का अनुभव भी अद्भुत था. समुद्र के नीचे की दुनिया, रंग-बिरंगे मछलियों और कोरल रीफ्स को करीब से देखना एक अद्वितीय अनुभव था.

हैवलॉक के अलावा नील द्वीप भी देखने लायक है. यह द्वीप हैवलॉक की तुलना में छोटा और अधिक शांत है. यहाँ के लक्ष्मणपुर और भरतपुर समुद्र तटों पर कुछ समय बिताया, जहाँ का वातावरण बहुत ही शांत और सुकूनभरा था. नील द्वीप की प्राकृतिक सुंदरता और स्थानीय जीवन शैली ने मुझे प्रकृति के और भी करीब ला दिया.

अंडमान की यात्रा के दौरान जॉली बॉय द्वीप पर भी जाना हुआ, जो स्कूबा डाइविंग और स्नॉर्कलिंग के लिए एक बेहतरीन जगह है. यहाँ का कांच की तली वाली नाव का अनुभव बहुत रोमांचक था, जिससे समुद्र के नीचे की दुनिया को बिना पानी में उतरे देखा जा सकता है.

इसके अलावा, अंडमान की जनजातीय संस्कृति और वहाँ के लोगों के जीवन को समझना भी एक अनूठा अनुभव था. यहाँ की कुछ जनजातियाँ आज भी अपनी प्राचीन परंपराओं को बनाए हुए हैं. हालांकि,

इन जनजातियों से सीधा संपर्क संभव नहीं है, लेकिन उनके बारे में जानना एक अलग ही रोमांच प्रदान करता है.

अंडमान की यात्रा न सिर्फ प्राकृतिक सुंदरता का अनुभव कराती है, बल्कि इतिहास, रोमांच और शांति का एक अद्वितीय मिश्रण भी प्रस्तुत करती है. यहाँ की ताजगी भरी हवा, समुद्र की लहरों की आवाज़ और अद्वितीय वनस्पति जीवन ने मेरे मन में एक स्थायी छाप छोड़ी. यह यात्रा मेरे जीवन की सबसे यादगार यात्राओं में से एक रही.

राजेश कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता उत्तर

Central Bank of India

गुजरात प्रदेश के प्रमुख दर्शनीय स्थल

गुजरात भारत के पश्चिम भाग में स्थित एक राज्य है. गुजरात अपनी समृद्ध संस्कृति, ऐतिहासिक महत्व, हस्तशिल्प और पर्यटन आकर्षणों के लिए जाना जाता है. यहाँ के लोगों की भाषा गुजराती है. यहाँ के लोगों का विशेष ध्यान धर्म, साहित्य, शिल्पकला और खानपान पर होता है. यहाँ के हस्तशिल्प न केवल भारत में बल्कि पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है. इस हस्तशिल्प में आभूषण, कढाई के काम, चमड़े का काम, धातु का काम, दर्पण का काम इत्यादि शामिल है.

गुजरात के प्रमुख पर्यटन स्थल :

गुजरात में पोरबंदर, गांधीनगर, सोमनाथ मंदिर, कच्छ का रण महोत्सव, द्वारका मंदिर, बडोदरा और अक्षरधाम मंदिर आदि पर्यटन स्थल हैं. यहाँ के पर्यटन स्थलों के कारण इसे ''द लैंड ऑफ लीजेंडस'' भी कहते हैं. गुजरात में कई वन्य जीव अभयारण्य भी हैं.

1. **कच्छ का रण :** कच्छ एक ऐतिहासिक शहर है. यहाँ पर आप सफेद रेगिस्तान देख सकते हैं. यह दुनिया का सबसे अलग रेगिस्तान है. यह सफेद रेगिस्तान रेत का नहीं बल्कि नमक का है. इसे ग्रेट रण ऑफ कच्छ भी कहते हैं. इस रण उत्सव में टेंट सिटी, खेल का मैदान, सांस्कृतिक उत्सव आदि का समावेश है. रण उत्सव में पारंपारिक शिल्प स्टॉल, फूड स्टॉल, गोल्फ कार्ट, एटीवी सवारी, पेंट बॉल, उँट की सफारी, पैरामोटरिंग और घोडे तथा उँट की सवारी की जाती है. यह रण उत्सव हर साल नवम्बर से फरवरी तक आयोजित की जाती है. पुरी टेंट सिटी बसाई जाती है. कच्छ का रण महोत्सव एक उत्सव की तरह है. यह त्यौहार गुजरात में लोक संस्कृति की झलक पेश करता है. यह रण उत्सव देश भर के उत्कृष्ट लोक कलाकारों को आकर्षित करता है. वे अपने शानदार प्रदर्शन से मेले में आने वाले लोगों का मन मोह लेते हैं. सूर्यास्त के समय नमक के सफेद रण में उँट सफारी करना बड़ा ही मनमोहक लगता है. यह रण महोत्सव जाने हेतु सबसे नजदीकी स्टेशन भुज है.

2. **सोमनाथ मंदिर :** यह मंदिर 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है. इसे 12 ज्योतिर्लिंगों में से पहला ज्योतिर्लिंग माना जाता है. यह एक प्राचिन एवं ऐतिहासिक शिव मंदिर है. लोक कथाओं के अनुसार यहीं श्रीकृष्ण जी ने देहत्याग किया था. इसी कारण इस मंदिर का महत्व भी बढ गया. सोमनाथ मंदिर विश्व प्रसिद्ध धार्मिक व पर्यटन स्थल है. मंदिर के प्रांगण में रात साढे सात से साढे आठ बजे तक एक घंटे का साउंड तथा लाइट शो चलता है, जिसमें सोमनाथ मंदिर के इतिहास का बड़ा ही सुंदर सचित्र वर्णन किया जाता है. इस मंदिर के पास तीन नदियों यानि हिरण, कपिला, सरस्वती का महासंगम होता है. इस त्रिवेणी स्नान का विशेष महत्व है. सोमनाथ महादेव के दर्शन से साधक के जीवन के समस्त कष्ट दूर हो जाते हैं.

3. **द्वारका धाम :** यह धाम चार धामों में से एक धाम है. यहाँ श्रीकृष्ण का एक प्राचिन मंदिर है और समुद्र में डुबी हुई द्वारिका नगरी. हिन्दु मान्यता के अनुसार इस शहर की स्थापना मूल रूप से भगवान कृष्ण ने की थी और उनकी मृत्यु के बाद यह पानी में डुब गया. यह 72 स्तंभों पर बनी 5 मंजिला मंदिर है. द्वारका नगरी 2 है - 1. गोमती द्वारिका 2. बेट द्वारिका . गोमती द्वारिका धाम है तथा बेट द्वारिका पुरी है. बेट द्वारिका जाने के लिए समुद्र मार्ग से जाना पड़ता है. द्वारिका धाम का यह मंदिर 2 हजार साल से भी अधिक पुराना है.

4. **गिर वन्यजीव अभयारण्य :** इस अन्य अभयारण्य में अधिसंख्य मात्रा में पुष्प और जीव-जंतुओं की प्रजातियाँ मिलती है. दक्षिण

अफ्रीका के अलावा विश्व का यही अभयारण्य है जहाँ शेरों को अपने प्राकृतिक आवास में रहते हुए देखा जा सकता है. गिर के जंगल को 1969 में वन्य जीव अभयारण्य बनाया गया है. सूखे पताड़ वाले वृक्षों, कांटेदार झाडियों के अलावा हरे-भरे पेड़ों से समृद्ध गिर का जंगल नदी के किनारे बसा हुआ है. इस अभयारण्य में शेर, तेंदुआ, साभंर तथा जंगली सूअर पाये जाते हैं. साथ ही यहाँ भालू और बड़ी पूँछ वाले लंगूर भी भारी मात्रा में पाए जाते हैं. जंगल के शेर के लिए यह अभयारण्य भारत के महत्वपूर्ण वन्य अभयारण्य में से एक है. सैलानियों के लिए यह अभयारण्य मध्य अक्तूबर महीने से लेकर मध्य जून तक खोला जाता है. मानसून के मौसम में इसे बंद कर दिया जाता है.

5. **सापुतारा** : सापुतारा गुजरात की एक सुंदर हिल स्टेशन है. यह गुजरात के डांग जिले में स्थित है. सापुतारा अपने हरे-भरे जंगलों, पहाड़ों और झरनों के लिए जानी जाती है. सापुतारा में हटगढ किला है . किले के ऊपर से पर्यटक पूरी घाटी का तथा सुरगाना गांव के शानदार नजारों का मजा ले सकते है. सापुतारा में हरी-भरी हरियाली से भरी मानव निर्मित झील अपनी बोटिंग एक्टिविटी के लिए प्रसिद्ध है. यह जगह बच्चों के लिए पार्क और खेल के मैदान से घिरा हुआ है. सातपुरा में सप्तश्रुंगी देवी का मंदिर भी देखने हेतु है. यह मंदिर सात चोटियों से घिरा हुआ है इसलिए इसका नाम सप्तश्रुंगी माता के नाम पर रखा गया है. सातपुरा में आर्टिस्ट विलेज भी है. जो सबसे सुंदर है. यह जगह अपने शानदार सांस्कृतिक और पारंपारिक मूल्यों को दर्शाती है. इस गांव के मूल निवासी द्वारा तैयार की गई कलाकृतियाँ जिसमें वार्ली पेंटिंग, मिट्टी के बर्तन, बांस शिल्प शामिल है.

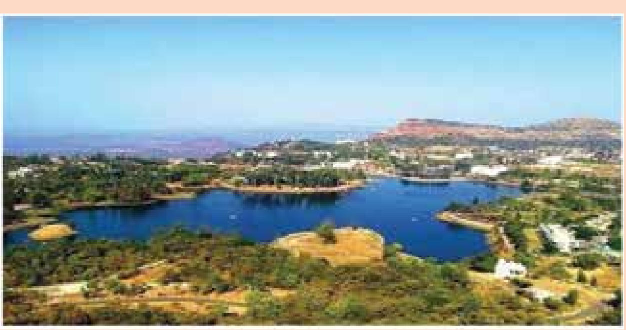

6. **स्टेच्यू ऑफ यूनिटी** : स्टेच्यु ऑफ यूनिटी ने देश भर के लाखों सैलानियों को अपनी ओर आकर्षित किया है. इसे एकता की प्रतिमा भी कहा जाता है. यह सरदार सरोवर बांध के पास बना है. जहाँ विश्व का सबसे उँचा स्टेच्यू बना है. यह स्टेच्यू सरदार वल्लभ भाई पटेल के सम्मान में बनाया गया है. आसपास के विंध्य और सतपुड़ा पर्वत श्रृंखलाओं के सामने विशाल रूप में खड़ी विशालकाय प्रतिमा लगभग क्षितिज को भेदती नजर आती है. यहाँ एक दर्शनीय गैलरी भी है. यहाँ लेजर शो भी दिखाया जाता है. जिससे हमें पटेल जी के जीवन के बारे में पता चलता है. इस लेजर शो से हमें सरदार पटेल के प्रति राष्ट्र के योगदान को भी रेखांकित करता है.

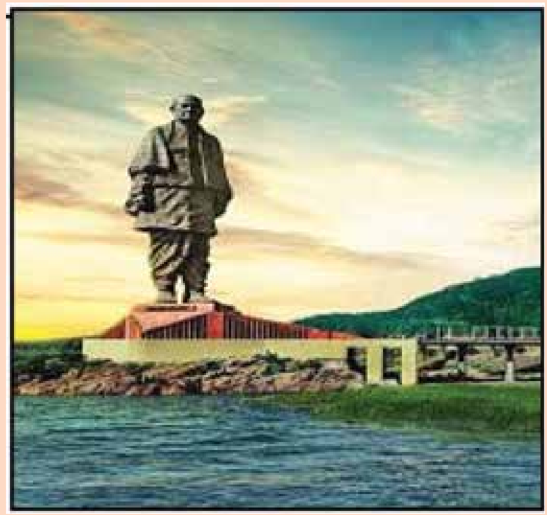

7. **पावागढ** : यह एक हिल स्टेशन है जो बड़ौदा के पास स्थित है.यहाँ पर माँ कालिका का प्राचीन मंदिर है. काली माता का यह प्रसिद्ध मंदिर माँ के शक्तिपीठों में से एक है. यहाँ की एक खास बात यह भी है कि यहाँ दक्षिण मुखी काली माँ की मूर्ति है, जिसकी तांत्रिक पूजा की जाती है. ऐसा माना जाता है कि माताजी के दक्षिण पैर का अंगुढा गिरने के कारण इस जगह का नाम पावागढ हुआ. इस मंदिर में देवी की तीन प्रतिमाएँ है. बीच में कालिका माता , दाई ओर काली तथा बाई ओर बहुचरा माता है. चित्रा अष्टमी को मंदिर परिसर में मेला लगता है जिसमें हजारों श्रद्धालु शामिल होते हैं.

8. **जामनगर** : यह गुजरात राज्य में स्थित एक ऐतिहासिक शहर है.

यह जिले का मुख्यालय और एक महत्वपूर्ण औद्योगिक केन्द्र है. जामनगर को वास्तुकला का स्थल भी माना जाता है. जामनगर में बहुत सुंदर किलों, महलों तथा धार्मिक स्मारकों की भरमार है. जैसे लखोटा किला, दरबार गढ, शिवराजपुर बीच, धूपघडी, कोठा गढ, विलिंगटन क्रीसेंट, खिजादिया बर्ड सैंक्चुरी,नरारा मरीन नेशनल पार्क, जामसाहाब महल, बोहरा हजीरा, रनमल झील, लखोटा संग्रहालय, बाल हनुमान मंदिर, आदिनाथ मंदिर, शांतिनाथ मंदिर शामिल है. जामनगर सीमेंट, मिट्टी के बर्तन, वस्त्र और नमक का प्रमुख औद्योगिक उत्पाद करता है. यह शहर बांधनी कला, जरी की कढाई और धातुकर्म के लिए प्रसिद्ध है. जामनगर रिफाइनरी भारत और विश्व की सबसे बडी तेल रिफाइनरी है. जामनगर का नाम पीतल की वस्तुओं को बनाने में विश्व प्रसिद्ध है.

9. **धोलावीरा और लोथल** : धोलावीरा और लोथल सिंधु घाटी सभ्यता के दो महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थल है. धोलावीरा अपने आकार और अपनी अभिनव जल संचयन प्रणाली के लिए जाना जाता है . इसका निर्माण ईटों से किया गया है. लोथल को विश्व के सबसे पुराने ज्ञान गोदी-स्थल का खिताब प्राप्त है. यहाँ आपको प्राचीन भारत के अवशेष देखने मिल जायेंगे. यह गुजरात राज्य में कच्छ जिले के मचाऊ तालुका में मानसर एवं मानहर नदियों के मध्य स्थित सिंधु सभ्यता का एक प्राचीन तथा विशाल नगर धोलावीरा लगभग 5 हजार वर्ष पुराना है.

10. **जूनागढ** : जूनागढ में आठ सौ से ज्यादा हिन्दू और जैन मंदिर है. गिरनागर पहाडी पर बसे इस शहर का नाम जूनागढ के किले के नाम पर है. जूनागढ की वास्तुकला बहुत पुरानी है. जो देखने लायक है, यहाँ गुफाएँ, मंदिर तथा खूबसूरत किले हैं. जूनागढ गिरनार पहाडियों की तलहटी में स्थित गुजरात राज्य का सातवाँ सबसे बड़ा शहर है. जूनागढ अपनी नवाबी से प्रकृति की छंटा तक के लिए जाना जाता है. जूनागढ में घूमने लायक जगह है गिर राष्ट्रीय उद्यान, ऊपरकोट किला, महाबत मकवरा, गिरनार पर्वत, सक्करबाग प्राणि उद्यान.

इन जगहों के अलावा गुजरात में और भी स्थान है जहाँ आप घूम सकते हो. हर किसी को एक बार जरूर घूमना चाहिए.

श्री संतोष मिश्रा
संकाय सदस्य (मुख्य प्रबंधक)
सर एसपीबीटी महाविद्यालय

भारतीय संविधान के भाग 5 (120), भाग 6 (210) और भाग 17 (343 से 351) में संघ की राजभाषा संबंधी सांविधानिक उपबंध किए गए हैं.

राजभाषा नियम 1976 के अनुसार सभी कर्मचारियों को हिन्दी में कार्यसाधक ज्ञान होना अनिवार्य है.

राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं सभी सदस्यों का दायित्व है कि वे स्वयं हिन्दी में कार्य करें जिससे सभी सदस्य हिन्दी में कार्य करने हेतु प्ररित हों.

वर्तमान परिदृश्य में बैंकिंग और भविष्य की संभावनाएँ

बैंकिंग प्रणाली ने मानव सभ्यता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन समय के साथ, यह प्रणाली कई परिवर्तन और विकासों से गुजरी है, जो न केवल आर्थिक विकास में योगदान देती है, बल्कि समाज के विभिन्न वर्गों को वित्तीय सेवाएँ प्रदान करने में भी सहायता करती है. वर्तमान में, बैंकिंग क्षेत्र विभिन्न तकनीकी नवाचारों और वैश्विक आर्थिक परिवर्तनों के कारण तेजी से बदल रहा है. इस लेख में, हम वर्तमान बैंकिंग परिदृश्य का विश्लेषण करेंगे और भविष्य में बैंकिंग के संभावित विकास पर चर्चा करेंगे.

वर्तमान बैंकिंग परिदृश्य

डिजिटल बैंकिंग का उदय

आज की डिजिटल दुनिया में, बैंकिंग सेवाएँ भी डिजिटल प्लेटफार्मों पर स्थानांतरित हो चुकी है. मोबाइल बैंकिंग, इंटरनेट बैंकिंग, और अन्य डिजिटल साधनों ने ग्राहकों को सुविधाजनक तरीके से बैंकिंग सेवाओं का लाभ उठाने का अवसर दिया है. ग्राहक अब अपने मोबाइल फोन का उपयोग करके कहीं भी और कभी भी लेन-देन कर सकते हैं, बिल चुका सकते हैं, और अपने खातों का प्रबंधन कर सकते हैं.

वित्तीय समावेशन

भारत सरकार ने वित्तीय समावेशन की दिशा में कई महत्वपूर्ण पहल की है. जनधन योजना, मुद्रा योजना, और अन्य योजनाओं के माध्यम से, गरीब और ग्रामीण वर्ग के लोगों को बैंकिंग सेवाओं से जोड़ा गया है. यह न केवल व्यक्तियों की आर्थिक स्थिति को सुधारता है, बल्कि राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को भी मजबूत बनाता है.

ग्राहकों की बदलती प्राथमिकताएँ

वर्तमान में, ग्राहक बैंकिंग सेवाओं के प्रति अधिक जागरूक और साक्षर हो गए हैं. वे अब विभिन्न बैंकों की सेवाओं, ब्याज दरों, और सुविधाओं की तुलना करते हैं. ग्राहक अनुभव को प्राथमिकता देने वाले बैंक अब अधिक प्रतिस्पर्धी हो रहे हैं. डिजिटल सेवाएँ, त्वरित लेन-देन, और उत्कृष्ट ग्राहक सेवा ग्राहकों के लिए महत्वपूर्ण बन गई हैं.

साइबर सुरक्षा

जैसे-जैसे बैंकिंग डिजिटल होती जा रही है, साइबर सुरक्षा की चुनौतियाँ भी बढ़ रही हैं. बैंक और वित्तीय संस्थान लगातार अपने सिस्टम की सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए नवीनतम तकनीकों का उपयोग कर रहे हैं. ग्राहकों की व्यक्तिगत जानकारी और धन की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बैंकों को उच्चतम स्तर की साइबर सुरक्षा उपायों को अपनाने की आवश्यकता है.

नियामक ढाँचा

भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने बैंकिंग क्षेत्र में स्थिरता और विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए कई नीतियाँ लागू की हैं. आरबीआई ने बैंकों के लिए जोखिम प्रबंधन, पूंजी आवश्यकता, और अन्य महत्वपूर्ण पहलुओं पर दिशानिर्देश निर्धारित किए हैं. ये उपाय बैंकिंग प्रणाली की स्थिरता को बनाए रखने में मदद करते हैं.

बैंकिंग का भविष्य

तकनीकी नवाचार

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग

भविष्य में, बैंकिंग क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और मशीन लर्निंग का उपयोग तेजी से बढ़ेगा. ये तकनीकें ग्राहकों की प्राथमिकताओं और व्यवहार का विश्लेषण करके उन्हें व्यक्तिगत सेवाएँ प्रदान करने में मदद करेंगी. एआई के माध्यम से, बैंक ग्राहक सेवा में सुधार, जोखिम मूल्यांकन, और धोखाधड़ी की पहचान को अधिक प्रभावी बना सकेंगे.

ब्लॉकचेन तकनीक

ब्लॉकचेन तकनीक का उपयोग बैंकिंग में क्रांति ला सकता है. यह तकनीक सुरक्षित और पारदर्शी लेन-देन सुनिश्चित करती है. ब्लॉकचेन के माध्यम से, बैंकों को लेन-देन की प्रक्रिया को तेज और कम लागत में करने की सुविधा मिलेगी. इसके अलावा, यह तकनीक धोखाधड़ी के मामलों को कम करने में भी सहायक होगी.

नियो-बैंकिंग का उदय

नियो-बैंकिंग एक नई अवधारणा है जिसमें पूरी तरह से डिजिटल बैंक होते हैं. ये बैंक बिना किसी भौतिक शाखा के काम करते हैं और ग्राहकों को विभिन्न वित्तीय सेवाएँ प्रदान करते हैं. नियो-बैंकों की सेवाएँ लचीली, किफायती, और ग्राहक-केंद्रित होती हैं, जिससे वे पारंपरिक बैंकों की तुलना में अधिक लोकप्रिय हो रहे हैं.

ग्राहक अनुभव में सुधार

भविष्य की बैंकिंग में ग्राहक अनुभव को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाएगी. बैंकों को अपने ग्राहकों की आवश्यकताओं और इच्छाओं को समझना होगा. पर्सनलाइजेशन, तुरंत प्रतिक्रिया, और सहज सेवाएँ ग्राहकों के अनुभव को बेहतर बनाने में सहायक होंगी. इसके लिए बैंकों को ग्राहक डेटा का सही तरीके से उपयोग करना होगा.

पर्यावरणीय पहल

आने वाले समय में, बैंकिंग क्षेत्र में पर्यावरणीय पहल भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएँगी. कई बैंक अब स्थिरता पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं और पर्यावरण-संवेदनशील परियोजनाओं में निवेश कर रहे हैं. यह न केवल सामाजिक जिम्मेदारी का हिस्सा है, बल्कि यह एक आकर्षक व्यवसाय मॉडल भी बन सकता है.

वैश्विक बैंकिंग

वैश्वीकरण के दौर में, बैंकिंग क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय सहयोग और प्रतिस्पर्धा बढ़ रही है. भारतीय बैंक अब विदेशी बाजारों में अपनी उपस्थिति बढ़ा रहे हैं. इससे उन्हें नए बाजारों में विस्तार करने और नई संभावनाएँ खोजने का अवसर मिलता है. इसके साथ ही, विदेशी बैंकों के साथ सहयोग से नवीनतम तकनीकों और प्रक्रियाओं का आदान-प्रदान हो रहा है.

निष्कर्ष

वर्तमान बैंकिंग परिदृश्य ने कई चुनौतियों और अवसरों का सामना किया है. डिजिटल परिवर्तन, वित्तीय समावेशन, और तकनीकी नवाचारों ने बैंकिंग क्षेत्र को नई दिशा दी है. भविष्य में, एआई, ब्लॉ कचेन, और नियो-बैंकिंग जैसी तकनीकें बैंकिंग को और अधिक प्रभावी और ग्राहक-केंद्रित बनाएँगी.

बैंकों को इन परिवर्तनों को अपनाने और अपने आप को अपडेट रखने की आवश्यकता है, ताकि वे एक समृद्ध और स्थायी बैंकिंग अनुभव प्रदान कर सकें. यह निश्चित रूप से एक रोमांचक यात्रा होगी, जिसमें निरंतर परिवर्तन और नवाचार की आवश्यकता है. हमें उम्मीद है कि आने वाले समय में बैंकिंग प्रणाली और अधिक सुरक्षित, पारदर्शी, और ग्राहकों के लिए सुविधाजनक बनेगी.

विस्तृत विश्लेषण

बैंकिंग क्षेत्र के लिए चुनौतियाँ

प्रतिस्पर्धा

बैंकिंग क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा बढ़ती जा रही है. नए नियो-बैंकों और तकनीकी कंपनियों की वृद्धि ने पारंपरिक बैंकों के लिए चुनौतियाँ खड़ी की हैं. बैंकों को अपनी सेवाओं और उत्पादों को सुधारने की आवश्यकता है ताकि वे प्रतिस्पर्धा में बने रहें.

ग्राहक जागरूकता

ग्राहक अब अधिक शिक्षित और जागरूक हो गए हैं. वे विभिन्न बैंकों की सेवाओं की तुलना कर सकते हैं और अपनी आवश्यकताओं के अनुसार सबसे उपयुक्त विकल्प चुन सकते हैं. बैंकों को ग्राहकों की आवश्यकताओं को समझने और संतुष्ट करने के लिए अपने उत्पादों को अद्यतन करने की आवश्यकता है.

बैंकों की भूमिका

बैंकों की भूमिका केवल वित्तीय सेवाएँ प्रदान करने तक सीमित नहीं है. वे आर्थिक विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. बैंकों के माध्यम से, व्यवसायों को पूंजी मिलती है, जो उनके विकास में सहायक होती है. इसके अलावा, बैंकों का सामाजिक दायित्व भी होता है, जिसमें वे समुदायों के विकास में योगदान करते हैं.

भविष्य के लिए रणनीतियाँ

तकनीकी निवेश

बैंकों को नवीनतम तकनीकों में निवेश करने की आवश्यकता है. इससे उन्हें अपने संचालन को अधिक प्रभावी और कुशल बनाने में मदद मिलेगी. एआई, मशीन लर्निंग, और ब्लॉकचेन जैसी तकनीकों में निवेश से बैंकों को अपने ग्राहकों को बेहतर सेवाएँ प्रदान करने में मदद मिलेगी.

ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण

बैंकों को ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है. ग्राहकों की आवश्यकताओं को समझना और उन्हें सर्वोत्तम समाधान प्रदान करना महत्वपूर्ण है. बैंकों को अपने उत्पादों और सेवाओं को इस दृष्टिकोण से विकसित करना चाहिए.

निष्कर्ष

बैंकिंग क्षेत्र में परिवर्तन और विकास की गति तेज है. वर्तमान में, डिजिटल बैंकिंग, वित्तीय समावेशन, और तकनीकी नवाचारों के माध्यम से बैंकिंग क्षेत्र ने नए आयाम प्राप्त किए हैं. भविष्य में, एआई, ब्लॉकचेन, और नियो-बैंकिंग जैसी तकनीकें बैंकिंग को और अधिक प्रभावी और ग्राहक-केंद्रित बनाएँगी.

इस प्रकार, हमें यह समझने की आवश्यकता है कि बैंकिंग केवल एक आर्थिक गतिविधि नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक, और तकनीकी परिवर्तनों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है. हमें उम्मीद है कि आने वाले समय में बैंकिंग प्रणाली और अधिक सुरक्षित, पारदर्शी, और ग्राहकों के लिए सुविधाजनक बनेगी. बैंकिंग का भविष्य निश्चित रूप से आशाजनक है.

सौरभ वर्मा
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, पटना

महिला नेतृव

भारत देश एक संपन्न परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों से समृद्ध देश है. आजादी के बाद महिलाओं का समाज में सम्मान बढ़ा लेकिन उनके सशक्तिकरण की गति दशकों तक धीमी रही. भारत का विकास महिलाओं के सशक्तिकरण से बहुत गहराई से जुड़ी हुई है. भारत में महिलाओं के नेतृत्व में विकास सुनिश्चित करने के लिए समाज की मानसिकता को बदलना आवश्यक है. महिलाओं के नेतृत्व को महत्व देने और उन्हें सशक्त बनाने के लिए जागरूकता का प्रसार करना और शिक्षा को बढावा देना आवश्यक है. जब आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप एक पीढी को शिक्षित करते हैं,

महिला नेतृत्व के विकास में प्रमुख चुनौतियाँ

- **सांस्कृतिक रिवाज :** भारत एक पुरुष प्रधान देश माना जाता है. हमारे देश में पुराने रिवाजों की गहरी जड़े समाज में फैली हुई है. जिससे महिला सशक्तीकरण और नेतृत्व में बाधा बनती है.
- **कानूनी प्रवर्तन :** हमारे भारत देश में महिलाओं के अधिकारों की रक्षा के लिए विभिन्न कानून बनाए हैं. लेकिन इन कानूनों का कार्यान्वयन असंगत हो सकता है, जो न्याय और जवाबदेही के लिए चुनौती बन सकता है.
- **राजनीति में महिलाओं का अल्प प्रतिनिधित्व :** आज के दौर में भी स्थानीय स्तर पर राजनीतिक भूमिकाओं में महिलाओं को कम प्रतिनिधित्व दिया जाता है. जैसा की आप जानते है आज भी इस पुरुष प्रधान देश में महिलाओं को उनका हक नहीं दिया जाता है.

महिला नेतृत्व में विकास को बढावा देने हेतु सरकारी पहलें :

महिला के विकास हेतु सरकार द्वारा भी कुछ सरकारी पहले आरंभ की गई हैं, जिससे महिलाओं को रोजगार तथा आत्मनिर्भरता हासिल हो सके. वर्तमान में प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण, समावेशी आर्थिक और सामाजिक विकास जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए विशेष ध्यान दिया गया है.

❖ महिला आरक्षण अधिनियम
❖ स्टैंड अप इंडिया
❖ पीएम मुद्रा योजना
❖ बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
❖ पीएम जनधन योजना
❖ राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन
❖ पीएम आवास योजना
❖ प्रसूति अवकाश
❖ लाडली बहीण

भारतीय इतिहास महिलाओं की उपलब्धि से भरा पड़ा है. आइए हम कुछ महिला नेतृत्व करने वाली महिलाओं के बारे में जानते हैं.

आनंदीबाई गोपाल्राव जोशी : यह पहली भारतीय महिला चिकित्सक थी जिन्होने डॉक्टरी की डिग्री ली थी और संयुक्त राज्य अमेरिका में पश्चिमी चिकित्सा में दो साल की डिग्री के साथ स्नातक होने वाली पहली महिला चिकित्सक रही है. जिस दौर में महिलाओं की शिक्षा भी दूभर थी ऐसे में विदेश जाकर डॉक्टरी की डिग्री हासिल करना अपने आप में एक मिसाल है.

सरोजिनी नायडू : यह एक महान कवयित्री, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और एक कुशल राजनीतिज्ञ थी. महात्मा गांधीजी ने सरोजिनी नायडू को उनकी सुंदर कविताओं के लिए ''भारत कोकिला'' का नाम दिया था. सरोजिनी नायडू भारत में महिला सशक्तिकरण के चेहरे के रूप में प्रसिद्ध हुई थी. उन्होने राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने में भी अहम भूमिका निभाई है. उन्होने महिलाओं को उनके अधिकारों की रक्षा करने के लिए प्रेरित किया तथा महिला सशक्तिकरण के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित की थी. उन्होने अपनी कविताओं के माध्यम से देश के स्वतंत्रता संग्राम की भावना को प्रकट किया था.

संतोष यादव : संतोष यादव भारत की एक पर्वतारोही है. वह एवरेस्ट पर्वत पर दो बार चढने वाली विश्व की प्रथम महिला हैं. इसके अलावा वे कांगसुंग की तरफ से माउंट एवरेस्ट पर सफलतापूर्वक चढने वाली विश्व की पहली महिला भी हैं. संतोष यादव का जन्म हरियाणा के रेवाडी जिले में हुआ था. जब वे छोटी थी तब से उन्होने समाज में प्रचलित मान्यताओं और परंपराओं की आलोचना करने के लिए कदम उठाती थी. उनके पहनावे के लिए उनकी आलोचना की जाती थी. वह अक्सर शॉटर्स पहनना पसंद करती थी. जबकि हरियाणा के रेवाडी जिले में सभी लड़कियां साड़ी या पारंपारिक पहनावा पहनती थी.

एम सी मैरी कॉम : मैरी कॉम एक ऐसी महिला खिलाड़ी है, जिन्होंने अपने प्रदर्शन से भारत का नाम रौशन किया है. मैरी कॉम एक भारतीय महिला मुक्केबाज है. वह मणिपुर, भारत की निवासी है. मैरी कॉम 8 बार विश्व मुक्केबाजी प्रतियोगिता में विजेता रहीं. ग्रीष्मकालीन ओलंपिक में उन्होने कांस्य पदक जीता था. मैरी कॉम एक गरीब परिवार में जन्मी थी. उनका जीवन बड़ा संघर्षपूर्ण रहा है. वह कुछ खास करना चाहती थी इसलिए उन्होने मुक्केबाजी को अपना करियर के तौर पर चुना. साल 2001 में उन्होने बॉक्सिंग की दुनिया में कदम रखा.

कल्पना चावला : कल्पना चावला भारत की एक अंतरिक्ष यात्री थी. उनका जन्म भारत में वर्ष 1962 को हुआ था. अपनी स्कूली शिक्षा खत्म होने के बाद वह अमेरिका पढने के लिए चली गई थी. भारतीय मूल की अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री कल्पना चावला एयरोस्पेस इंजीनियरिंग में अपना करियर बनाने अमेरिका गई थी. कोलोराडो यूनिवर्सिटी से पीएचडी प्राप्त करने के बाद वह एक इंजीनियर के रूप में नासा में शामिल हो गई थी. कल्पना चावला ने 1997 और 2003 में स्पेस शटल कोलंबिया में दो अंतरिक्ष मिशनों पर उडान भरी थी. दुख की बात है कि उनके दूसरे मिशन के दौरान पृथ्वी पर वापसी के दौरान कोलंबिया आपदा हुई उनका अंतरिक्ष यान विघटिक को गया और कल्पना चावला सहित शटल में उनके साथ रहे सात चालक दल की मृत्यु हो गई.

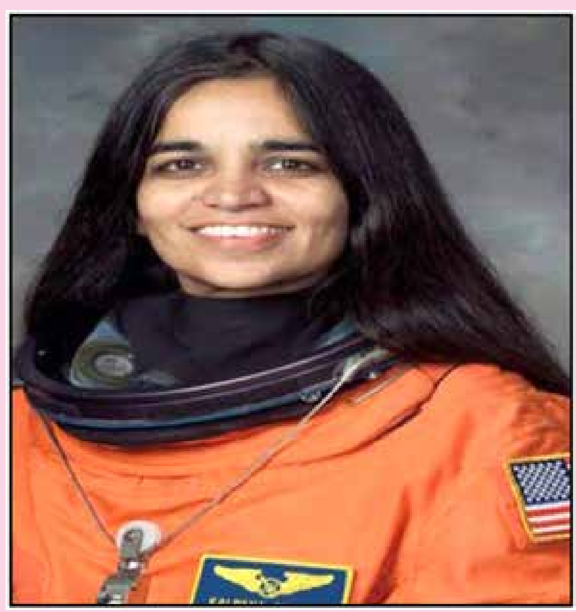

सावित्रीबाई फुले : सावित्रीबाई फुले का जन्म 1831 को हुआ था. सावित्रीबाई फुले भारत के पहले बालिका विद्यालय की पहली प्रिंसिपल और पहले किसान स्कूल की संस्थापक थी. सावित्रीबाई ने अपने जीवन को एक मिशन की तरह जीया जिसका उद्देश्य था विधवा विवाह करवाना, छुआछुत मिटाना, महिलाओं की मुक्ति और दलित महिलाओं को शिक्षित बनाना. वह एक कवयित्री भी थी, उन्हें मराठी की आदिकवयित्री के रूप में भी जाना जाता था. उस दौर में लडकियों की शिक्षा पर सामाजिक पाबंदी थी. सावित्रीबाई जी ने कन्याओं को पढाने जाती थी तो विरोधी लोग उन पर पत्थर मारते थे. उन पर गंदगी फेंकते थे. सावित्रीबाई एक साड़ी अपने थैले में लेकर जाती थी और स्कूल पहुँच कर गंदी हुई साड़ी बदल देती थी.

अरुधंति भट्टाचार्य : अरुधंति जी अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर हैं. उनके शिक्षक हमेशा चाहते थे कि वे कुछ ऐसा करें जिसमें उनकी प्रतिभा और रचनात्मकता का उपयोग हो. उन्होने एसबीआई में पीओ के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था. उन्होने सफलता की सीढ़ी चढते हुए पीछे मुडकर नहीं देखा और वह एसबीआई की चेयरमेन बन गई. उन्होने एसबीआई को दुनिया के सबसे बेहतरीन बैंकों में से एक बनाने हेतु बहुत मेहनत की. वह एसबीआई की अध्यक्ष बनने वाली पहली महिला है.

सुश्री शादमा खान
संकाय सदस्य (मुख्य प्रबंधक)
सर एसपीबीटी महाविद्यालय

राजभाषा नियम 1976 के अनुसार सभी कार्यालयों के सभी रजिस्टरों एवं फाइलों पर द्विभाषिक (हिन्दी-भाषिक) शीर्षक लिखना अनिवार्य है.

भाषायी 'क' एवं 'ख' क्षेत्रों को भेजे जाने वाले डाक लिफाफों पर हिन्दी में पते लिखवाए जाने चाहिए.

राजभाषा नियम 1976 के नियम 5 के अनुसार अंग्रेजी में लिखे किन्तु हिन्दी में हस्ताक्षरित, प्राप्त पत्र का उत्तर हिन्दी में दिया जाना अनिवार्य है.

हिंदी भाषा को प्रणाम

हिंदी को हिंदी भाषा में करती हूं प्रणाम,
करती हूं सम्मान आपका, कोटि-कोटि प्रणाम.

हिंदी ही वह भाषा थी, जिसने लोगों को जोड़ा था,
भगत सिंह के स्वराज उद्घोष में, रंग दे बसंती चोला था.

हिंदी की कविताओं ने, स्वतंत्रता संग्राम में वह काम किया,
चिंगारी भी ज्वाला बन गई, लोगों ने ना विश्राम किया.

गाकर इन कविताओं को, अपने सर्वस्व का त्याग किया,
अपने अमूल्य प्राणों का भारत मां के लिए बलिदान दिया

हिंदी को हिंदी में जाना ही नहीं, तो तुम क्या जान पाओगे,
इसकी विशेषताओं का दम , कभी नहीं भर पाओगे.

देवनागरी लिपि युक्त, यह भाषा वैज्ञानिक है,
विशाल शब्दकोषों से सुसज्जित, सरल भाषा की स्वामिनी है.

जहां एक भाव को व्यक्त करने, बहुत शब्द आ सकते हैं,
परंतु हर शब्द का निश्चित अर्थ है, और कोई भाव ना आ पाते हैं.

यह बहुत लचीली भाषा है, जिसने शब्दों को ग्रहण किया,
विदेशी- देशी कुछ ना देखा, सभी भाषाओं का सम्मान किया.

विश्व पटल में तृतीय, बोलने वाली भाषा है,
भारत की राजभाषा, यह हमारी संपर्क भाषा है.

साहित्य इसका समृद्ध इतना, किसी राजाश्रय की मोहताज नहीं,
यह जनमानस की भाषा, किसी व्यक्ति का अहंकार नहीं.

इतना होते हुए भी क्यों, आंग्ल भाषा को ढोते हो,
हिंदुस्तान में जन्में हो, तो हिंदी क्यों नहीं बोलते हो.

जैसे जन्म के बाद कभी भी माता बदल नहीं सकती,
वैसे ही मातृभाषा है, जो व्यक्त करे सही अभिव्यक्ति.

अपनी मातृभाषा के लिए आओ, मिलजुल कर एक काम करें,
गर्व से हिंदी को अपनाकर, भारतवर्ष का नाम करें.

मैं हिंदी को हिंदी में, पुन: प्रणाम करती हूं
स्वच्छंद होकर हिंदी बोलें, सबसे यही आशा रखती हूं सबसे यही आशा रखती हूं.

हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाओं सहित

साक्षी राय
सहायक प्रबंधक
केंद्रीय कार्यालय

आना तो इस बार बेटी बनकर आना

कोई मुझसे बात कहता है तो पेट में छुप के तो नहीं सुनती हो,
कोई मुझसे कहता है बेटा होगा तो दिल पे तो नहीं लेती हो,

देखो सुनी सुनाई बातों पर मत जाना,
तुम्हें माँ ने मांगा है, ये भूल मत जाना,
तुम आना तो बेटी बन कर आना,

तुम्हें पाने के लिये कितने मन्नत माँगती हूँ,
भगवान को बेटा सुनने की आदत है ना इसलिये बार बार कहती हूँ.

तुम्हें कोई नहीं चाहता अब ये बहाना मत बनाना
तुम आना तो बेटी बन कर आना,

मेरे अन्दर जो धक-धक कर रही हो,
मुझे पता है घबरा रही हो, दुनिया को बेटी नहीं चाहिए,
पैर मार कर ये बता रही हो,

दुनिया अगर न बदले तो, दुनिया को बदलने के लिये आना,
बहुत प्यारी होती है जब दुनिया बेटी जैसी होती है,
बहुत किस्मत वाली होती है, जिसकी बेटी होती है,

तुम्हारे आने से मेरा फिर से आना,
इस बार आना तो बेटी बन के आना.

श्रीमती विशाखा प्रसाद पत्नी श्री मनीष कुमार
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय, राँची

श्री अमरनाथ धाम

देवाधिदेव महादेव के बारह ज्योतिर्लिंगों के अलावा भगवान शिव का एक धाम और भी है जहां भगवान शिव के हिमलिंग स्वरूप में दर्शन होते हैं, जिन्हें हम बाबा बर्फानी अथवा श्री बाबा अमरनाथ जी के नाम से जानते हैं. भगवान शिव के इस प्राकृतिक प्राकट्य स्वरूप के दर्शन का पारलौकिक महत्व है. ऐसे अद्भुत दर्शन की उत्कंठा मेरे मन में कई वर्षों से थी. कहते है कि 'अमरनाथ वही आते हैं जिन्हें बाबा बुलाते हैं' यही सत्य भी है क्योंकि दर्शन की चाह तो हर कोई रखता है किन्तु पवित्र गुफा में विराजित देवों के देव महादेव के हिमलिंग स्वरूप के दर्शन हेतु 14000 फीट की चढ़ाई और 2500 फीट की उतराई दर्शन की चाह रखने वाले मनुष्य को सोच में डाल देती है. यह बाबा की ही कृपा रही कि अनायास एक पारिवारिक समूह के साथ श्री बाबा अमरनाथ जी की यात्रा पर जाने की बात चली और बातों ही बातों में बाबा के दर्शन हेतु मेरा भी जाना तय हो गया. अपना मेडिकल प्रमाणपत्र और श्री अमरनाथ श्राईन बोर्ड जम्मू कश्मीर से पंजीकरण करवाकर 23 जून 2024 को हम श्री बाबा अमरनाथ जी की यात्रा हेतु इन्दौर से रेल में सवार हो गये.

जम्मू-कश्मीर के गांदरबल जिले के हिमालय क्षेत्र की हिमनद घाटी में समुद्रतल से 13600 फीट से अधिक उंचाई पर स्थित पवित्र गुफा में विराजित श्री बाबा अमरनाथ जी के दर्शन हेतु यात्रा का पूरा प्रबंध श्री अमरनाथ श्राईन बोर्ड द्वारा किया जाता है. उनके द्वारा ही पवित्र गुफा के दर्शन हेतु प्रतिवर्ष आषाढ़ माह की पूर्णिमा से यात्रा के आरंभ की विधिवत घोषणा की जाती है जो श्रावण मास के अंत तक समाप्त होती है. इस वर्ष यह यात्रा 29 जून से प्रारंभ होनी थी अत: हम माता श्रीवैष्णों देवी के दर्शन करते हुऐ श्रीनगर पहुंच गये. श्रीनगर से बाबा अमरनाथ जी की पवित्र गुफा तक जाने के दो मार्ग हैं. प्रथम मार्ग पहलगाम होकर लगभग 96 किलोमीटर दूर है जहां से पवित्र गुफा की दूरी 46 किलोमीटर है जिसमें लगभग 3 से 5 दिन लग जाते हैं. रास्ता बहुत ही खूबसूरत किन्तु खतरनाक और लंबा है. दूसरा रास्ता बालटाल से है जो श्रीनगर से लगभग 93 किलोमीटर है और खूबसूरत सोनमर्ग से होकर जाता है. बालटाल से पवित्र गुफा की दूरी 16 किलोमीटर है जहां से 1 से 2 दिन में दर्शन कर वापस लौटा जा सकता है. बालटाल और पहलगाम दोनों ही जगह से पवित्र गुफा तक जाने हेतु घोड़े, कंडी और पालकी की सुविधा मिल जाती है. हेलीकॉप्टर की सुविधा नीलग्रथ हेलीपेड से पंजतरणी हेलीपेड तक ही है. वहां से पवित्र गुफा की दूरी 6 किलोमीटर है. बालटाल पहुँचकर हमने एक लंगर में रात्रि विश्राम किया. उत्तर भारत से कई धर्मालु संस्थाएँ निस्वार्थ भाव से यहां लंगर

संचालित करती हैं जिनमें रात्रि विश्राम से लेकर नहाने, धोने एवं खाने पीने की सभी सुविधाएँ निशुल्क उपलब्ध रहती हैं. अगले दिन प्रात: 5 बजे हमने घोड़े से यात्रा आरंभ की. कई यात्री पैदल भी यात्रा करते हैं किन्तु हम शहर वाले आरामपसंद लोगों के लिये इतनी चढ़ाई कर पाना थोड़ा परेशानी भरा हो सकता है. घोड़ा बेस कैम्प से लेना ही ठीक रहता है क्योंकि यात्रा के मध्य में घोड़ा मिलना मुश्किल होता है और यहां मौसम बहुत तेजी से बदलता है कभी भी बारिश आ जाती है जिससे बचने के लिये छाता अथवा रेनकोट साथ रखना चाहिये. रास्ते में खाने के लिये थोड़ी थोड़ी दूरी पर छोटी टेन्ट में दुकानें हैं जिनमें चाय, स्नेक्स इत्यादि मिल जाते हैं. इतनी उंचाई पर आक्सीजन का लेवल भी कम हो जाता है इसलिये जरूरी दवाईयां साथ रखना श्रेयस्कर होता है. लगभग 8 फीट के पगडंडी जैसे पूरे रास्ते भर बार बार चढ़ाई और उतराई आती रहती है. पूरे रास्ते श्री अमरनाथ ग्लेशियर से निकलने वाली अमरावती नदी साथ बहती है. बीच मे अमरावती और पंजतरणी नदी का संगम आता है. दोनों तरफ उंचे पहाड़ और उनके बीच हजारों फीट नीचे गहरी खाई जिसमें रोमांचित करता तीव्र वेग से बहता ग्लेशियर का ठंडा पानी, सामने चारों ओर फैली शिवालिक पहाड़िया और उन पर छाई बर्फ की सफेद चादर मन को बरबस ही मोह लेती है. लगभग 7 घंटे चलकर दोपहर 12 बजे हम पवित्र गुफा पहुंचे और लगभग 100 सीढ़ियां चढ़ने के बाद जीवन का वह अविस्मरणीय पल आया जब हिमालय पर्वत श्रेणियों में स्थित इस 150 फीट उंची और लगभग 90 फीट लंबी पवित्र गुफा में स्वयंभू देवाधिदेव महादेव के पवित्र हिमलिंग और उनके समीप ही माता पार्वती की हिम आकृति के साक्षात दर्शन कर जीवन धन्य हो गया. पवित्र गुफा में पहुँचने पर एक अलग सी अनूभूति का एहसास होने लगता है. चारों तरफ फैली बर्फ, मानो जैसे प्रकृति बाहें फैला कर आपका अभिनंदन कर रही हो. ग्लेश्यिरों से बहता अमृत तुल्य निर्मल प्राकृतिक जल पीकर आपकी सारी थकान दूर हो जाती है और पुन: ताजगी महसूस होने लगती है. एक अलौकिक अद्भुत चेतना आपको इस दिव्य लोक में होने का आभास कराती है और आप स्वयं को दुनिया की मोह माया से विरक्त हो देवाधिदेव के आभामंडल में समाहित होकर कुछ समय के लिये अपना अस्तित्व भूलकर शिव की भक्ति में विलीन हो जाते हैं.

 वही सत्य कहना चाहिए जो दूसरों की प्रसन्नता का कारण हो. जो सत्य दूसरों के दुख के लिए हो उसके संबंध में बुद्धिमान मौन ही रहें - विष्णु पुराण

भगवान शिव और माता पार्वती से जुड़ा यह धाम शिव और शक्ति दोनों का प्रतीक है. तमाम कठिनाईयों, बाधाओं और खतरों के बावजूद यहां हर साल भक्तों का तांता लगा रहता है. पूरी धरती पर केवल यहीं भगवान शंकर हिमलिंग के स्वरूप में दर्शन देते हैं. कहा जाता है कि यही वह स्थान है जहां भगवान शिव ने माता पार्वती को ब्रह्माण्ड का रहस्य एवं मोक्ष का मार्ग बताया था. इसी तत्व ज्ञान को अमरकथा नाम से जाना गया और इसीलिये इस स्थान का नाम अमरनाथ पड़ा. श्री अमरनाथ पवित्र गुफा की खोज के बारे में कहा जाता है कि इस पवित्र गुफा की खोज एक मुस्लिम गडरिये ने 16वीं सदी में की थी, तो अन्य मतानुसार 19वी शताब्दी में कश्मीरी पंडित महादेव कौल ने इसे खोजा था जिसका उल्लेख उनकी पुस्तक राजतरंगिणी में भी है.

पवित्र गुफा की सीढ़ियों के नीचे फैले विशाल क्षेत्र में कुछ साधुओं के डेरे, श्री अमरनाथ श्राईन बोर्ड के प्रशासनिक आफिस, आपातकालीन चिकित्सा कक्ष और उनके कर्मचारियों के अस्थाई आवास तथा निस्वार्थ सेवा देने वाले अनेकों लंगर लगे हुऐ होते हैं जहां पहुँचकर आप भोजन प्राप्त कर सकते हैं. भोजन प्रसाद आदि ग्रहण करने के पश्चात, इस अलौकिक और दिव्य लोक के दर्शन की अविस्मरणीय यादों को सहेजे इस पवित्र गुफा से विदा लेने की बारी थी. हमने दोपहर 2 बजे बालटाल की और प्रस्थान किया जो हमारा बेस केम्प था. 6 घंटे चलकर हम रात्रि 8 बजे अपने विश्राम स्थल पर पहुँचे. यह मेरे जीवन की एक यादगार तीर्थयात्रा थी जिसमें हमें अपने भौतिक जीवन की आपाधापी से दूर, प्रकृति की गोद में स्वयंभू महादेव के श्रीचरणों में कुछ पल बैठकर अपने

जीवन को धन्य करने का सुअवसर प्राप्त हुआ. आप भी इस पवित्र धाम के दर्शन अपने जीवन में एक बार अवश्य करें. इस पावन शिवधाम के बारे में सिर्फ यही कहा जा सकता है कि -

दुनिया में अगर कहीं स्वर्ग है, तो वह यहीं है, यहीं है, यहीं है!

मिनेश कसेरा
कस्टमर सर्विस एसोसिऐट्स
मील एरिया, इन्दौर

लेह लद्दाख की यात्रा

लेह लद्दाख की यात्रा मेरे एवं मेरे परिवार के लिए जीवनपर्यंत यादगार रहेगी. इसके लिए मैं अपने प्रिय बैंक सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया के प्रति बहुत आभारी हूँ. एलटीसी सुविधा के अंतर्गत मैंने दिनांक 24.06.2024 से 29.06.2024 तक एलटीसी सुविधा का उपयोग करते हुए परिवार सहित लेह लद्दाख की यात्रा की. लेह लद्दाख, जो भारत के जम्मू-कश्मीर राज्य का हिस्सा है, एक अद्वितीय और मनोहारी पर्यटन स्थल है. यह स्थान अपनी बर्फ से ढकी पहाड़ियों, ऊँचाई पर स्थित झीलों, बौद्ध मठों और अनोखे संस्कृति के लिए प्रसिद्ध है. लेह लदाख की यात्रा एक रोमांचक अनुभव है, जो साहसिकता, शांति और प्राकृतिक सुंदरता का एक अनूठा मिश्रण पेश करती है. मेरे लेह लदाख की यात्रा के समय वहां का मौसम सुहावना था. इस दौरान तापमान 15^{0}C से 30^{0}C के बीच था, जो यात्रा के लिए आदर्श है.

लेह पहुँचने के लिए मैंने हवाई यात्रा का उपयोग किया. इस हेतु मैं अहमदाबाद से दिल्ली ट्रेन के माध्यम से आया एवं दिल्ली से लेह के लिए सीधी फ्लाइट्स ली. नियमित रूप से यह फ्लाईट्स उपलब्ध हैं

अपनी यात्रा के दौरान मेरे द्वारा निम्नानुसार प्रमुख स्थलों को देखा गया.

1. लेह किला: यह किला लेह शहर के ऊपर स्थित है और यहाँ से पूरे शहर का अद्भुत दृश्य दिखाई देता है. किले की वास्तुकला और इतिहास दोनों ही आकर्षक हैं.

2. पैंगोंग झील: यह झील अपने नीले पानी और चारों ओर की पहाड़ियों के लिए प्रसिद्ध है. यहाँ आकर आपको शांति का अनुभव होगा.

3. नुब्रा घाटी: यह घाटी अपनी अद्भुत रेगिस्तानी सुंदरता, दो कूबड वाले ऊंटों और बौद्ध मठों के लिए जानी जाती है. यहाँ पहुँचने के लिए आपको खारदुंग ला दर्रे को पार करना होगा, जो दुनिया के

सबसे ऊँचे मोटर योग्य दर्रों में से एक है.

4. खारदुंग ला: यह दर्रा 5,359 मीटर की ऊँचाई पर स्थित है और यहाँ से दृश्य मनमोहक होते हैं. यहाँ पहुँचने का अनुभव अनूठा और अद्वितीय होता है.

5. शांति स्तूप: यह स्तूप बौद्ध धर्म के प्रतीक के रूप में स्थापित किया गया है और यहाँ से शहर का खूबसूरत दृश्य दिखता है.

संस्कृति और भोजन

लेह लदाख की संस्कृति तिब्बती और बौद्ध प्रभावों से भरी हुई है. यहाँ के स्थानीय लोग मेहमानों का स्वागत अत्यंत गर्मजोशी से करते हैं. यात्रा के दौरान, स्थानीय बौद्ध मठों में जाकर मैंने उनके धार्मिक रीति-रिवाजों को देखा.

लेह लदाख की यात्रा एक जीवनभर का अनुभव है, जो साहसिकता, शांति और संस्कृति का अनूठा संगम प्रस्तुत करता है. यह स्थान न केवल प्रकृति प्रेमियों के लिए, बल्कि उन सभी के लिए एक आदर्श गंतव्य है जो जीवन की भागदौड़ से दूर, एक नई ऊर्जा और अनुभव के लिए यहाँ आना चाहते हैं. मैंने एवं मेरे परिवार ने यहां की यात्रा का भरपूर आनंद लिया, जिसे हम आजीवन भूल नहीं पायेंगे.

राजीव गर्ग
मुख्य प्रबंधक
आंचलिक कार्यालय, अहमदाबाद

जीवन है तो सब कुछ है...

जीवन, यह शब्द अपने आप में एक रहस्य है, एक यात्रा है, एक अवसर है, और एक अनमोल उपहार है. इस लेख के माध्यम से, हम इस गहरे और व्यापक विषय पर विचार करेंगे. जीवन को एक सुंदरता, एक चमत्कार और एक अवसर के रूप में समझने का प्रयास करेंगे. यह लेख न केवल जीवन के महत्व को समझाने का प्रयास करेगा, बल्कि यह भी बताएगा कि हम अपने जीवन को किस तरह से बेहतर बना सकते हैं.

जीवन का अर्थ और उसकी मूल्यवानता:- जीवन का अर्थ सिर्फ सांस लेना नहीं है, बल्कि यह उन सभी संभावनाओं, सपनों, और विचारों का संगम है जो हमें इस धरती पर रहने का मौका देती हैं. जीवन का वास्तविक अर्थ इस बात में छिपा है कि हम इसे किस प्रकार जीते हैं, किन मानवीय गुणों को अपनाते हैं, और कैसे अपनी और दूसरों की भलाई के लिए कार्य करते हैं. जीवन के मूल्य को इस दृष्टिकोण से देखा जा सकता है कि यह हमें हर दिन एक नई शुरुआत का अवसर देता है. चाहे कितनी भी कठिनाइयाँ क्यों न आएं, हमें हमेशा एक नया दिन मिलता है, जिसमें हम अपनी गलतियों को सुधार सकते हैं और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं.

स्वास्थ्य जीवन का सबसे बड़ा उपहार:- यदि हमारे पास स्वास्थ्य है, तो हमारे पास सब कुछ है. स्वास्थ्य एक ऐसा धन है, जिसे कोई भी चुराने या छीनने में सक्षम नहीं है. स्वास्थ्यहीन जीवन किसी अभिशाप से कम नहीं होता. स्वस्थ शरीर और मन हमें न केवल बेहतर जीवन जीने में मदद करते हैं, बल्कि हमें अपनी क्षमताओं को पूरी तरह से पहचानने और उनका उपयोग करने का अवसर भी प्रदान करते हैं. स्वास्थ्य की देखभाल के लिए हमें नियमित व्यायाम, संतुलित आहार, और मानसिक शांति की आवश्यकता होती है. मानसिक स्वास्थ्य भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि शारीरिक स्वास्थ्य. सकारात्मक सोच, ध्यान और योग के माध्यम से हम अपने मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बना सकते हैं.

पारिवारिक और सामाजिक संबंध जीवन की धरोहर :- हमारा जीवन हमारे परिवार और दोस्तों के बिना अधूरा है. हमारे प्रियजन हमारी ताकत होते हैं, जो हमारा हर कठिनाई में साथ देते हैं. परिवार और मित्रता का महत्व जीवन में अपार है. ये रिश्ते हमारे जीवन को खुशियों से भरते हैं, हमें सहारा देते हैं, और हमारी कमजोरियों को दूर करने में हमारी मदद करते हैं. समाज में हमारे संबंध भी महत्वपूर्ण हैं. जब हम दूसरों के साथ मिलकर काम करते हैं, तो हम बड़े लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं. समाज की भलाई के लिए किया गया कोई भी कार्य हमें मानसिक शांति और संतुष्टि प्रदान करता है.

स्वयं की पहचान और आत्मसम्मान :- स्वयं की पहचान का विकास जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है. जब हम स्वयं को पहचानते हैं और अपनी क्षमताओं को समझते हैं, तो हम आत्मसम्मान की ओर बढ़ते हैं. आत्म-सम्मान हमें सही निर्णय लेने, अपनी राय को प्रकट करने, और अपने जीवन को सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ाने में मदद करता है. आत्मसम्मान के विकास के लिए हमें स्वयं की आलोचना करने से बचना चाहिए और अपने सकारात्मक पहलुओं पर ध्यान देना चाहिए. आत्म-प्रेम और आत्म-स्वीकृति हमें मानसिक और भावनात्मक रूप से मजबूत बनाते हैं.

ज्ञान और शिक्षा जीवन के सच्चे साथी :- ज्ञान और शिक्षा जीवन के वे आधारस्तंभ हैं, जो हमें जीवन की कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार करते हैं. शिक्षा न केवल हमें अकादमिक रूप से समृद्ध करती है, बल्कि हमें जीवन के व्यावहारिक पहलुओं को भी समझने में मदद करती है. ज्ञान का अर्थ सिर्फ किताबों में लिखा हुआ नहीं है, बल्कि यह अनुभव, अवलोकन और स्वयं के प्रयासों से भी प्राप्त होता है. हमें हमेशा सीखने के लिए तैयार रहना चाहिए, क्योंकि ज्ञान की खोज जीवनभर चलने वाली प्रक्रिया है.

प्राकृतिक सौंदर्य और पर्यावरण:- हमारा जीवन प्रकृति के बिना कुछ नहीं है. प्राकृतिक सौंदर्य हमें मानसिक शांति प्रदान करता है और हमारी आत्मा को संतुष्टि देता है. पेड़-पौधे, पहाड़, नदियाँ, समुद्र, और आकाश, ये सब जीवन की अनमोल संपत्तियाँ हैं, जिन्हें हमें संजोकर रखना चाहिए. पर्यावरण की सुरक्षा हमारे जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है. हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम अपने पर्यावरण को संरक्षित रखने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे हैं. पर्यावरण संरक्षण के लिए छोटे-छोटे कदम भी बड़े बदलाव ला सकते हैं, जैसे कि प्लास्टिक का उपयोग कम करना, पानी की बचत करना, और पेड़ लगाना.

धर्म और आध्यात्मिकता जीवन की दिशा :- धर्म और आध्यात्मिकता हमें जीवन की गहरी समझ प्रदान करते हैं. ये हमें आत्मा की शांति, प्रेम, और करुणा का मार्ग दिखाते हैं. धर्म के माध्यम से हम न केवल अपने जीवन को सही दिशा में आगे बढ़ा सकते हैं, बल्कि दूसरों के जीवन को भी समृद्ध कर सकते हैं. आध्यात्मिकता हमें यह समझने में मदद करती है कि जीवन का वास्तविक उद्देश्य क्या है? यह हमें हमारे भीतर के प्रेम, शांति, और आनंद के स्रोत को खोजने में मदद करती है.

समय का महत्व :- समय जीवन की सबसे अनमोल धरोहर है. इसे एक बार खोने पर फिर से प्राप्त नहीं किया जा सकता. इसलिए हमें समय की कीमत को समझना चाहिए और इसे सही दिशा में उपयोग करना चाहिए. समय का सही उपयोग हमें हमारे लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है. हमें अपने समय को सुव्यवस्थित तरीके से नियोजित करना चाहिए, ताकि हम अपने जीवन के हर क्षण का पूर्ण उपयोग कर सकें.

सकारात्मक सोच जीवन की कुंजी :- सकारात्मक सोच जीवन को खुशहाल बनाती है. यह हमें हर स्थिति में सकारात्मक दृष्टिकोण बनाए रखने में मदद करती है. सकारात्मक सोच से हमारे मन में आत्मविश्वास बढ़ता है, और हम कठिनाइयों का सामना साहस के साथ कर सकते हैं. हमें नकारात्मक विचारों से दूर रहना चाहिए और सकारात्मकता को अपने जीवन का हिस्सा बनाना चाहिए. सकारात्मक सोच के माध्यम से हम न केवल अपने जीवन को बेहतर बना सकते हैं, बल्कि दूसरों के जीवन में भी खुशियाँ ला सकते हैं.

स्वप्न और लक्ष्य जीवन की दिशा :- स्वप्न हमारे जीवन के मार्गदर्शक होते हैं. वे हमें प्रेरित करते हैं और हमें आगे बढ़ने के लिए ऊर्जा प्रदान करते हैं. जीवन में लक्ष्य का होना आवश्यक है, क्योंकि यह हमें हमारे सपनों को हकीकत में बदलने का मार्ग दिखाता है. हमें अपने सपनों को वास्तविकता में बदलने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए. एक सशक्त लक्ष्य निर्धारण और उसे प्राप्त करने की दिशा में निरंतर प्रयास ही हमें सफलता की ओर ले जाते हैं.

कृतज्ञता: जीवन की सच्ची भावना :- कृतज्ञता का भाव जीवन को पूर्णता प्रदान करता है. जब हम उन चीजों के लिए आभारी होते हैं, जो हमारे पास हैं, तो हम अपने जीवन को अधिक साकारात्मक और संतुष्टिपूर्ण पाते हैं. कृतज्ञता हमें न केवल अपने जीवन के प्रति, बल्कि दूसरों के प्रति भी प्रेम और करुणा की भावना विकसित करने में मदद करती है. यह हमें छोटी-छोटी चीजों में भी खुशियाँ ढूंढने की प्रेरणा देती है.

प्रेम और करुणा जीवन की ऊर्जा :- प्रेम और करुणा जीवन की सच्ची ऊर्जा हैं. ये भावनाएँ हमें मानवीय बनाती हैं और हमारे जीवन को अर्थपूर्ण बनाती हैं. प्रेम एक ऐसी शक्ति है, जो किसी भी बाधा को पार कर सकती है. करुणा हमें दूसरों के दुख-दर्द को समझने और उनकी सहायता करने की प्रेरणा देती है. प्रेम और करुणा के बिना जीवन अधूरा है. हमें अपने जीवन में इन भावनाओं को स्थान देना चाहिए और दूसरों के साथ सहानुभूति और प्रेमपूर्वक व्यवहार करना चाहिए.

जीवन के अनुभव और उनकी शिक्षाएँ:- जीवन के अनुभव हमें बहुत कुछ सिखाते हैं. वे हमारे सबसे बड़े शिक्षक होते हैं. हर अनुभव, चाहे वह अच्छा हो या बुरा, हमें कुछ न कुछ सिखाता है. हमें अपने अनुभवों से सीखना चाहिए और उन्हें अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए उपयोग करना चाहिए. गलतियाँ करना स्वाभाविक है, लेकिन उन गलतियों से सीखकर आगे बढ़ना ही जीवन का वास्तविक उद्देश्य है.

समर्पण और सेवा: जीवन का सच्चा मार्ग :- समर्पण और सेवा का भाव जीवन को सार्थक बनाता है. जब हम अपने जीवन को दूसरों की सेवा में समर्पित करते हैं, तो हम आत्मिक शांति और संतुष्टि प्राप्त करते हैं. सेवा का कार्य हमें अपने भीतर की अच्छाई और प्रेम को पहचानने का अवसर प्रदान करता है. समर्पण का अर्थ है अपने कर्तव्यों के प्रति पूरी निष्ठा और ईमानदारी से कार्य करना. सेवा का भाव न केवल दूसरों के लिए, बल्कि हमारे स्वयं के लिए भी फायदेमंद होता है.

रेवती कुमार
राजभाषा अधिकारी
क्षेत्रीय कार्यालय पटना

सेवानिवृत्ति

सेवानिवृत्ति उपरांत सुखद एवं दीर्घायु जीवन हेतु मंगलकामनाएं...!!

श्री वाई अनिल कुमार
महाप्रबंधक

श्री संपत कुमार
उप-महाप्रबंधक

श्री अजय गोयल
उप-महाप्रबंधक

समाज में महिलाओं का योगदान

प्रस्तावना

आज के दौर में महिला नेतृत्व एक महत्वपूर्ण और चर्चा का विषय बन चुका है. जहां एक ओर महिलाओं ने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी अद्वितीय पहचान बनाई है, वहीं दूसरी ओर उन्हें समाज की अनेक चुनौतियों का सामना भी करना पड़ा है. चाहे राजनीति हो, व्यापार, विज्ञान, या सामाजिक सेवा, महिलाएं हर क्षेत्र में अपनी योग्यता साबित कर रही हैं. आज हम उन प्रेरणादायक कहानियों पर ध्यान देंगे, जो न केवल महिला सशक्तिकरण का प्रतीक हैं, बल्कि समाज के हर वर्ग के लिए प्रेरणा का स्रोत भी हैं.

'यदि आप अपनी क्षमताओं को पहचानते हैं, तो कोई भी आपको रोक नहीं सकता.' कल्पना चावला

यह निबंध महिला नेतृत्व के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालता है. इसमें सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएं, अवसर और संभावनाएं, सफल महिला नेताओं की कहानियां और उनके समाज पर पड़ने वाले प्रभाव शामिल हैं. साथ ही, हम देश की सबसे शिक्षित महिला मुख्यमंत्री, भारतीय सेवा में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी और महिला सशक्तिकरण के उदाहरणों पर भी चर्चा करेंगे.

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य इतिहास में, महिलाओं ने नेतृत्व की कई भूमिकाएं निभाई हैं, चाहे वह प्राचीन भारत की रानी लक्ष्मीबाई हों या मिस्र की रानी क्लियोपेट्रा. हालांकि, लंबे समय तक उन्हें मुख्यधारा के नेतृत्व में उचित स्थान नहीं मिला. औद्योगिक क्रांति के बाद और खासकर 20वीं सदी में, महिलाओं ने विभिन्न आंदोलनों और संगठनों के माध्यम से अपनी आवाज़ उठाई. भारत में सरोजिनी नायडू और इंदिरा गांधी जैसे महिला नेताओं ने यह साबित किया कि महिलाएं राजनीति में प्रभावशाली भूमिका निभा सकती हैं.

इंदिरा गांधी, जो भारत की पहली महिला प्रधानमंत्री बनीं, ने अपने दृढ़ संकल्प और राजनीतिक कुशलता से देश की दिशा को नया मोड़ दिया. उनके नेतृत्व ने दिखाया कि महिलाएं राजनीति में भी उतनी ही सक्षम होती हैं, जितना कि पुरुष. इसके अलावा, मार्गरेट थैचर, जिन्हें 'आयरन लेडी' कहा जाता है. भी इस बात का प्रतीक है कि महिलाएं वैश्विक मंच पर अपनी मजबूत पहचान बना सकती हैं.

महिला नेतृत्व की विशेषताएँ

महिला नेतृत्व के कुछ अनूठे गुण होते हैं, जो उन्हें दूसरों से अलग बनाते हैं. महिला नेता आमतौर पर सहानुभूतिपूर्ण, सहकारी और निर्णय लेने में सामूहिक दृष्टिकोण अपनाती हैं. महिलाओं में कठिनाइयों को धैर्य के साथ हल करने की क्षमता होती है, जो उन्हें जटिल समस्याओं को हल करने में सक्षम बनाती है.

महिला नेतृत्व में संवेदनशीलता, करुणा और सहकारिता प्रमुख तत्व होते हैं. उनकी यह विशेषता उन्हें सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों जैसे मुद्दों पर अधिक प्रभावी बनाती है. उनके नेतृत्व में निर्णय लेना अक्सर दीर्घकालिक और संतुलित होता है, जिससे न केवल उनके संगठनों को बल्कि पूरे समाज को लाभ होता है.

महिला नेतृत्व की चुनौतियाँ

महिला नेतृत्व की राह में अनेक बाधाएं हैं, जिनमें प्रमुख हैं-सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताएँ.

लैंगिक भेदभाव: समाज के कुछ हिस्सों में आज भी महिलाओं को पुरुषों की तुलना में कमतर आंका जाता है. इस भेदभाव के कारण महिलाओं को नेतृत्व के अवसर प्राप्त करने में कठिनाई होती है. कार्यस्थल पर भी, महिलाओं को कई बार वेतन और प्रमोशन में भेदभाव का सामना करना पड़ता है.

पारिवारिक और पेशेवर जीवन का संतुलन: महिलाओं के सामने सबसे बड़ी चुनौती पारिवारिक और पेशेवर जीवन के बीच संतुलन बनाने की होती है. पारिवारिक जिम्मेदारियों के चलते कई महिलाएं अपनी नेतृत्व क्षमता को पूरी तरह से विकसित नहीं कर पातीं.

सुरक्षा और स्वास्थ्य: महिलाओं के लिए कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न, असुरक्षित माहौल और असमान वेतन की समस्याएं आम हैं. इन समस्याओं के कारण उन्हें अपने नेतृत्व की भूमिका निभाने में बाधा आती है.

आर्थिक स्वतंत्रता की कमी: महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने के लिए कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है. विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, महिलाओं को शिक्षा और रोजगार के अवसरों की कमी होती है, जिससे उनके नेतृत्व में आने की संभावनाएं कम हो जाती हैं.

महिला सशक्तिकरण के प्रेरणादायक उदाहरण महिला सशक्तिकरण के कुछ बेहतरीन उदाहरण हमारे सामने हैं, जिन्होंने समाज को एक नई दिशा दी है.

दिल्ली की सबसे शिक्षित महिला मुख्यमंत्री: हाल ही में, दिल्ली की मुख्यमंत्री को देश की सबसे शिक्षित महिला नेता के रूप में पहचान मिली है. उनकी शिक्षा और प्रबंधन कौशल ने न केवल दिल्ली की राजनीति में क्रांतिकारी बदलाव लाए हैं, बल्कि उन्होंने सामाजिक सुधार के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है. उनके नेतृत्व में दिल्ली की शिक्षा प्रणाली में सुधार हुआ, जिससे लाखों बच्चों का भविष्य सुधरा है. उनकी कहानी उन सभी महिलाओं के लिए प्रेरणा है, जो नेतृत्व की ऊंचाइयों को छूना चाहती हैं.

अपनी प्रशंसा स्वयं करने से बेहतर है यह कार्य दूसरे करें.

भारतीय सेवा में महिलाओं की भागीदारी: भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS), भारतीय पुलिस सेवा (IPS) और अन्य सिविल सेवाओं में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी भी महिला सशक्तिकरण का एक बेहतरीन उदाहरण है. आज, कई महिलाएं सिविल सेवा के शीर्ष पदों पर आसीन हैं और वे समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है. उदाहरण के लिए, किरण बेदी, जो भारत की पहली महिला IPS अधिकारी बनीं, उन्होंने पुलिसिंग के क्षेत्र में अपने अनुकरणीय काम से साबित किया कि महिलाएं किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्टता हासिल कर सकती हैं.

'वो खुद ही अपने सफर की तलाश में निकल पड़ी, जो रुक गई थी कहीं, अब हर राह चल पड़ी.'

किरण बेदी और अन्य महिला आईएएस और आईपीएस अधिकारियों की प्रेरक कहानियाँ यह दर्शाती हैं कि शिक्षा, साहस और दृढ़ संकल्प से महिलाएं किसी भी कठिनाई को पार कर सकती हैं.

अवसर और संभावनाएँ

हालांकि चुनौतियाँ हैं, लेकिन महिला नेतृत्व के लिए संभावनाएँ भी अपार हैं. आधुनिक समाज में शिक्षा, प्रौद्योगिकी, और सामाजिक जागरूकता ने महिलाओं के लिए नए अवसर खोले हैं.

शिक्षा और सशक्तिकरण: शिक्षा किसी भी व्यक्ति के लिए सशक्तिकरण का सबसे बड़ा माध्यम है. आज, महिलाएं शिक्षा के माध्यम से नेतृत्व कौशल विकसित कर रही हैं और अपने समाज में परिवर्तन ला रही हैं. इसके अलावा, शिक्षा महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने में मदद करती है, जिससे वे नेतृत्व की भूमिकाओं में अपनी जगह बना सकती हैं.

सरकारी नीतियाँ और आरक्षण: भारत में महिलाओं के लिए आरक्षण की नीतियाँ जैसे पंचायती राज संस्थाओं में 33% आरक्षण महिलाओं को नेतृत्वकारी भूमिकाओं में आने का अवसर प्रदान करता है. इसी प्रकार, विभिन्न सरकारी योजनाएं और नीतियाँ महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए बनाई जा रही हैं, ताकि उन्हें नेतृत्व में आने का पूरा अवसर मिले.

प्रौद्योगिकी और उद्यमिता: आज के डिजिटल युग में, महिलाएं प्रौद्योगिकी के माध्यम से नए उद्यम स्थापित कर रही हैं. महिलाएं अब ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग करके व्यवसाय शुरू कर रही हैं और वैश्विक बाजार में अपनी पहचान बना रही हैं. यह न केवल उनकी आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देता है, बल्कि उन्हें अपने समुदाय का नेतृत्व करने का भी अवसर देता है.

सामाजिक जागरूकता: वर्तमान समय में, महिलाओं के प्रति समाज की धारणा में सकारात्मक परिवर्तन आ रहा है. लोग यह समझने लगे हैं कि महिला नेतृत्व न केवल महिलाओं के लिए, बल्कि पूरे समाज के लिए लाभकारी है. इस बदलाव से महिलाएं नेतृत्व में अधिक सशक्त हो रही हैं और सामाजिक सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं.

महिला नेतृत्व का समाज पर प्रभाव महिला नेतृत्व का समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ता है. महिलाओं की नेतृत्व शैली प्राय: सहकारी, संवादात्मक और दूरदर्शी होती है, जो समाज के विकास के लिए आवश्यक है.

समता और न्याय: महिलाएं अपने नेतृत्व के माध्यम से समाज में समता और न्याय के लिए काम करती हैं. वे वंचित और पिछड़े वर्गों के मुद्दों को गहराई से समझती हैं और उनके उत्थान के लिए नीतियाँ बनाती हैं. उनके नेतृत्व में समाज में समता और न्याय को अधिक महत्व मिलता है.

शिक्षा और स्वास्थ्य: महिला नेता शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्रों में सुधार के लिए अधिक सजग होती हैं. उनके नेतृत्व में इन क्षेत्रों में अधिक नीतिगत और व्यावहारिक सुधार होते हैं, जिससे समाज के विकास को बल मिलता है.

आर्थिक विकास: महिला उद्यमिता और नेतृत्व से न केवल उनके व्यक्तिगत जीवन में आर्थिक समृद्धि आती है, बल्कि पूरे समाज की आर्थिक स्थिति में सुधार होता है. महिला नेताओं ने नवाचार और प्रौद्योगिकी को बढ़ावा देकर अर्थव्यवस्था को एक नया आयाम दिया है.

'मंजिलें उन्हीं को मिलती है, जिनके सपनों में जान होती है, पंखों से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है.'

निष्कर्ष

महिला नेतृत्व एक सकारात्मक और आवश्यक बदलाव है जो समाज और देश को उन्नति की ओर ले जाता है. हालांकि महिलाएं आज भी विभिन्न चुनौतियों का सामना कर रही हैं, फिर भी उनके लिए अवसरों की कमी नहीं है. शिक्षा, सशक्तिकरण, और सामाजिक जागरूकता के माध्यम से महिलाएं अपनी नेतृत्व क्षमता का विकास कर रही हैं और समाज में बदलाव ला रही हैं. समाज को चाहिए कि वह महिलाओं को नेतृत्व में समान अवसर प्रदान करे ताकि वे अपने प्रतिभा और कौशल से समाज के हर क्षेत्र में योगदान दे सकें.

महिला नेतृत्व का महत्व केवल महिलाओं तक सीमित नहीं है; यह समाज के सभी वर्गों की भलाई के लिए है. जब महिलाएं नेतृत्व में आती हैं, तो वे समाज के हर तबके की आवाज बनती हैं और न्याय, समता और विकास की दिशा में ठोस कदम उठाती हैं. इसलिए, हमें महिला नेतृत्व को बढ़ावा देने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए ताकि एक अधिक समृद्ध, समान और न्यायसंगत समाज की स्थापना हो सके.

रवि कांत
मुख्य प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय अमृतसर

राजभाषा हिन्दी का महत्व एवं योगदान

हिन्दी शब्द की निष्पत्ति सिन्धु- सिन्ध से हुई है क्योंकि ईरानी भाषा में 'स' को 'ह' बोला जाता है. इस प्रकार हिन्दी शब्द सम्पूर्ण में सिन्धु शब्द का प्रतिरूप है. कालांतर में हिन्द शब्द सम्पूर्ण भारत का पर्याय बनकर उभरा. इसी हिन्द से हिन्दी शब्द बना है. आज हम जिस भाषा को हिन्दी के रूप में जानते हैं वह आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं में से एक है. हिन्दी भाषा की महिमा को निम्न पंक्तियों में दर्शाया गया है-

जन- जन की भाषा है हिन्दी, भारत की आशा है हिन्दी.
जिसने पूरे देश को जोड़े रखा है, वो मजबूत धागा है हिन्दी.
हिन्दुस्तान की गौरव- गाथा है हिन्दी, एकता की अनुपम परम्परा है हिन्दी
जिसमें काल को जीत लिया, ऐसी कालजयी भाषा है हिन्दी.
सरल शब्दों में कहा जाए तो, जीवन की परिभाषा है हिन्दी.

स्वतंत्रता मिलने पर संविधान सभा ने एकमत से यह निर्णय लिया कि, ''हिन्दी भारत की राजभाषा होगी और लिपि देवनागरी होगी. साथ ही सोलह प्रादेशिक भाषाओं को भी मान्यता दी गई" वर्तमान में बाईस भाषाओं को आठवीं अनुसूची में सम्मिलित किया गया है जो भारत के विभिन्न क्षेत्रों को रेखांकित करती है. संविधान के भाग 17 के अध्याय 1 की धारा 343 (1) के अनुसार, ''संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी."

राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के अनुरोध पर सन् 1953 से 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष राष्ट्रीय- स्तर पर हिन्दी दिवस के रूप मनाया जाता है जो कि सभी हिन्दी प्रेमियों व हिन्दी भाषियों के लिए आत्मगौरव व हिन्दी के गौरव की पराकाष्ठा का विषय है.

हिन्दी के विभिन्न रूपों को हम इस प्रकार देख सकते है-

''हिन्दी मेरी भाषा है, हिन्दी मेरी आशा है,
हिन्दी का उत्थान करना, यही मेरी जिज्ञासा है,
हिन्दी की बोली अनमोल, एक शब्द के कई विलोम,
हिन्दी हिन्द हिमालय पर, ऊंचे आसन वाली है,
हिन्दी जयहिन्द और वन्देमातरम् के उच्चारण वाली है."

हिन्दी को राजभाषा का गौरव प्राप्त है. राजभाषा का अर्थ देश के प्रशासनिक व राजकीय कार्य- व्यापार जिस भाषा में होते हैं, वह राजभाषा कहलाती है.

भारत एक बहुभाषी देश है. भारत में अनेक धर्मों को मानने वाले, अनेक भाषाओं और बोलियों को बोलने वाले, अलग- अलग जातियों के लोग अपनी- अपनी स्वतंत्रता के साथ रहते हैं. भारत के सभी नागरिकों को चाहे वे किसी भी क्षेत्र के निवासी हों, किसी भी धर्म के उपासक हों, किसी भी भाषा में बोलने वाले हो, हमें एक बात खुले दिमाग से सोचनी होगी कि निज भाषा की स्वतंत्रता राष्ट्रीय स्वतंत्रता से भी अधिक महत्वपूर्ण है. राष्ट्र तो किसी भी क्रांति की लहर से स्वतंत्र हो सकते हैं किंतु भाषा के पराधीन होने पर उसकी मुक्ति कठिन हो सकती है. उदाहरण के लिए हम भारतीय आजादी के 78 वर्षो की स्वाधीनता के पश्चात भी अपनी भाषा को अंग्रेजी दासता से मुक्त नहीं करवा पाये. अत: भाषा की स्वतंत्रता राष्ट्र की स्वतंत्रता से अधिक महत्वपूर्ण है. अत:

''देश वही होता है जिसकी कोई होती अपनी भाषा,
भाषा वह जिसमें सब व्यक्त करें अभिलाषा,

यह अमीर खुसरो की बोली, है कबीर की वाणी,
मीरा की है पीर इसी में और नेह रसखानी."

हिन्दी भारत की राजभाषा तथा सम्पर्क भाषा है. यह भारत में 28 करोड़ लोगों की मातृभाषा तथा 30 करोड़ लोगों की सम्पर्क भाषा है. हिन्दी पूर्णतया वैज्ञानिक भाषा है. इसके उच्चारण और लेखन में एकरूपता है. राजभाषा हिन्दी को अपने वर्तमान स्वरूप तक आने के लिए कई कालखंडों से होकर गुजरना पड़ा है. यदि हम इन कालखंडों पर नजर डालें तो 769 ई. में पहले हिन्दी साहित्य (दोहा कोश) की रचना, 1100 ई. में आधुनिक देवनागरी लिपि का जन्म, 1826 ई. में कलकत्ता से पहला हिन्दी समाचार पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन, 1913 ई. में दादासाहेब फाल्के द्वारा पहली हिन्दी फिल्म 'राजा हरिश्चन्द्र' का निर्माण, 1929 ई. में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने प्रथम वास्तविक हिन्दी- साहित्य का इतिहास लिखा, 1931 ई. में पहली बोलती फिल्म 'आलमआरा' का निर्माण हुआ, 14 सितम्बर, 1949 को हिन्दी को भारत की राजभाषा घोषित किया गया एवं राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के अनुरोध पर सन् 1953 से 14 सितम्बर को प्रतिवर्ष 'हिन्दी- दिवस' के रूप में मनाया जाता है.

मनुष्य के मानसिक और बौद्धिक विकास के लिए भी राष्ट्रभाषा आवश्यक है. मनुष्य चाहे जितनी भी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर ले परन्तु अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए उसे अपनी भाषा की ही शरण लेनी पड़ती है. ऐसा करने से उसे मानसिक संतोष का अनुभव होता है. इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने के लिए भी राष्ट्रभाषा की आवश्यकता होती है. राजभाषा हिन्दी एकता, भावना और प्रेम की भाषा है. स्वतंत्रता संग्राम के दौरान इस भाषा ने राष्ट्र को संगठित कर एकता के सूत्र में बांधने का जो महान ऐतिहासिक कार्य किया है, वह स्वर्णाक्षरों में अंकित है. राजभाषा हिन्दी बाजार, वाणिज्य और व्यवसाय की भाषा है. आज राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी का वटवृक्ष निरन्तर बढ़ रहा है. कम्प्यूटर (संगणक) के लिए यह सर्वथा उपयुक्त भाषा है. आज विश्व के 150 से भी अधिक शिक्षण- संस्थानों व संगठनों में हिन्दी के अध्ययन व अध्यापन का अभियान चलाया जा रहा है. हिन्दी के कारण ही भारत के सिनेमा को वैश्विक पहचान मिली है. कम्प्यूटर के लिए हिन्दी के नये- नये सॉफ्टवेयर बनाए जा रहे हैं. हिन्दी विज्ञान, तकनीकी ज्ञान व कार्यालयीन प्रयोग में पूर्णत: समर्थ है. राजभाषा विभाग द्वारा हिन्दी में कार्य करने हेतु विभिन्न ई- टूल्स का निर्माण करवाया जा रहा है. नये- नये शब्दकोशों का निरन्तर विकास किया जा रहा है. इस प्रकार हिन्दी भाषा की लिपि विश्व की सर्वाधिक लोकप्रिय और सर्वमान्य लिपि है.

राष्ट्र - निर्माण में हिन्दी का महत्वपूर्ण योगदान है. भाषा और राष्ट्र दोनों एक- दूसरे के पूरक हैं. भाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है. हिन्दी ही एकमात्र ऐसी भाषा है जो पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधकर रख सकती है. कहा भी गया है-

"रंग अनेक, तिरंगा एक है,
प्रांत अनेक, भारत एक है,
समाज अनेक हैं, देश एक है,
उसी प्रकार भाषाएं अनेक हैं, राजभाषा हिन्दी एक है."

भारतीय भाषाओं के सर्वेक्षक डॉ. देवी सिंह का कहना है कि भाषाओं के क्षेत्र में हम यूरोप के देशों से 3 से 4 गुणा आगे हैं. यूरोप के देशों में 250 से अधिक भाषाएं नहीं बोली जाती हैं जबकि सम्पूर्ण भारत वर्ष में 850 से अधिक भाषाएं बोली जाती हैं. असम भारत का एक ऐसा राज्य है जो कि आकार में इंग्लैंड के बराबर ही है, वहां लगभग 52 भाषाएं बोली जाती हैं.

हिन्दी सिर्फ एक भाषा नहीं, हमारे राष्ट्र की पहचान है.
हिन्दी हम हिन्दी हैं, हिन्दी का हम सबकों अभिमान है,
हिंदुस्तानी हैं हम, गर्व करो हिन्दी भाषा पर,
उसे सम्मान देना और दिलाना है, कर्तव्य है हम पर..

पश्चिम के समृध्द देशों में भारतीयों के द्वारा हिन्दी- भाषा के वटवृक्ष को सबल बनाया जा रहा है. आज हिन्दी- परिवार बहुत विराट एवं विशाल है. नेपाल, श्रीलंका, बर्मा तथा चीन के लिए हिन्दी सद्भाव की भाषा रही है. अफ्रीका, यूरोप, आस्ट्रेलिया आदि के लिए हिन्दी प्रजातंत्र की भाषा है. वर्तमान समय में अमेरिका, जापान, जर्मनी, कनाडा आदि देशों में प्रवासी हिन्दी साहित्य का अपने नए स्वरूप में तेजी से सृजन हो रहा है. प्रमुख शिक्षाविद भारत के पूर्व राष्ट्रपति भारतरत्न डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने कहा था-

"जो लोग अपनी भाषा, संस्कृति और गौरव को नहीं जानते तथा जिन पर पश्चिमी सभ्यता का रंग चढ़ा है, वे भारतीय नहीं, भटके हुए मुसाफिर है."

हिन्दी भाषा हमें विविधता में एकता का संदेश देती है. हिन्दी भाषा राष्ट्र की सामाजिक एवं सांस्कृतिक एकता की पक्षधर है. सामाजिक संस्कारों, मूल्यों एवं सम्पूर्ण मानव जाति के न्याय के लिए लम्बे समय से हिन्दी- भाषा ने अन्तर्राष्ट्रीय- स्तर पर जो पहचान बनाई है उसे देखकर निर्भीक रूप से यह कहा जा सकता है कि हिन्दी अपने विस्तृत रूप में साकार होकर प्रथम भाषा के रूप में अवश्य स्थापित होगी.

"भाषा- संस्कृति प्राण देश के,
इनके रहते राष्ट्र रहेगा,
हिन्दी का जयघोष गुंजाकर,
भारत मां का मान बढ़ेगा."

एस. वी. जे. साईं कुमार
सहायक प्रबंधक
आंचलिक कार्यालय, रायपुर

महिला नेतृत्व

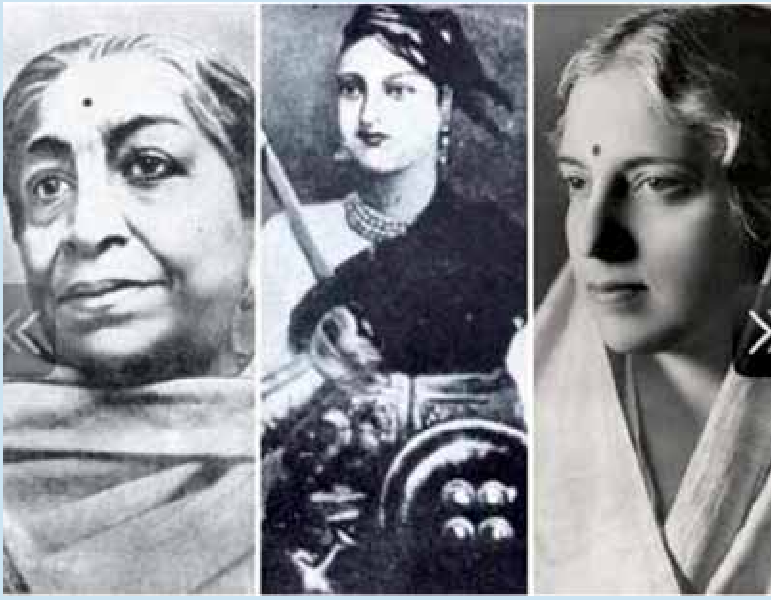

नेतृत्व एक ऐसा गुण हैं जो आपको जन्म से नहीं मिलता है, यह आपमे धीरे- धीरे विकसित होता है. नेल्सन मंडेला, एमएलके, महात्मा गांधी और अब्राहम लिंकन जैसे प्रसिद्ध विश्व नेताओं ने अपनी नेतृत्व कला से इतिहास के पन्नो में जो छाप छोड़ी है, उसका जिक्र आज भी होता है और वैश्विक स्तर पर ही क्यों? हमारे देश भारत वर्ष को आजादी दिलाने में अनेक महान नेताओं का योगदान रहा है, जिनमें कई महिला नेत्री भी शामिल थी. जैसे रानी लक्ष्मीबाई, सरोजनी नायडू, भीकाजी कामा, मातंगिनी हाजरा और भी कई सारी महान हस्तियाँ जिनके योगदान के बिना भारतवर्ष शायद ही आजाद हो पाता. जिस समय महिलाओ का घर से बाहर निकलना मुश्किल होता था उस समय यह महान हस्तियां समाज की बेडियां तोडकर आगे आई और अपने जीवन को पूरी तरह से आजादी दिलाने में समर्पित कर दिया. यदि हम इतिहास के पन्नों को थोड़ा और पलटकर देखें तो हम यह देख पाएंगे कि प्राचीन भारतीय संस्कृति में महिलाओं को पुरुषों के बराबर माना जाता था और लिंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता था. महिलाओं को समाज द्वारा उचित सम्मान दिया जाता था, यहां तक कि हिंदू लिपियों में भी महिलाओं को देवी का दर्जा दिया गया है. परंतु मध्यकाल आते-आते महिलाओं की स्थिति बिगड़ने लगी. महिलाएं सति प्रथा, पर्दा प्रथा आदि प्रथाओं की शिकार होती गई. लेकिन महिलाएं पीछे नहीं हटी वे पितृसत्तात्मक समाज के विरूद्ध खड़ी रही और स्थिति में बदलाव लाने की पूर्ण कोशिश की और काफी हद तक सफल भी रहीं. आज महिलाओं की स्थिति काफी बेहतर हैं.

वे दिन अब बीत चुके हैं, महिलाएं अब आत्म- निर्भर होने लगी हैं. जैसे-जैसे महिलाएं उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही हैं और अधिक प्रमुख पदों पर कार्यरत हो रही हैं, पारिवारिक संगठनों में उनकी नेतृत्वकारी भूमिकाएँ बढ़ रही हैं. कई युवा महिलाएँ ''ज्येष्ठाधिकार'' (नेल्टन, 1999) के नियम को स्वीकार करने से इनकार कर रही हैं. ज्येष्ठाधिकार को जन्मसिद्ध अधिकार या विरासत के रूप में परिभाषित किया जाता है. हालाँकि महिलाएँ इस क्षेत्र में बहुत आगे बढ़ रही हैं, फिर भी वहाँ यह भावना है कि बेटे को पहले और बेटी को दूसरे विकल्प के रूप में माना जाना चाहिए, केवल तभी जब कोई बेटा न हो या बेटा प्रस्ताव को अस्वीकार कर दे. लेकिन, नेल्टन का कहना है कि, ''युवा महिलाओं को लगता है कि अगर वे पारिवारिक व्यवसाय में जाना चाहती हैं, तो अवसर मौजूद है.'' नेल्टन द्वारा वर्णित प्रत्येक मामले में, पिताओं ने अपनी बेटियों को पारिवारिक व्यवसाय में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित किया. साथ ही, प्रत्येक पिता ने अपनी बेटी को सीईओ नामित किए जाने के बाद उसे ही काम चलाने दिया- जो समर्थन का सबसे पक्का संकेत है (नेल्टन, 1999). अधिक से अधिक परिवारों और सामान्य रूप से व्यवसाय में, लिंग कोई मुद्दा नहीं रहा है. जैसे-जैसे घरेलू मोर्चे पर भूमिकाएँ तेज़ी से बदल रही हैं, व्यापार जगत जल्द ही पारिवारिक संरचना में होने वाले बदलावों को प्रतिबिंबित करेगा. नेल्टन नेतृत्व की भूमिका में महिलाओं से यह भी आग्रह करती हैं कि वे अंतिम परिणाम पर ध्यान न दें. वह कहती हैं कि ''महिलाओं के लिए लोगों के प्रबंधन में फंसना आसान है'' (नेल्टन, 1999). वह आगे कहती हैं कि अगर आप यह साबित नहीं कर सकते कि आप भी लाभ-प्रेरित हैं,

तो आप कभी भी उत्तराधिकारी के स्तर तक नहीं पहुँच पाएँगे. परंतु महिलाएं सबको गलत साबित करके आगे बढ रही हैं.

ऑस्ट्रिया, यू.के., अर्जेंटीना और अन्य देश नेतृत्व में सबसे अधिक महिलाओं वाले शीर्ष सूचीबद्ध देशों में शामिल हैं. ऑस्ट्रेलियाई चैंबर ऑफ लेबर ने पर्यवेक्षी बोर्डों में महिलाओं और पुरुषों के बीच समानता पर अधिनियम को एकीकृत किया. जिसके बाद देश में कंपनियों के पर्यवेक्षी बोर्डों में महिलाओं की हिस्सेदारी में 22.4% की वृद्धि देखी गई. इसके बाद के परिणाम को बहुत ही उत्पादक और सकारात्मक माना गया. यह देखा जा सकता है कि नेतृत्व के पदों पर महिलाओं को शामिल करने और उनकी संख्या बढ़ाने से ऑस्ट्रिया को प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त मिली. महिलाओं को वैश्विक स्तर पर आगे बढ़ने के लिए सशक्त बनाने के लिए विभिन्न देशों में ऐसे विनियामक अधिनियमों को लागू करना महत्वपूर्ण है. यह उन कंपनियों के ठोस सबूतों से देखा जा सकता है, जिनमें महिलाएँ नेतृत्वकर्ता के रूप में हैं. मैकिन्से एंड कंपनी की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि जिन कंपनियों में ज़्यादा महिलाएँ थीं, उन्हें बिक्री पर रिटर्न में 42% की वृद्धि का अनुभव हुआ. साथ ही, जिन कंपनियों में सिर्फ़ पुरुष बोर्ड थे, उनकी तुलना में निवेशित पूंजी पर रिटर्न में 66% की वृद्धि देखी गई. आर्थिक और वित्तीय लाभों के अलावा, नेतृत्व में अधिक महिलाओं का होना महिला सशक्तिकरण को भी बढ़ावा देता है. यह आने वाली पीढ़ियों की महिलाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बन जाता है. वे महिलाओं को ऐसे उच्च स्तरों पर सफल होते हुए देखती हैं जो उन्हें और भी बेहतर करने के लिए प्रेरित करता हैं.

अब जबकि हमने नेतृत्व में महिलाओं के महत्व को देखा है, तो इस पर काम करना महत्वपूर्ण है. एक महिला की क्षमता को स्वीकार करना इस प्रयास में पहला कदम है. न केवल कंपनियों में, बल्कि हर संस्थान में सभी की राय का समान रूप से सम्मान करना महत्वपूर्ण है. संगठनों के उदाहरणों से सीखना दक्षता और टीम के प्रदर्शन को बढ़ाने का सबसे अच्छा तरीका है. और रहीं बात महिला नेतृत्व की तो हमारी माँ जो पूरे घर को अकेले ही संभालती है तो उससे अच्छा महिला नेतृत्व का उदाहरण और कहां मिल सकता है?

श्री विद्या भूषण कुमार
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय बरपेटा रोड

महिला नेतृत्व

महिला नेतृत्व एक ऐसा विषय है, जो आज के समय में बहुत ही महत्वपूर्ण है. यह न केवल महिलाओं के लिए सशक्तिकरण का प्रतीक है, बल्कि समाज में एक नई दिशा देने का भी काम करता है. ऐतिहासिक रूप से देखा जाए तो महिलाओं को सदैव समाज के द्वितीय स्तर पर रखा गया है. परंतु समय के साथ-साथ महिलाओं ने अपनी काबिलियत और नेतृत्व की क्षमता से यह साबित कर दिया है कि वे भी समाज को सही दिशा देने में सक्षम है.

महिला नेतृत्व की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि यह समाज में विविधता और समावेशन को बढ़ावा देता है. जब महिलाएं नेतृत्व की भूमिका में होती है, तो वह न केवल महिलाओं के मुद्दों को समझती है, बल्कि समग्र विकास की दिशा में कार्य करती है महिला नेता संवेदनशीलता और सहानुभूति के साथ समाज के विभिन्न मुद्दों को समझती हैं और उनके समाधान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है.

राजनीति में महिलाओं की भागीदारी ने लोकतांत्रिक प्रक्रिया को और अधिक समृद्ध बनाया है. इंदिरा गांधी से लेकर वर्तमान में कई महिला मुख्यमंत्री और सांसद हैं, जिन्होंने समाज और राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है. इसके अलावा सामाजिक क्षेत्र में भी महिलाएं नेतृत्व कर रही है. कई गैर सरकारी संगठन और सामाजिक संस्थाओं में महिलाओं का नेतृत्व यह दर्शाता है कि समाज की समस्याओं का समाधान खोजने में अग्रणी भूमिका निभा रही है. देश को आजाद करने में भी रानी लक्ष्मीबाई, ज्योतिबा फुले ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई हैं.

महिलाएं आज आर्थिक क्षेत्र में भी अपनी छाप छोड़ रही है. कई कंपनियों और स्टार्टअप्स की कमान महिलाओं के हाथों में है.भारत में विभिन्न कंपनियों के मुख्य कार्यकारी अधिकारी महिलाएं हैं जिनमें से कुछ है; लीना नायर, रोशनी नडार, किरण मजूमदार शॉ, फाल्गुनी नायर, जयश्री उल्लास, मेघाना पंडित आदि साथ ही सबसे महत्वपूर्ण वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण. इनके नेतृत्व में न केवल संगठन विकास के लिए सहायक है, बल्कि वह अपना नेतृत्व गुणों से समाज में प्रेरणा का स्रोत भी बनती है. महिला उद्यमी अपनी मेहनत, काबिलियत और दृष्टिकोण से यह सिद्ध करती रही है कि वे भी किसी से कम नहीं है.

महिला नेतृत्व का एक महत्वपूर्ण पहलू है उनकी संचार क्षमता.वे संवाद और भाषा के माध्यम से लोगों से जुड़ने में सक्षम होती है. हिंदी भाषा में महिला नेताओं का योगदान विशेष रूप से सराहनीय है. वह अपनी मातृभाषा के माध्यम से समाज के विभिन्न वर्गों तक अपनी बात पहुंचाने में सक्षम होती है. इससे न केवल महिलाओं को प्रेरणा मिलती है, बल्कि यह समाज में भाषा और संस्कृति के प्रसार का भी माध्यम बनता है. महिलाएं ऊर्जा से लबरेज, दूरदर्शिता, जीवंत उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ सभी चुनौतियों का सामना करने में सक्षम है. भारत के प्रथम नोबेल पुरस्कार विजेता रविंद्र नाथ टैगोर के शब्दों में ''हमारे लिए महिलाएं न केवल घर की रोशनी है बल्कि इस रोशनी की लौ भी है" अनादि काल से ही महिलाएं मानवता की प्रेरणा की स्रोत रही है.

महिला नेतृत्व को आज भी कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है. पारिवारिक जिम्मेदारियां, समाज की रूढ़िवादी सोच और कार्य स्थल पर भेदभाव जैसी समस्याएं उनके नेतृत्व के मार्ग में बाधा बनती है.फिर भी महिलाएं अपने आत्मविश्वास और साहस के बल पर इन चुनौतियों का सामना कर रही है. महिलाओं में जन्मजात नेतृत्व गुण समाज के लिए संपत्ति है. प्रसिद्ध अमेरिकी धार्मिक नेता ब्रिघम यंग ने ठीक ही कहा है कि ''जब आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं तो आप एक आदमी को शिक्षित करते हैं, जब आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप एक पीढ़ी को शिक्षित करते हैं'' इसलिए आज के समय में महिलाओं को शिक्षित करना एक परिवार के लिए ,एक समाज के लिए और एक राष्ट्र के लिए अत्यंत आवश्यक हैं.

महिलाओं ने समस्याओं का सामना करते हुए भी समाज और देश के उत्थान में कोई कसर नहीं छोड़ी है.

महिलाएं परिवार बनती है, परिवार घर बनता है
घर समाज बनता है और समाज ही देश बनता है

महिला नेतृत्व समाज के विकास का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है. यह न केवल महिलाओं के सशक्तिकरण का प्रतीक है, बल्कि समाज में नए ऊर्जा दृष्टिकोण को लाने के माध्यम है. आज जब हम महिला नेताओं को विभिन्न क्षेत्रों में सफलता के शिखर पर देखते हैं. यह स्पष्ट है कि महिला नेतृत्व समाज को आगे ले जाने में सक्षम है.हमें महिलाओं के नेतृत्व को प्रोत्साहित करना चाहिए और उनके योगदान को मान्यता देनी चाहिए ताकि हमारा समाज और राष्ट्र सशक्त और प्रगतीशील बन सके.

सोनवीर सिंह
प्रबंधक
सिविल लाइंस शाखा, आगरा

कोई भी वस्तु महान का आश्रय पाकर उत्कर्ष प्राप्त करती है - हर्ष

हमारे विभिन्न आंचलिक कार्यालयों द्वारा ''स्वच्छता ही सेवा'' अभियान के तहत आयोजित गतिविधियां

अहमदाबाद

चंडीगढ़

पुणे

पटना

रायपुर

लखनऊ

कोलकाता

हमारे विभिन्न आंचलिक कार्यालयों द्वारा "स्वच्छता ही सेवा" अभियान के तहत आयोजित गतिविधियां

हैदराबाद

गुवाहाटी

दिल्ली

भोपाल

मुंबई

चैन्नै

महिला नेतृतव एक कसौटी एक हौसला

जब महिला नेतृत्व की बात चलती है या मुझे अगर इस पर कुछ लिखना है तो स्वाभाविक है कि एक महिला होने के नाते मेरे अपने अनुभव इस विषय को ज्यादा बेहतर तरीके से विस्तारित कर पाएंगे.

नेतृत्व एक ऐसा शब्द है जो सिर्फ किसी संस्था तक ही सीमित नहीं है नेतृत्व घर से शुरू होता है, और फिर परिवार, समाज, शहर, संस्था, देश और विश्व तक जाता है.

आसान तो बिलकुल नहीं है विश्व की इस आधी आबादी को नेतृत्व का अधिकार देना, फिर भी अगर महिलाएं नेतृत्व करने की उस सीमा तक पहुँच जाती है तो निश्चित ही इतिहास तो रच ही देती है. इतिहास में ऐसे सैकड़ों उदाहरण दर्ज़ है, जहां महिलाओं ने अपनी खामियों से ज्यादा खूबियों के लिए अपने विरोधियों को भी चमत्कृत किया है.

मैं अपनी बात करूं तो बहुत ही छोटे से शहर और रूढ़िवादी परिस्थितियों में बचपन बीता पढ़ने का शौक था पिताजी ने प्रोत्साहित किया और मेरी उच्च शिक्षा 1987 में सागर विश्वविद्यालय में हुई जहां से मैंने तकनीकी (इलेक्ट्रॉनिक्स) में परास्नातक की डिग्री प्राप्त की उस समय मेरे साथ सिर्फ एक और लड़की थी जो मेरी कक्षा में मेरे साथ थी बाकी सभी लड़के साथी थे, किन्तु पिताजी के प्रोत्साहन से मैंने अपनी शिक्षा पूर्ण की, उसके बाद मैंने बैंक की परीक्षा पास कर अपने पैरों पर खड़ी हो गई, उसके बाद परिवार ही नहीं अपने आस पास अपने परिवार की हर लड़की को मेरे जैसा आत्मनिर्भर बनना था, और लगभग इन पिछले 20 से 30 सालों में, लड़कियों के आत्मनिर्भर बनने का प्रतिशत बहुत ज्यादा रहा है, मैं अपने परिवार में सबसे बड़ी थी, मुझे बहुत संघर्ष करना पड़ा, पढ़ने के लिए नौकरी करने के लिए, किन्तु जब मैंने रास्ता बना लिया तो फिर उस रास्ते पर परिवार की अन्य लड़कियों को चलना आसान हो गया, घर के सदस्यों की मानसिकता में भी परिवर्तन स्पष्ट रूप से आ ही गया, कि घर की लड़कियां घर से बाहर निकल कर कार्य कर सकती है.

ये मेरा सबसे पहला नेतृत्व था, फिर मेरा पहनावा बदला, जो मुझे सुविधाजनक लगा और जो मेरे परिवेश के अनुकूल रहा, मैंने पहना, मैंने गाड़ी चलना सीखा, छोटी स्कूटी भी, बड़ी मोटर साइकल भी,और फिर कार चलाना भी, जैसा कि मैं पहले भी बता चुकी हूँ की महिला नेतृत्व की बात करू तो मैं स्वयं को ही सामने रखूंगी.

समय बीतता गया परिस्थितियाँ हमेशा की तरह अनुकूल नहीं रहीं, और प्रतिकूल परिस्थितियों में मैंने एक और निर्णय लिया, नौकरी में पदोन्नति का, अब मैं अपने परिवार से भी दूर थी स्वास्थ की दृष्ठि से भी मैं बहुत कमजोर हो चुकी थी. इन परिस्थितियों मैं मेरा पदोन्नति का निर्णय सहज नहीं था, मैंने घर छोड़ दिया अब मुझे परिवार से अलग अपना रास्ता तय करना था, फिर नई चुनौतियाँ थी, चलती गई, नहीं सोचा परिणाम क्या होगा, बस सामने जो था उस काम को करना था, और सबसे बेहतर करना था, डर किसी भी बात से कभी लगा नहीं, क्योंकि खुद पर भरोसा था, गलत कुछ नहीं करूंगी, तो गलत कुछ होगा भी नहीं.

समय को तो गुजरना ही था, गुजर ही रहा था, मैंने फिर एक और पदोन्नति ली, अबकी बार चुनोतियाँ पहले से ज़्यादा थी.

अब मैंने नई पहचान, नई चुनौतियों, और नए आयाम के साथ, एक नई शुरुआत की, मैं लगातार खुद को साबित कर रही थी, मैं लगातार अपनी एक पहचान बना रही थी, और सफल भी थी,

मुझे किसी भी तरह की हिचक डर या असमंजस की स्थिति से नहीं गुजरना पड़ा, जो सामने था बस उसका सामना करना था, उन की चुनौतियों को हल करना था और परिणाम तक पहुंचना था,

तरीका गलत नहीं हो सकता था, किंतु हर किसी को पसंद आ जाए, या हर कोई उस से संतुष्ट हो ऐसा भी नहीं था, पुरुष प्रधान समाज है, एक महिला का नेतृत्व बहुत जल्द स्वीकार नहीं हो सकता था, मगर समय के साथ हमारी स्वीकार्यता स्पष्ट हो ही जाती है ,ऐसा ही हुआ लोगों ने मेरे नेतृत्व को स्वीकार कर ही लिया, मैंने लगातार अपनी संस्था का नेतृत्व किया, अपने बारे में इतना कुछ कहने का तात्पर्य इतना है कि मैं एक साधारण सी लड़की/ महिला ने अपने विचारों में अपनी सोच को अपने लिए एक नेतृत्व दिया और क्योंकि नेतृत्व सिर्फ किसी संस्था देश या किसी पद का नहीं होता.

नेतृत्व तो विचारों का, सोच का, परंपराओं का, बदलाव का, दृढ़ता का, विश्वास का, पहचान का, और सबसे बड़ी बात है कि स्वीकार्यता का होता है और मेरी परिस्थितियां प्रतिकूल रही.

ऐसी परिस्थितियां लगभग हर महिला की होती है जिसकी परिस्थितियां अनुकूल नहीं होती, वह हमेशा संघर्ष करती है, अपनी स्वीकार्यता के लिए, और अधिकतर वह सफल भी होती है, बेहद विषम परिस्थितियों में किसी महिला की दृढ़ता लोहे सी मजबूत होती है, शारीरिक रूप से भले ही उसका बल कम हो, किंतु आत्म बल उसे शारीरिक और मानसिक रूप से बेहद मजबूत बनाता है, इन सब के बावजूद, एक नकारात्मक पहलू यह भी है कि एक महिला ही दूसरी महिला को स्वीकार नहीं करती, यहाँ तक की वह स्वयं को स्वीकार नहीं करती, वह तब तक नेतृत्व नहीं करती जब तक की परिस्थितियां पूर्ण रूप से प्रतिकूल न हो जाए, यह नारी की सबसे बड़ी विडंबना है, एक महिला ने स्वयं को सिर्फ उसके बाहरी स्वरूप तक ही स्वीकार किया है, जबकि ईश्वर प्रदत्त वह शारीरिक बनावट के साथ ही साथ वह उसके आंतरिक स्वरूप में कहीं ज्यादा विशाल सौंदर्य परक और मजबूत है, जिसका परिष्कृत होना अत्यंत आवश्यक है और जिन महिलाओं ने अपने आंतरिक स्वरूप को परिष्कृत किया है, उन्होंने बेहद शानदार नेतृत्व भी किया है न केवल स्वयं का, बल्कि समाज का, पीढ़ी का, धारणाओं का, परंपराओं और संस्कृति का, देश का, निश्चित तौर पर उन्होंने अपनी

छाप छोड़ी है, आदिकाल से ही जब सामाजिक व्यवस्था स्त्री सत्तात्मक थी तब से ही समाज की कमान महिलाओं ने अपने हाथ में लेकर समाज को दिशा प्रदान की है, हमारे धार्मिक अनुष्ठान हो या सामाजिक परिवेश स्त्रियों को सर्वप्रथम दर्जा दिया ही गया है, कई मनीषी स्त्रियां कालांतर में अपने नेतृत्व की छाप छोड़ चुकी है, प्राचीन काल से ही महिलाओं ने अपनी नेतृत्व क्षमता का लोहा मनवाया है, फिर चाहे वो पौराणिक पात्र हो, राजनैतिक, सामाजिक, या अन्य कोई भी क्षेत्र हो, ऐसे अनेकों उदाहरणों से इतिहास भरा पड़ा है. पौराणिक काल में जब स्त्री सत्ता को चुनौती देते हुए पुरुषों ने उन्हें कमतर साबित करने की कोशिश की तो ठगार्गीठ जैसी महान विदुषी ऋषि कुमारी ने महर्षि याज्ञ वलक्य से शास्त्रार्थ कर उन्हें पराजित कर अपना लोहा मनवाया जबकि हर कोई जानता था ,कि महर्षि याज्ञ वलक्य को शास्त्रार्थ में पराजित करना असंभव कार्य है, किन्तु महिलाओं ने हमेशा असंभव को ही तो संभव किया है.

यह उपनिषद काल की घटना है, कालांतर में ऐसे ही उदाहरणों से इतिहास के पन्ने रोशन है, हर क्षेत्र में फिर वो साइंस हो तो तुरंत ही नाम याद आता है मेडम क्यूरी का फ्रांस की इस महिला ने पहली बार दो नोबल पुरस्कार जीते भौतिकी ओर रसायन दोनों में उन्होंने रेडियो एक्टिव तत्व पोलोनियम और रेडियम की खोज की जिसके बिना आज का विज्ञान उन्नत होना संभव नहीं था.

भारत की बात करें तो पौराणिक काल से लेकर आज तक कितने उदाहरण हमारे आस पास ही रहे है.

दिल्ली सल्तनत का नेतृत्व रज़िया सुल्तान ने किया उस कालखंड की पहली महिला शासक, रानी अहिल्या बाई, उनकी समकक्ष रानी लक्ष्मीबाइ, रानी पद्मिनी, हाड़ा रानी, हर समय हर काल खंड में महिला नेतृत्व ने चमत्कृत किया है, पूरे भारत ही नहीं विश्व ने उनकी दृढ़ता का लोहा माना है, स्वतंत्रता के लिए घरों के अंदर हो या बाहर उनके योगदान को भूलना असंभव है, स्वतंत्रता उपरांत कुछ नाम श्रीमती विजय लक्ष्मी पंडित संयुक्त राष्ट्र संघ में भारत की महिला प्रतिनिधि वैश्विक मंच पर देश का नेतृत्व करती एक विदुषी, श्रीमती सरोजिनी नायडू पहली महिला राज्यपाल, श्रीमती किरण बेदी पहली महिला आईपीएस अधिकारी, श्रीमती अमृत कौर संविधान सभा की महिला प्रतिनिधि, श्रीमती इन्दिरा गांधी देश की पहली महिला प्रधान मंत्री, उन्हीं के समकक्ष श्रीलंका की प्रधान मंत्री श्रीमती सीरीमाओ भंडारनायके ब्रिटेन की प्रधान मंत्री मारग्रेट थेचर ये तीनों प्रधान मंत्री कालखंड में लौह महिला के रूप में जानी गई उनकी दृढ़ता उनकी दृढ़ इक्षा शक्ति का लोहा उनके देश में ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में माना गया. हमारा मंगल मिशन महिला वेज्ञानिकों के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ. हमारा चन्द्र मिशन भी महिला वैज्ञानिकों के कुशल नेतृत्व में सम्पन्न हुआ.

ऐसे कितने नाम है जहां महिलाओं की दृढ़ता कुशलता और सबसे महत्वपूर्ण है कि उनकी एक साथ कई कार्यो को कुशलता से संचालित करने की प्रतिभा /क्षमता वे घर और बाहर दोनों जगह कुशलता से कार्य करने में महारथ रखती है.

महिलाएं ईमानदार होती है न केवल चारित्रिक रूप से बल्कि अपने कार्य के प्रति भी उनकी तार्किकता और दृढ़ता निसंदेह ध्यानाकर्षण करती है, यूं ही नहीं उन्हें शक्ति स्वरूपा कहा जाता है.

अपने पर आ जाएं तो प्रलय से भी दो-चार हाथ करने से ना चूकें हां वह हताश हो जाती है जब स्वयं महिलाएं ही उनकी दुश्मन हो जाती हैं,जब वह ही उन्हें पीछे धकेलने, खींचने, और गिराने में प्रयासरत हो जाती है.

यह पूरी महिला जाति का अपमान करने जैसा है. घर हो बाहर हो कहीं भी स्वयं महिलाओं ने ही महिलाओं को नीचे गिराने का प्रयत्न किया है जिसका फायदा पुरुषों ने खूब उठाया है.

अगर आप ध्यान दें तो आजकल महिलाओं पर अत्याचार अपनी सीमा लांघ चुके हैं, इसका क्या कारण है ? मेरे नजरिया से यदि देखा जाए तो वह पुरुषों की बौखलाहट है, जो नहीं चाहती कि महिलाएं अपना मुकाम हासिल करें, और यही बौखलाहट उन्हें महिलाओं को प्रताड़ित करने की वजह देती है, फिर चाहे वह शारीरिक रूप से हो, या मानसिक रूप से, हास्य व्यंग्य से, या तानों से, महिलाओं को नीचा दिखाने से उनके पुरुषत्व को उनके अहंकार को पुष्टि मिलती है.

वह पोषित होता हैं, यह दिखाकर कि हम आज भी महिलाओं से श्रेष्ठ हैं जबकि सच तो यह है कि महिला की एक जोरदार चीख पुरुष को अपने कदम पीछे हटने पर मजबूर कर देती है, और यह सर्वमान्य सत्य भी है पुरुष बल सिर्फ कमजोर महिला पर ही लगता है. यदि बराबरी की किसी महिला पर आक्रमण हो तो वह महिला बहुत भारी पड़ सकती है.

उपसंहार :- उक्त पूरे लेख में मेरे अपने अनुभव से मेरे व्यक्तिगत विचार मुझे यही धारणा बनाने को मजबूर करते हैं कि महिला नेतृत्व हमेशा श्रेष्ठ साबित हुआ है अगर उसे मौके नहीं मिले तो उसने मौके बनाए हैं,

किंतु अपने लक्ष्य को हासिल किया जरूर है.उसने अपने शरीर को धूल-धूप, ठंड, बारिश में पकाया है, परिस्थितियों से तपाया है और कुंदन की तरह खुद को निखारा है.

जीवन की अंतिम सांस तक उसने खुद को साबित करने की जिद नहीं छोड़ी और यह सर्वमान्य सत्य आप सभी अपने आसपास देख सकते हैं, यहां पुन: में दोहराना चाहती हूं, कि नेतृत्व सिर्फ किसी संस्था या पद का नहीं होता, नेतृत्व अपने विचारों का, स्थापित परंपराओं से अलग अपनी राह बनाने का, नेतृत्व धारा के विपरीत चलने का, नेतृत्व परिस्थितियों को चुनौती देने का, नेतृत्व खुद को साबित करने का, नेतृत्व एक मजबूत अवधारणा के बदलने का भी नाम है, और इन सब का नेतृत्व महिलाओं ने हमेशा किया है.

जय हिन्द

सरिता जैन
प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय - इंदौर

राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2024-25 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र. सं.	कार्य विवरण	''क'' क्षेत्र	''ख'' क्षेत्र	''ग'' क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. 'क' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 100% 2. 'क' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 100% 3. 'क' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 65% 4. 'क' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 100%	1. 'ख' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 90% 2. 'ख' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 90% 3. 'ख' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55% 4. 'ख' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 90%	1. 'ग' क्षेत्र से 'क' क्षेत्र को 55% 2. 'ग' क्षेत्र से 'ख' क्षेत्र को 55% 3. 'ग' क्षेत्र से 'ग' क्षेत्र को 55% 4. 'ग' क्षेत्र से 'क' व 'ख' क्षेत्र के राज्य / संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय / व्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल सामग्री अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	100%	100%
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/ उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों	40%	30%	20%
		(न्यूनतम अनुभाग) सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, ''क'' क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, ''ख'' क्षेत्र में 25% और ''ग'' क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए		

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

www.centralbankofindia.co.in